आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66★ अंक : 9★ मूल्य : 10 रु.
10 सितम्बर, 2009★ आश्विन 2066

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'॥

जयगुरु हस्ती
जयगुरु हीरा
जयगुरु मान
पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।
गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी
एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...
स्वर्णतीर्थ
प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक
रतनलाल सी. बापफना
ज्वेलर्स
सोने ◆ चांदी
हिरा ◆ मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव ◆ औरंगाबाद
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अण्णवंसि महोहंसि,
एगे तिण्णे दुरुत्तरे।
तत्थ एगे महापन्ने,
इमं पञ्हमुदाहरे ।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.1

दुस्तर महाप्रवाही भवनिधि,
ज्ञानीजनों ने पार किया।
उनमें एक पूर्ण ज्ञानी ने,
स्पष्टरूप में बोध दिया।।

सितम्बर, 2009

वीर निर्वाण संवत्, 2535

आश्विन, 2066

वर्ष 66 अंक 9

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.

आजीवन देश में : 500 रु.

आजीवन विदेश में : 5000 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 11000/-

संरक्षक सदस्यता : 5000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	वृद्धावस्था	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	कहाँ खो गई चारित्र की वह चमक?	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	होश में जीएं, दुर्व्यसनों को त्यागें	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.	16
शोधालेख -	भारतीय तंत्र साधना और जैन धर्म-दर्शन(2)	-प्रो. सागरमल जैन	19
अध्यात्म-	मैत्री भाव	- श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	25
युवा-स्तम्भ-	चतुर्विध संघ-सेवा से कर्म निर्जरा	-श्री लक्ष्मीचन्द छाजेड़	34
प्रासङ्गिक-	Empowering The Vegetarians	*-Dr. Jeoraj Jain*	43
विशिष्ट प्रश्नोत्तर-	दशवैकालिक सूत्र से पाएँ तात्त्विक बोध(2)	-संकलित	50
अंग्रेजी-स्तम्भ-	VANDANĀ	*-Dr. Priyadarshana Jain*	54
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (64)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	58
उपन्यास-	सुबह की धूप (7)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	61
तत्त्व चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (50)	-श्री धर्मचन्द जैन	65
जीवन-व्यवहार-	संभाषण में हो मृदुवाणी	- श्री देवेन्द्र नाथ मोदी	67
सामान्य ज्ञान-	क्या आप जानते हैं?	- श्री सुरेशचन्द धींग	68
नारी-स्तम्भ-	परिवारोत्कर्ष के सूत्र	- श्रीमती उमरावदेवी धींग	69
चिन्तन-	ढलती संध्या का सूर्य	- मोहनोत गणपत जैन	71
बाल-स्तम्भ-	करकंडु मुनि	- श्री जशकरण डागा	73
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य		77
परिणाम-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (22) का परिणाम		78
	अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परिणाम		82
संवाद-	संवाद का नया प्रश्न		111
प्रेरक प्रसंग-	जब स्वाध्यायी का स्वास्थ्य प्रतिकूल हुआ	-श्री दिलीप जैन	15
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		92
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		112

सम्पादकीय

वृद्धावस्था

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

वृद्धावस्था जीवन का सत्य है। वृद्धावस्था में पहुँचते ही मृत्यु नजदीक नजर आती है। मस्तिष्क में प्रश्न होता है, अब क्या होगा? शैशव, कैशोर्य, यौवन, प्रौढता और वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की विभिन्न अवस्थाएँ हैं। इनका अपना एक क्रम है। बालक चाहते हुए भी तत्काल युवा नहीं हो सकता तथा प्रौढ़ व्यक्ति चाहते हुए भी शिशु नहीं बन सकता। चाहते हुए भी व्यक्ति सदा यौवन में नहीं रह सकता, उसे वृद्धावस्था कम या अधिक रूप में प्रभावित करती ही है।

यदि जीवन में सत्कर्म नहीं किए हैं, आत्मशुद्धि एवं परहित का भाव मन में नहीं आया है तो बुढ़ापा दुःख बन जाता है। वह व्यक्ति स्वयं तो असंतुष्ट रहता ही है, दूसरों के लिए भी कष्टकारी बन जाता है। जो अपने चित्त को निर्मल बनाने हेतु साधनारत रहता है वह दीर्घजीवी होकर भी वृद्धावस्था के दुःख से दुःखी नहीं होता तथा प्रायः परिवारजनों के लिए भी भार नहीं बनता।

वृद्धावस्था में शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है, इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं, मन उद्विग्न हो जाता है, मस्तिष्क सठिया जाता है तो उससे धर्माराधन भी ठीक से नहीं होता। इसलिए आगम कहता है- **'जाविंदिया न हायन्ति ताव धम्मं समायरे।'** अर्थात् जब तक इन्द्रियां क्षीण नहीं होती हैं तब तक धर्म का आचरण कर लेना चाहिए। जरा को दुःख कहा गया है- **जम्म दुक्खं जरा दुक्खं रोगाणि मरणाणि य**। यह जरा दुःख रूप न बने यह तभी सम्भव है जब धर्म की शरण ग्रहण कर ली जाए- **जरामरणवेगेणं बुज्झमाणाण पाणीणं। धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं।**

वृद्धावस्था में एक तो शारीरिक अशक्तता का अनुभव, दूसरा जीवन का असंतोष, तीसरा परिवारजनों के साथ असमायोजन एवं चौथा मृत्यु का भय सताता रहता है। व्यक्ति इस अवस्था में चिड़चिड़ा हो जाता है। उसे बात-बात पर खीज होती है। ऐसे व्यक्ति के लिए बुढ़ापा अभिशाप बन जाता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति अपने जीवन को सम्यक् सोच एवं सत्कर्मों के साथ धर्म के मार्ग पर आरूढ़ करता है- उसको वृद्धावस्था अभिशाप नहीं लगती।

आज युग तेजी से बदल रहा है। कुछ दशक पूर्व संयुक्त परिवार प्रथा में

वृद्धों की जो देखभाल होती थी एवं उन्हें जो सम्मान प्राप्त होता था वह अब एकल परिवार व्यवस्था में लुप्त होता जा रहा है। माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के प्रति अधिक सजग हैं, किन्तु अपने माता-पिता की देखभाल करने में स्वयं को असमर्थ अनुभव करते हैं। यही कारण है कि अनेक स्थानों पर वृद्धाश्रम खुलते चले जा रहे हैं। वृद्धों का वहाँ उतना मन नहीं लगता जितना अपने परिवार वालों के साथ लगता है, तथापि मनुष्य को जीने के लिए अपने मन को समझाना पड़ता है।

वृद्धावस्था कोई अभिशाप नहीं, किन्तु व्यक्ति स्वयं अपनी कुत्सित सोच एवं गलत आदतों के कारण इसे अभिशाप बनाता है। जब वृद्धावस्था नजदीक हो तो नई पीढ़ी को आत्म-विश्वास पूर्वक दायित्व सौंप देने चाहिए। उनकी योग्यता एवं कार्यक्षमता पर विश्वास रखते हुए चिन्तामुक्त होने में ही अपना एवं उनका भला है। हाँ, यथावसर उचित परामर्श का द्वार खुला रखना चाहिए। इससे कर्त्तव्य का निर्वाह हो जाता है। परामर्श सदैव हित की भावना से दिया जाए, उस पर किसी प्रकार का आग्रह नहीं हो। गृहस्थ के विभिन्न कार्यों से एवं विशेषतः व्यापार-व्यवसाय से विराम ले लेना चाहिए। अपने शेष जीवन में अधिकांश समय धर्माराधना में लगाकर आत्म-साधना करते हुए अपने दोषों का निराकरण करना चाहिए।

आज के इस वैज्ञानिक युग में वृद्धावस्था में होने वाले शारीरिक कष्टों के निवारण हेतु विज्ञान ने कई सुविधाएँ दी हैं। जैसे कोई सुन नहीं सकता है तो उसके लिए मशीन है, देख नहीं सके तो चश्मा है, चल नहीं सके तो व्हील चेयर है। बैठने में असुविधा है तो कमोड है, मन लगाने के लिए रेडियो, टी.वी. हैं, बात करने के लिए मोबाइल फोन है तथा रोग-निवारण हेतु अनेक औषधियाँ है। अतः इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि जहाँ वृद्धावस्था में दुःख कम होने चाहिए थे, वे बढ़ क्यों रहे हैं? इसका कारण है शरीर के कष्टों से अधिक मन के संक्लेशों का होना। मन को व्यवस्थित करने का एक ही माध्यम है-ध्यान। वह ध्यान जो राग-द्वेष को न्यून करे , समता बढ़ाये, विचारों के आधिक्य को कम करे, पवित्रता का संचार करे, क्रोध-मान घटे, वैराग्य बढ़े और माया-लोभ का निवारण करे। यदि बचपन या यौवनकाल से ही मन को साधने का कार्य किया जाए तो उद्विग्नता, एकाकीपन, अपेक्षाएँ आदि कम होने से राहत मिल जाती है। ऐसा करने पर व्यक्ति यौवनकाल में तो प्रसन्न रहता ही है, वृद्धावस्था में भी आगत समस्याओं का सकारात्मक रूप से समाधान खोज लेता है। अतः यौवनकाल में ही ऐसी जीवनशैली का अभ्यास कर

लेना चाहिए कि वृद्धावस्था आने पर किसी प्रकार की समस्या न हो।

जो जीवन में कभी इन्द्रियों और मन को निग्रह करने का प्रयत्न नहीं करता वह वृद्धावस्था आने पर असहिष्णु, असंतुलित एवं असहज हो जाता है। जो वृद्ध धैर्यपूर्वक नई पीढ़ी के साथ मधुरतापूर्ण व्यवहार करते हैं, वे परिवार में कभी तिरस्कृत नहीं होते। उन्हें अपने व्यवहार से पुत्र, पौत्रों एवं पुत्रवधूओं को प्रसन्न रखने में कठिनाई नहीं होती। समय-समय पर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वे जागरूक रहते हैं। नई पीढ़ी तेजी से बदल रही है। उसकी व्यस्तताएँ कई गुनी बढ़ गई हैं। वह अपने निजी कार्यों को भी पूर्ण नहीं कर पाती है। अतः नई पीढ़ी से वृद्धों की सेवा हेतु उम्मीद करना उचित नहीं, किन्तु अपनी सन्तान में यदि सुसंस्कार हैं तो वह अवश्य ही कुछ समय निकालकर बुजर्गों की सेवा के लिए तत्पर रहेगी।

मात्र नई पीढ़ी को दोष देना समस्या का समाधान नहीं है, अपितु स्वयं में वैचारिक परिवर्तन लाना आवश्यक है। दुराग्रहपूर्वक अपना आदेश चलाना एवं सदैव डांटना-फटकारना कभी भी समस्या का समाधान नहीं करता। जिनके जीवन में लचीलापन है, दूसरों के भावों को समझने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं वे आसानी से दूसरों के साथ समायोजन कर लेते हैं।

आज भूमण्डलीकरण के कारण युवा रोजगार हेतु देश-विदेश में दूरस्थ स्थलों पर रहने लगे हैं। उनके बूढ़े माता-पिता अपने पुराने गाँव या शहर में ही रहकर जीवन-यापन करना पसन्द करते हैं। वे कभी अपने पुत्र के पास भले ही रहने जायें तो भी उनका अधिक दिनों तक वहाँ मन नहीं लगता एवं पुनः अपने निजी स्थान पर चले आते हैं। आज आर्थिक प्रगति को सामाजिक एवं पारिवारिक रिश्तों की महत्ता से भी अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। इसका परिणाम है परिवार का विघटन। ऐसे वृद्ध धैर्य से काम लेकर ही जीवन का शेष भाग शांति के साथ व्यतीत कर सकते हैं।

गृहस्थ जीवन के दायित्वों को पूर्ण करने के पश्चात् संन्यास ग्रहण कर लेना सर्वोत्तम है, किन्तु जो ऐसा न कर सके वह गृहस्थ अवस्था में रहकर भी अपने जीवन की आवश्यकताओं को सीमित करके एक नये लक्ष्य के साथ जीवन को सफल बनाने हेतु स्वाध्याय, साधना और सेवा का सम्बल लेकर आत्म-कल्याण एवं सर्व-कल्याण के भाव से जीवन जी सकता है। जीवन के उत्तरार्द्ध में भी जो भागदौड़, अशांति और अनन्त इच्छाओं से ग्रस्त रहता है वह जीवन की सफलता से

दूर हो जाता है। उसे अपने कृत कार्यों से संतोष का अनुभव नहीं होता।

युवाओं का भी दायित्व बनता है कि वे बुजुर्ग पीढ़ी का सम्मान करें, उनमें रहे हुए गुणों पर दृष्टिपात करें तथा उनसे कुछ सीखने का भाव रखें। कभी-कभी व्यक्ति का कमियों पर ही ध्यान रहता है, अच्छाइयों पर नहीं। किन्तु जो अच्छाइयों पर ध्यान रखता है वह जीवन में नया सीख पाता है। उसे वृद्धों के साथ समायोजन करने में तकलीफ नहीं होती। वह कृतज्ञता का भी अनुभव करता है। वृद्ध माता-पिता के प्रति कृतज्ञता का भाव उनकी सेवा के लिए तत्पर बनाता है।

भारत सरकार भी वृद्धों के लिए आदरभाव रखती है। उन्हें वरिष्ठ नागरिक के रूप में अनेक सुविधाएँ प्रदान करती है। यात्रा में, बैंक ब्याज में उन्हें विशेष सुविधाएँ दी गई है। सेवानिवृत्ति के पश्चात् सरकारी कर्मचारियों को पेंशन दी जाती है। ऐसा कानून भी बना है कि वृद्ध माता-पिता को कोई पुत्र अपने घर से बाहर नहीं कर सकता। सरकार नहीं चाहती कि भारत में वृद्धाश्रमों की वृद्धि हो और भारतीय परम्परा में वर्षों से रहा वृद्धों का सम्मान समाप्त हो। वे हमारे पूज्य हैं, प्रणम्य हैं एवं उस वृक्ष की तरह है जो सदैव जीवनी शक्ति रूपी ऑक्सीजन देता रहता है।

वृद्ध जीवनभर में जो अनुभव बटोरते हैं, वे नई पीढ़ी के लिए अतीव उपयोगी होते हैं। उनका विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों के बीच वितरण होना चाहिए। इससे नई पीढ़ी को भी लाभ होगा एवं पुरानी पीढ़ी भी संतोष का अनुभव करेगी कि जीवन में जो अनुभव अर्जित किया उसे दूसरों तक संप्रेषित कर दिया है। बहुत से वृद्धों का ज्ञान एवं अनुभव उन तक ही सीमित रह जाता है। उसका उपयोग न केवल परिवारजनों के बीच में, अपितु आस-पड़ौस, समाज, संस्था आदि में भी होना चाहिए। वृद्धावस्था में भी व्यक्ति की उपयोगिता बनी रहे तो लोग उसे चाहते हैं।

वे वृद्ध दया के पात्र हैं जो वृद्धावस्था में भी विषयवासनाओं एवं भोगों के प्रति आसक्ति को नहीं छोड़, अपनी इच्छाओं पर कोई लगाम नहीं लगाते, जीवन भर भोग भोग लेने पर भी तृप्ति नहीं होती है। इसलिए यह जीवन समाप्त होने के पहले सावधान हो जाना चाहिए एवं जीवन को दुःख-मुक्त बनाने हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए। जो अपनी सन्तान का पालन-पोषण अपना कर्त्तव्य समझकर करता है तथा बदले में उससे कोई अपेक्षा नहीं रखता उसका जीवन सुख-शान्तिमय व्यतीत होता है। शरीर-सम्पदा में हानि होने पर भी मस्तिष्क ठीक रहे, मन शान्त रहे एवं बुद्धि ठीक से कार्य करती रहे तो वृद्धावस्था कभी अभिशाप नहीं होती।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(जीव-विचार)

जीवा णं भंते! किं सासता? असासता?

गोयमा ! जीवा सिय सासता, सिय असासता ।।

प्रश्न : भगवन्! क्या जीव शाश्वत हैं या अशाश्वत हैं?

उत्तर : गौतम! जीव कथंचित् शाश्वत हैं और कथंचित् अशाश्वत हैं।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'जीवा सिय सासता, सिय असासता'?

गोतमा! दव्वट्ठताए सासता, भावट्ठयाए असासता। से तेणट्ठेणं गोतमा! एवं वुच्चइ जाव सिय असासता ।।

प्रश्न : भगवन्! यह किस कारण से कहा जाता है कि जीव कथंचित् शाश्वत हैं, कथंचित् अशाश्वत हैं?

उत्तर : गौतम! द्रव्य की दृष्टि से जीव शाश्वत हैं, और भाव (पर्याय) की दृष्टि से जीव अशाश्वत हैं। हे गौतम! इस कारण ऐसा कहा जाता है कि जीव कथंचित् शाश्वत हैं, कथंचित् अशाश्वत हैं।

नेरइया णं भंते! किं सासता? असासता?

एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि ।।

प्रश्न : भगवन्! क्या नैरकिय जीव शाश्वत हैं या अशाश्वत हैं?

उत्तर : जिस प्रकार (औधिक) जीवों का कथन किया था, उसी प्रकार नैरयिकों का कथन करना चाहिए।

एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासता।

सेवं भंते! सेवं भंते। त्ति.।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दण्डकों के विषय में कथन करना चाहिए कि वे जीव कथंचित् शाश्वत हैं, कथंचित् अशाश्वत हैं।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है, भगवन्! यह इसी प्रकार है'; यों कहकर यावत् गौतमस्वामी विचरने लगे।

-व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, सप्तम शतक, उद्देशक-2, गाथा-36-38

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- आरम्भ और परिग्रह की मित्रता है, दोनों का आर्थिक गठजोड़ है, दोनों ऐसे भयंकर रोग हैं, जो हमारी चेतना-शक्ति को विकास का मौका नहीं देते।
- धन की भूख आसानी से जाती नहीं, वृद्ध हो जाने पर भी तृष्णा मानव का पिण्ड नहीं छोड़ती और वह दिन-रात उसके पीछे भागता रहता है। संसार का प्राणी आरम्भ-परिग्रह में फंसा रहता है और यही चाहता है कि दिन और बड़ा होने लगे तो वह चार घंटे और काम कर ले। तृष्णावश सदा उसकी यही मंशा रहती है। यदि वह आरम्भ, परिग्रह के परिमाण को हल्का करने के लिए तैयार नहीं होगा तो आत्म-कल्याण कैसे होगा? इसलिए बुद्धिमान आदमी वस्तुस्थिति को सोचे, समझे, विचारे और आत्मा को हल्का करने के लिए साधना करे।
- पापाचरण के मुख्य दो कारण हैं। कुछ पापों में परिग्रह प्रेरक बनता है। परिग्रह आरम्भ का वर्द्धक है। अगर परिग्रह अल्प है और उसके प्रति आसक्ति अल्प है तो उसके लिये आरम्भ भी अल्प होगा। इसके विपरीत यदि परिग्रह बढ़ा और अमर्याद हो गया तो आरम्भ को भी बढ़ा देगा- वह आरम्भ महारम्भ हो जाएगा।
- विशिष्ट बुद्धि का धनी मानव रात-दिन यह देखता है कि विषय-कषायों के कारण उसकी बड़ी हानि हो रही है, अपूरणीय क्षति हो रही है, तदुपरांत भी क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विषय-कषायों में उत्तरोत्तर फंसता जा रहा है। अपने आप को फांसने वाले स्थानों से बचे रहने का प्रयास करने के बजाय उलटे उनमें फंसते जाने से बढ़कर मनुष्य के लिए शोचनीय, दुःखद एवं दयनीय स्थिति और क्या हो सकती है?
- एक-सी प्रवृत्ति में भी वृत्ति की जो भिन्नता होती है उससे परिणाम में भी महान् अन्तर पड़ जाता है। जितेन्द्रिय पुरुष के भोजन का प्रयोजन संयम-धर्म-साधक शरीर का निर्वाह करना मात्र होने से वह कर्म-बंध नहीं करता, जबकि रसनालोलुप अपनी आसक्ति के कारण उसे कर्म-बंध का कारण बना लेता है। यही नहीं, साधना-विहीन व्यक्ति रूखा-सूखा भोजन करता हुआ भी हृदय में विद्यमान लोलुपता के कारण तीव्र कर्म बांध लेता है, जबकि साधना-सम्पन्न पुरुष सरस भोजन करता हुआ भी अपनी अनासक्ति के कारण उससे बचा रहता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

कहाँ खो गई चारित्र की वह चमक

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पर्वाधिराज पर्युषण के तृतीय दिवस पर पालडी, अहमदाबाद में 19 अगस्त, 2009 को पूज्य आचार्य भगवन्त द्वारा फरमाए गए प्रवचनामृत का यह अंश श्री जगदीश जी जैन ने लिपिबद्ध किया है।-सम्पादक

तीर्थंकर भगवान् महावीर ने सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान के साथ सम्यक् चारित्र का होना आवश्यक प्रतिपादित किया। ज्ञान के साथ क्रिया अथवा आचरण हो तभी दुःखों से छुटकारा सम्भव है। सम्यक् चारित्र साधक को बाह्य विषय सुखों से विरक्त कर आत्म-साधना में रमण कराता है, जिससे आत्मिक गुण विकसित होते हैं एवं व्यक्ति के दोष दूर होते हैं। दोषनिवारक यह चारित्र दो प्रकार का कहा गया है- (1) सर्व विरति चारित्र और (2) देश विरति चारित्र। सर्व विरति चारित्र में साधक हिंसा, असत्य भाषण, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह आदि पापों का जीवन पर्यन्त तीन करण, तीन योग से सर्वथा त्यागी होता है। जब द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की मर्यादा रखते हुए 12 व्रतों का कुछ अंश में पालन किया जाता है तो वह देश विरति चारित्र है। पाँच अणुव्रत भी देशविरति अथवा आंशिक विरति के सूचक हैं।

इस संसार में जो समरसता, सौहार्द, स्नेह एवं करुणा भाव नज़र आ रहा है- यह सब चारित्र की ही देन है। मानने वाला पहले दिल में विश्वास जगाता है। जानना और मानना- यह अपने आप तक सीमित है। लेकिन जानने के साथ आचरण के मार्ग (चारित्र मार्ग) में जितना आगे बढ़ेगा। उतनी ही अधिक मात्रा में सौहार्द का रस झलकेगा। वीतराग भगवन्तों, श्रावकों एवं श्रेष्ठियों के अनेक कथानक इसकी पुष्टि कर रहे हैं। वे नौकरों को भी घर के सदस्यों की तरह खाना खिलाया करते थे। नौकर ही नहीं पशुओं के प्रति भी आत्मीय भावना थी। समय पर दाना-भूसा-पानी की व्यवस्था का ध्यान रखा जाता था। वर्षा आने पर उनके लिए वैसी व्यवस्था

एवं सर्दी में टाट-बोरे आदि से शीत से बचाने का पूरा खयाल रखा जाता था, किन्तु आज कई स्थानों पर नौकरों के प्रति जो व्यवहार किया जा रहा है वह मानवता से परे हैं। उनके प्रति मान-सम्मान की भावना तो दूर बोलने को मीठे वचन भी नहीं बोले जाते हैं। क्या यही है आपका सेठाईपना? परिवार के सदस्यों की तरह नौकर के साथ भी प्रेम और दया भाव रखें, खिलाने-पिलाने में दुराव नहीं करें। किसी के साथ दुर्व्यवहार आचरण का सही रूप नहीं है, लेकिन आज स्थिति विचित्र है। बाप और बेटे में भी मतभेद की बातें सुनने को मिल रही हैं।

आज हमारा चारित्र सूख गया है, स्नेह सिकुड़ गया है, हम स्वार्थी हो गये हैं। मात्र स्वार्थ के अनुरागी हो गये हैं। स्वार्थपूर्ति के लिये तो दूध देती गाय की लात भी सहन करनी पड़ती है और अब स्वार्थपूर्ति के कारण बाप बेटे में भी स्नेह नहीं रहा। कहाँ रहा राम! कहाँ गई आँखों की शर्म! माँ-बाप को अनाथालय में छोड़ आते हैं। उनकी ममता क्या कहती होगी? कहने को बड़े जोर-शोर से, शान से कहते हैं- 'अंहिसा परमो धर्मः' 'दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान' 'दया है वहाँ भगवान' किन्तु बोलने वाले भीतर में टटोलें। आपकी प्रेम की गंगा कहाँ सिकुड़ गई? कुत्ते पर विश्वास है, बेटे पर नहीं, कुत्ते के भरोसे घर खजाना छोड़ा जा रहा है। आपका विश्वास किस कुएं में, भरोसा किस भ्रम में चला गया? मेगस्थनीज ने भारत के रामराज्य की प्रशंसा करते हुए लिखा कि यहाँ लोग घरों के ताले नहीं लगाते। लेकिन आज साहूकार पेठ में रहने वाले साहूकारों का भरोसा किस भूमि के खड्डे में उतर गया। गरीब आज भी ईमानदारी से कह रहा है, पर इन साहूकारों को क्या हो गया? ये वासना में क्यों डूबे जा रहे हैं? चरित्र ही नहीं तो चारित्र कहाँ से आयेगा? जब अंश ही नहीं तो मूल कैसे आयेगा?

समय में कैसा परिवर्तन आ गया? आगम के पृष्ठों को पलट कर पढ़ो। 'नाथ' शब्द से शालिभद्र को वैराग्य आ गया, नहाते-नहाते कायर शब्द सुना और पत्नी को बहिन कह कर धन्ना ने घर-संसार क्षण में छोड़ दिया, अशुचि भावना से सुन्दर देहधारी सनत् चक्रवर्ती जाग गया। आज

तो मन की भावना भी पढ़ने में नहीं आ रही। पहले सुनते ही राजा, राजकुमार एवं श्रेष्ठी घर छोड़ दिया करते। आज भी कहते जरूर हैं- मन में है, म्हें भी आवां, पण कांई बतावां- पोता-पोती की शादी करनी है, धन्धा इतना फैल रहा है। पता नहीं पीछे से संभाल पायेगा या नहीं? हाल बंटवारो पूरी तरह होयो कोनी आदि। घर संसार नहीं छोड़ने के अनेक कारण गिना देंगे। पहले एक चारित्र सुनने से जीवन में मोड़ आ जाता। कषाय विजय से अर्थात् समता भाव से साधुपना है, बाना या वेष से नहीं। धर्मस्थान में जाकर किसी साधक को छेड़ मत देना, वास्तविकता का पता लग जायेगा।

चारित्र की बात कह रहा हूँ। शील की रक्षा के लिये जीभ खींचकर प्राण देने वाली बहनों का, सैकड़ों बहिनों द्वारा वीरांगनाओं द्वारा शीलरक्षार्थ अग्नि में प्रवेश कर प्राण न्यौछावर करने वालों का नाम गर्व से लिया जा रहा है। जितनी भी आपकी कुल देवियाँ (माताजी) हैं, उन सभी ने शील पालन किया है। आज की संतान शिक्षा लेने जा रही है या सम्बन्ध बनाने? आपकी श्रद्धा-भक्ति में भी दृढ़ता नहीं है। जो बंधे हैं, वे भी आज लुढ़क रहे हैं। पहले बेटी के घर रोटी नहीं खाते, यहाँ तक की पानी भी नहीं पीते थे। बहिनों के यहाँ जाते तो भी कुछ देकर आते। कोई गांव की बेटी भी मिल जाती तो उसका भी खायाल रखते, कितनी सुन्दर प्रथा थी। आज उस देश में खाने वालों की बहुलता है। स्थानक बनाने वाले ऐसे भी भाई हैं जो स्थानक का खा रहे हैं, गाय के घास की व्यवस्था करने वाले घास की रकम को हजम करने का परहेज नहीं रखते। कबूतरों के चुग्गे में भी हेराफेरी कर रहे है- कहाँ गया चरित्र? जिस देश में कबूतर को बचाने के लिये मेघरथ ने अपने शरीर का अंग दे दिया, कीड़ियाँ बचाने के लिये धर्मरुचि अणगार ने मासक्षपण के पारणक में कडवी तूम्बी का साग उदर में परठ लिया। चारित्र की गूढ़ बातें अभी आपने तत्त्वचिंतक मुनि (श्री प्रमोद मुनि जी) से सुनी।

मैं साधारण भाषा में व्यावहारिक चारित्र की बात रख रहा हूँ। आज सभी चीज नकली है। जब ज़हर मिलावट वाला है, तो खाद्य पदार्थों का क्या कहना? घी में चर्बी, मावे में आलू, धनिये में गधे की लीद, मिर्ची में

गेरु, नमक में खड़िया मिट्टी और हल्दी में पीली मिट्टी मिलाई जा रही है। दूध में पानी मिलाना तो आज आम बात है, नकली दूध भी बाजार में धड़ल्ले से बिक रहा है। हर वस्तु में मिलावट है। इस मिलावट वाले देश में, समाज में चारित्र की खुशबू कैसे आयेगी? इस देश का चारित्र कहाँ सो गया? दोषयुक्त आहार से चारित्र में पवित्रता कहाँ से आयेगी? पहले कुत्ते को बचाया जाता था, आज बेटी अभिशाप बन गई है। पैदा होने से पहले उसकी जीवन लीला समाप्त की जा रही है। भ्रूण परीक्षण कर ऐसा दुष्कृत्य कर रहे हैं। स्पष्ट शब्दों में कह रहा हूँ- कन्या की हत्या की जा रही है। आज आकड़ें बता रहे हैं। जैनियों में लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ कम हैं, साथ ही भागने वाली लड़कियाँ भी जैनियों की ही अधिक हैं। यदि यही स्थिति रही तो ये लड़के कहाँ जायेंगे? आज अन्जरजातीय विवाह और कोर्ट मेरिजों की संख्या बढ़ रही है, चिन्तनीय विषय है। यह देश तप-चारित्र में आदर्श था, जगद् गुरु था, आज वहाँ यह सब निंदनीय कृत्य हो रहा है।

इधर श्री कृष्ण आज अंतगड सूत्र के प्रंसग में कह रहे हैं- मुझे राज प्यारा नहीं, भाई प्यारा है, मेरी भावना है कि तू भ्राता(गजसुकुमाल) इस राज सिंहासन को संभाल। आज इधर भाई-भाई के बीच कोर्ट में केस चल रहे हैं। करोड़ों खर्च कर रहे हैं, लेकिन भाई चाहे भूखा मर रहा हो, उसको सहकार करने की भावना किंचित् भी नहीं है। ऐसे ही कई स्वधर्मी अभावों का जीवन जी रहे हैं। क्या मन में सहयोग के भाव आते हैं? संवेदना को जगाओ। व्यवहार में चरित्र नहीं सुधरेगा तो भीतर में चारित्र कहाँ से आयेगा? पहले दुःख की घड़ी में सौ खड़े हो जाते थे। आज जेब काटी जा रही है, पड़ौसी की निगाह में है, फिर भी सचेत करना कर्त्तव्य नहीं समझता। सोचता है- मरेला दूजा, म्हारी होवेली पूजा।

आज संवेदनशीलता शून्य हो रही है। दया-सत्य-शील-दान ये सब चारित्र के अंग हैं। आप देशविरति धर्म के आराधक हैं। जैन धर्म का एक-एक नियम एक भवावतारी बना देता है। एक मच्छीमार ने जाल में आने वाली पहली मछली नहीं पकड़ने का छोटा सा नियम लिया। वह तीन दिन तक भूखा रह प्रयास करता रहा, हर बार वही मछली जाल में आई।

मच्छीमार ने नियम का दृढ़ता से पालन किया। एक नियम पालन से एक भवावतारी बन गया। कान्हड़ कठियारा ने दो छोटे नियम लिये- (1) पूनम के दिन ब्रह्मचर्य पालन और (2) हरी लकड़ी नहीं काटना। दोनों नियमों का दृढ़ता से पालन कर वह भी एक भवावतारी बना।

जैन धर्म की दृष्टि अनूठी है। नियम चाहे छोटा है, पर दृढ़ता से पालन की भावना है तो नियम पालन निष्फल नहीं जाता। चौदह नियम के प्रतिदिन पालन से सिन्धु जितना पाप घटकर बिन्दु सम रह जाता है। चौदह नियम भरने में पाँच मिनट भी नहीं लगते। नियम में आगार रखना कमजोरी के लक्षण हैं। चारित्रवान बनने का मनोरथ रखने वाले, चरित्र को दृढ़ता से अपनाएँ। चारित्र का निर्माण कर शासन की दीप्ति एवं गौरव में अभिवृद्धि कर आत्मा का कल्याण करें। तभी देश, समाज एवं परिवार के चारित्र की चमक से जिनशासन की महती प्रभावना संभव हो सकेगी। ■

प्रेरक-प्रसंग

जब स्वाध्यायी का स्वास्थ्य प्रतिकूल हुआ

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ घोड़ों के चौक द्वारा प्रतिवर्ष पर्युषण पर्वाराधना हेतु जोधपुर से लगभग 30-40 स्वाध्यायी सेवा देने महाराष्ट्र पधारते हैं, इसी क्रम में वर्ष 2009 में लगभग 28 स्वाध्यायी पधारे।

घटना ऐसी रही कि दिनांक 26 अगस्त 2009 को जलगांव प्रवास के समय अर्द्धरात्रि में 1:00 बजे एक स्वाध्यायी के स्वास्थ्य में अत्यधिक प्रतिकूलता हो गयी। सब घबरा गए। इस समय साधनों के अभाव एवं चिकित्सकों की जानकारी न होने के कारण कुछ सूझ नहीं रहा था। यह सूचना जब शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल सी. बाफना साहब को प्राप्त हुई तो वे अर्द्धरात्रि होने पर भी स्वयं अपनी कार लेकर आये, स्वाध्यायी को अपनी कार में उपचारार्थ हॉस्पिटल ले गये एवं लगभग एक घण्टे तक रात्रि के लगभग 2:00 बजे तक, जब तक स्वाध्यायी चेतनावस्था में नहीं आया वहीं, पर बैठे रहे। स्वाध्यायी के चेतनावस्था में आने पर तथा उसके स्वास्थ्य में कुछ अनुकूलता दृष्टिगत होने के पश्चात् ही आप वहाँ से पधारे।

इससे हम स्वाध्यायी अत्यधिक प्रभावित हुए। संघसेवी का एक उत्कृष्ट रूप हमने देखा।

-दिलीप जैन-वरिष्ठ स्वाध्यायी, स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

प्रवचन

होश में जीएँ, दुर्व्यसनों को त्यागें

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा पालड़ी, अहमदाबाद में रविवार 19 जुलाई, 2009 को फरमाए गए प्रवचन के प्रस्तुत अंश का संकलन श्री जगदीश जी जैन द्वारा किया गया है।-सम्पादक

वीतराग वाणी निरन्तर संदेश प्रदान कर रही है कि बाहर में अटकना छोड़ अन्दर की ओर आइये। भीतर प्रवेश करने वाला ही भगवान् को पा सकता है और भगवान् भी बन सकता है। धर्म बाहर नहीं, भीतर है। भीतर की वस्तु बाहर कैसे मिलेगी? बाहर तों हमेशा अपूर्णता ही है, पूर्णता मात्र भीतर है, उसी पूर्णता को पाने के लिये आर्य शय्यंभव चेता रहे हैं-

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

-दशवैकालिक 1/1

धर्म से ही पूर्णता प्राप्त होती है। उसी धर्म का स्वरूप आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। उदाहरण के लिये- आप बाजार घोड़ा खरीदने गए तो उसकी खाल देखकर खरीदना चाहेंगे या चाल देखकर? सभा से आवाज आई चाल देखकर। गाय को उसके सींग, पूँछ देखकर खरीदेंगे या दूध देखकर? उत्तर मिला- दूध देखकर। चलाने से पहले गाड़ी का कलर पहले देखेंगे या ब्रेक? उत्तर मिला- ब्रेक। ठीक उसी प्रकार मानव का मूल्य उसका रूप और रूपये नहीं, अपितु धर्म से आंका जाता है। धर्म की साधना-आराधना भी सदैव संगति और होश में ही होती है, बेहोशी में कदापि नहीं। बेहोशी अवस्था में तो अधर्म ही होता है। जानते-बूझते कभी क्रोध नहीं आता। अविवेकी अवस्था में ही क्रोध पनपता है, क्रोध आने पर होश की आँख बन्द हो जाती है, बेहोशी का मुँह खुल जाता है। वह क्या बोल रहा है, क्या हाव-भाव कर रहा है, कृत्य-अकृत्य का उसे भान नहीं रहता। भगवान् ने भी प्रमादी को भय और अप्रमादी को अभय कहा है यानी धर्म की आराधना होश में करनी चाहिये। बात याद आ गई। एक पिता अपने पुत्र पर नाराज हो गया। गुस्से में नहीं कहने योग्य बहुत ही गलत शब्दों का प्रयोग करने लग गया, यहाँ तक कि गधे का बच्चा कहकर सम्बोधित कर दिया। पुत्र ने भी तत्परता से कह

दिया-"हाँ! पिताजी।" पिता ने बेहोशी की हालत में स्वयं अपने लिये गधे शब्द का प्रयोग कर दिया था। इसलिये कहा है- होश में जीओ, बेहोशी में नहीं- बेहोशी मृत्यु सम है।

होश आता है तो साधना का मन होता है-" पहले मन जगता है फिर तन उठता है।" घर से आचार्य भगवंत की शरण में आने के लिये मन बनाया, मानसिकता बनी तो तन चल पड़ा। धर्म के समीप आने में दो बाधक तत्त्व हैं- पहला बेहोशी यानी प्रमाद एवं दूसरा व्यसन (दुष्प्रवृत्तियाँ)। जब जीवन में व्यसन आते हैं तो प्रमाद बढ़ता जाता है। दया करने या उपवास करने के लिये प्रेरणा करेंगे या सामायिक करने के लिये भी कहेंगे तो जवाब मिलेगा- तम्बाकू के बिना इतना समय निकालना मुश्किल हो जाता है। गुटखा खाये बिना शरीर में जान ही नहीं आती। सामायिक पूरी होते ही गुटखों के पाउचों को टटोलते हैं। मनः स्थिति बड़ी विचित्र है, जबकि हर पाउच पर लिखा होता है-सावधान! यह स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। शब्दों को नज़र अन्दाज कर बेहोश व्यक्ति बड़ी शान से पूरा पाउच मुँह में उंडेल लेता है, अनेक बार देखने के प्रसंग बने हैं। पर अब पाउच पर लिखना चाहिए- 'मौत के लिए लाभदायक' मौत का नाम सुनते ही कुछ चिन्तन धारा बदल सकती है। मौत आने का खौफ सबको है।

आज का युग विज्ञापन जनित भ्रम का युग है। विज्ञापन में जैसी बातें होती हैं- उसके अनुसार वस्तु का गुणधर्म नहीं होता है। लक्स साबुन वाला विज्ञापन में दे रहा है-' लक्स लगाएँ, चमड़ी चमकाएँ' अरे भाई! लक्स लगाने से चमड़ी गोरी होती जो सारे मद्रासी गोरे नहीं हो जाते क्या? पर हम बेहोशी की नींद में हैं। उसे मिटाने के लिये होशपूर्वक जीवन जीने वाले और होशपूर्वक मृत्यु को महोत्सव बनाने वाले श्री सागरमुनि जी म.सा. का पुण्य स्मरण दिवस हमें प्रेरणा दे रहा है कि जीवन सफल तो मृत्यु सफल। हमारा होश मौत के अंतिम क्षण तक जागृत रहना चाहिए। व्यसन हमें बेहोश तो करता ही है, साथ ही साथ हमारा धन, स्वास्थ्य, चरित्र भी ले जाता है। अनेक बुराइयाँ, दुष्प्रवृत्तियाँ घर कर जाती हैं। एक प्रसंग याद आया। एक मित्र मार्ग से गुजर रहा था तो सामने से घनिष्ठ साथी मिल गया- "अरे यार! बहुत सुस्त व कमजोर नजर आ रहे हो, क्या बात है?" साथी ने बताया-"एक महीने से खांसी से पीड़ित हूँ। हर तरह की चिकित्सा ली, पर लाभ नहीं हुआ।" मित्र ने कहा- "यार, ऐसा कर एक पाउच (शराब वाला) पीले।"

साथी ने कहा- "क्या उससे खांसी चली जायेगा?" मित्र ने कहा- "अरे! तेरी खांसी क्यों नहीं जाएगी। उससे जब मेरा धन चला गया, स्वास्थ्य चला गया, इज्जत चली गई, तो तेरी खांसी इन सब के सामने कौन सी चीज है ?" तात्पर्य यह है कि व्यसन बरबादी का कारण है। बरबादी का घर है। सागर मुनि जी म.सा. ने स्वेच्छा से संथारा स्वीकारा था। इच्छापूर्वक आसक्ति रहित होकर प्राणों को छोड़ना समाधिमरण और अनिच्छा पूर्वक आसक्ति सहित मरना मौत है। प्रभु महावीर भव्य प्राणियों को चेता रहे हैं कि- 'समयं गोयम मा पमायए' गणधर गौतम के माध्यम से कह रहे हैं- संदेश फरमा रहे हैं- 'समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।' अतः सब कार्यों को छोड़कर धर्म की साधना आज और अभी करनी है।

(धर्मसभा में पूज्य भगवन्त आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. भी का पदार्पण.....)

भजन के माध्यम से-

तेरे बिना गुरुवर हमारा नहीं कोई रे
तेरे बिना गुरुवर सहारा नहीं कोई रे
जब से मैंने तुझको ध्याया, तूने मुझको अपना बनाया
तेरे जैसा लाड लडाया नहीं कोई रे....तेरे बिना

दुनिया में धर्म और धर्म-गुरु के अलावा सभी सहारे नकली हैं, आर्टिफिशियल हैं। असली की पहचान आवश्यक है। दो वर्ड हैं **Doing** एवं **Being** पहले का अर्थ 'करना' एवं दूसरे का अर्थ 'होना' कहा है।

व्यक्ति कहता है- सामायिक तो करते हैं, और क्रोध आ जाता है; धर्म करते हैं अधर्म हो जाता है, ये विचार गले नहीं उतर रहे। क्योंकि आत्मा में स्वभाव से गुण है, अवगुण नहीं, अवगुण तो बाहर से आते हैं। अपने आप उत्पन्न होने वाला **Being** है, जबकि **Doing** उत्पन्न किया जाता है, धन को शर्बत सदृश समझें। जैसे- शर्बत पीने वाले को ही शर्बत का स्वाद आयेगा, दैखने वाले को तृप्ति नहीं होगी। और धर्म को इत्र सदृश बताया है जो लगाने वाले , सूंघने वाले को तो सौरभ देगा ही। साथ ही औरों को भी खुशबू से आनन्दित कर देता है। ऐसे धर्म रूपी इत्र से जो सुरभित है और जो आपका जीवन भी सौरभमय बनाना चाहते हैं, ऐसे जिनशासन के महकते पुष्प आचार्य भगवन्त पधार गए हैं। उनकी वाणी रूपी पाणी का पान कर हम भी धर्म का जीवन में आचरण करेंगे....इन्हीं मंगल भावों के साथ।

■

शोधालेख

भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन(2)

प्रो. सागरमल जैन

भारत में प्रवर्तक एवं निवर्तक धर्मों का विकास-

यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि मानव-प्रकृति में वासना और विवेक के तत्त्व उसके अस्तित्व काल से ही रहे हैं, पुनः यह भी एक सर्वमान्य तथ्य है कि पाशविक वासनाओं अर्थात् पशु तत्त्व से ऊपर उठकर देवत्व की ओर अभिगमन करना ही मनुष्य के जीवन का मूलभूत लक्ष्य है। मानव प्रकृति में निहित इन दोनों तत्त्वों के आधार पर दो प्रकार की साधना पद्धतियों का विकास हुआ।

प्रवृत्तिमार्गी परम्परा का मूलभूत लक्ष्य यही रहा है कि स्वयं के प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से अथवा उनके असफल होने पर दैवीय शक्तियों के सहयोग से जैविक आवश्यकताओं एवं वासनाओं की पूर्ति करके चैतसिक शांति का अनुभव किया जाय। दूसरी ओर निवृत्तिमार्गी परम्पराओं से वासनाओं की सन्तुष्टि को विवेक की उपलब्धि के मार्ग में बाधक समझा और वासनाओं के दमन के माध्यम से वासनाजन्य तनावों का निराकरण कर चैतसिक शांति या समाधि को प्राप्त करने का प्रयास किया। जहाँ प्रारम्भिक वैदिक धर्म प्रवृत्तिप्रधान रहा वहीं प्रारम्भिक श्रमण परम्पराएँ निवृत्तिप्रधान रहीं। किन्तु एक ओर वासनाओं की सन्तुष्टि के प्रयास में चित्तशांति या समाधि सम्भव नहीं हो सकी, क्योंकि नई-नई इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और वासनाएँ जन्म लेती रहीं; तो दूसरी ओर वासनाओं के दमन से भी चित्तशांति सम्भव न हो सकी, क्योंकि दमित वासनाएँ अपनी पूर्ति के लिए चित्त की समाधि भंग करती रहती हैं। इसका विपरीत परिणाम यह हुआ कि एक ओर प्रवृत्तिमार्गी परम्परा में व्यक्ति ने अपनी भौतिक और लौकिक एषणाओं की पूर्ति के लिए दैविक शक्तियों की सहायता पाने हेतु कर्मकाण्ड का एक जंजाल खड़ा कर लिया तो दूसरी ओर वासनाओं के दमन के लिए देहदण्डनरूपी तप साधनाओं का वर्तुल खड़ा हो गया। एक के लिए येन-केन प्रकारेण वैयक्तिक सुखों की पूर्ति या वासनाओं की संतुष्टि ही वरेण्य हो गई तो दूसरे के लिए जीवन का निषेध अर्थात् देहदण्डन ही साधना का लक्ष्य बन गया। वस्तुतः इन दोनों अतिवादों के समन्वय के प्रयास में ही एक ओर जैन, बौद्ध आदि विकसित श्रमणिक साधना विधियों का

जन्म हुआ तो दूसरी ओर औपनिषदिक चिन्तन से लेकर सहजभक्तिमार्ग और तंत्र साधना तक का विकास भी इसी के निमित्त से हुआ। 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' का जो समन्वयात्मक स्वर औपनिषदिक ऋषियों ने दिया था, परवर्ती समस्त हिन्दू साधना और उसकी तांत्रिक विधियाँ उसी के परिणाम हैं। फिर भी प्रवृत्ति और निवृत्ति के पक्षों का समुचित सन्तुलन स्थिर नहीं रह सका। इनमें किसे प्रमुखता दी जाय, इसे लेकर उनकी साधना-विधियों में अन्तर भी आया।

जैनों ने यद्यपि निवृत्तिप्रधान जीवनदृष्टि का अनुसरण तो किया, किन्तु परवर्ती काल में उसमें प्रवृत्तिमार्ग के तत्त्व समाविष्ट होते गए। न केवल साधना के लिए जीवन रक्षण के प्रयत्नों का औचित्य स्वीकार किया गया, अपितु ऐहिक-भौतिक कल्याण के लिए भी तांत्रिक साधना की जाने लगी।

तांत्रिक साधना का मूल लक्ष्य इच्छा, वासना और विकल्पों से ऊपर उठकर निर्विकल्प चेतना में अवस्थिति है। योग साधना में इसे 'चित्तवृत्ति निरोध' कहा है तो जैन साधना में इसे मोह एवं क्षोभ से रहित आत्मा की निर्विकल्प अवस्था माना। योग एवं जैनदर्शन दोनों का लक्ष्य मन को अमन बना देना एवं विकल्पों से ऊपर उठ जाना है। दूसरे शब्दों में कहें तो एक अनासक्त चेतना का विकास ही इनका लक्ष्य है, किन्तु यह अनासक्त चेतना की अवस्था कैसे हो, अथवा ज्ञाता, द्रष्टा भाव में अवस्थित कैसे हुआ जाए? यह प्रश्न विवादास्पद ही रहा है। एक पक्ष का मानना यह है कि इच्छाओं एवं उनकी पूर्ति के माध्यम से हम उस अनासक्त निष्काम चेतना का अनुभव कर सकते हैं। इस परम्परा का मानना यह है कि इच्छाओं एवं वासनाओं को तृप्त कर दिया जाए तो जीव के लिए करणीय या वाञ्छनीय कुछ भी नहीं रहेगा। इस प्रकार एक परम्परा विकसित हुई जो भोग के माध्यम से निर्विकल्प अवस्था को प्राप्त करने का लक्ष्य अपने सामने रखती है।

दूसरी ओर यह माना गया कि इच्छाओं एवं वासनाओं की पूर्ति से चित्त निर्विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि प्रत्येक इच्छा या वासना अपनी सन्तुष्टि के साथ या तो किन्हीं नई इच्छाओं और वासनाओं को जन्म देती है या वही इच्छा एवं वासना पुनःपुनः भोग की इच्छा रखती है। अतः इच्छाओं एवं वासनओं की पूर्ति के माध्यम से निर्विकल्प चित्त दशा की प्राप्ति संभव नहीं है। क्योंकि जैन दर्शन के अनुसार इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं, अतः उनकी पूर्ति सम्भव नहीं हैं। ये दमित इच्छाएँ चेतन या अचेतन स्तर पर चित्त को विक्षोभित करती रहती हैं। यदि उन इच्छाओं और वासनाओं को दबाकर निर्विकल्पता की दिशा में आगे बढ़ा

जाये तो यह उचित नहीं क्योंकि यह दमन का मार्ग भी इच्छाओं एवं वासनाओं को निर्मूल नहीं करता है, अपितु उन्हें मात्र अचेतन में भेजने का प्रयास करता है। अचेतन में संकलित ये दमित इच्छाएँ एवं वासनाएँ चित्त को विक्षुब्ध ही करती रहती हैं। अतः यह माना गया कि इच्छाओं और वासनाओं से ऊपर उठकर चेतना की उपलब्धि इनके निरसन से ही सम्भव है। यह निरसन तभी संभव हो सकता है जब चेतन अन्तर्मुख होकर आत्मद्रष्टा बने तथा इच्छाओं और वासनाओं के रूप में चित्त को विक्षुब्ध करने वाली अवस्थाओं की निरर्थकता को समझें।

भारत में तान्त्रिक साधना का जो विकास हुआ उसका मूल लक्ष्य तो अनासक्त निर्विकल्प चेतना की उपलब्धि ही था, किन्तु उसने कालान्तर में दो दिशाएँ ग्रहण कर लीं। एक प्रवृत्ति मूलक भोग मार्ग की और दूसरी निवृत्ति मूलक योग मार्ग की। जहाँ चार्वाक सम्प्रदाय सहित हिन्दूधर्म के वाममार्गी सम्प्रदाय, बौद्ध धर्म के वज्रयान ने भोग के माध्यम से इच्छाओं एवं वासनाओं के निराकरण मार्ग को चुना, वहीं हिन्दू धर्म के ज्ञानमार्गी एवं संन्यासमार्गी सम्प्रदाय, बौद्धधर्म के हीनयान सम्प्रदाय एवं जैन धर्म ने निवृत्ति मूलक योग मार्ग को स्वीकार किया। वैसे शैव एवं शाक्त तन्त्रों में भी मूल लक्ष्य तो पशु को पशुपति अर्थात् इच्छाओं और वासनाओं का स्वामी बनने की बात कही गयी, वही बात इन तीनों ही परम्पराओं ने मान्य रखी। फिर भी कालान्तर में प्रवृत्तिमूलक भोगमार्ग की परम्पराओं से वे भी नहीं बच सके।

जैन धर्म में तन्त्र साधना के दोनों की पक्षों का प्रभाव देखा जाता है। यद्यपि निवृत्ति मूलक संन्यास मार्ग की परम्परा का समर्थक होने के कारण उस पर यह दूसरा पक्ष हावी नहीं हो पाया, किन्तु इस निवृत्ति मूलक अवधारणा पर कहीं न कहीं प्रवृत्तिमूलक भोग मार्ग का प्रभाव तो आया ही है। यह प्रभाव कैसे एवं किस रूप में आया, इसकी संक्षिप्त चर्चा यहाँ अपेक्षित है।

धर्म जीवन का निषेध सिखाता है?

सामान्यतया यह माना जाता है कि तंत्र की जीवनदृष्टि ऐहिक जीवन को सर्वथा वरेण्य मानती है, जबकि जैनों का जीवनदर्शन निषेधमूलक है। इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि जैन धर्म दर्शन तंत्र का विरोधी है, किन्तु जैन दर्शन के सम्बन्ध में यह एक भ्रान्त धारणा ही होगी। जैनों ने मानव जीवन को जीने के योग्य एवं सर्वथा वरेण्य माना है। उनके अनुसार मनुष्य जीवन ही तो एक ऐसा जीवन है जिसके माध्यम से व्यक्ति विमुक्ति के पथ पर आरूढ़ हो सकता है। इतना

अवश्य है कि जैनों की दृष्टि में पाशविक शुद्ध स्वार्थों से परिपूर्ण मात्र जैविक एषणाओं की पूर्ति में संलग्न जीवन न तो रक्षणीय है, न वरेण्य; किन्तु यह दृष्टि तो तंत्र की भी है, क्योंकि वह भी पशु अर्थात् पाशविक पक्ष का संहार कर पाश से मुक्त होने की बात करता है। जैनों के अनुसार जीवन उस सीमा तक वरेण्य और रक्षणीय है जिस सीमा तक वह व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास में सहायक होता है और अपने आध्यात्मिक विकास के माध्यम से लोकमंगल का सृजन करता है। प्रशस्त तांत्रिक साधना और जैन साधना दोनों में ही इस सम्बन्ध में सहमति देखी जाती है। वस्तुतः जीवन की एकान्त रूप से वरेण्यता और एकान्त रूप से जीवन का निषेध दोनों ही अवधारणाएँ उचित नहीं हैं। यही जैनों की जीवनदृष्टि है। वासनात्मक जीवन के निराकरण द्वारा आध्यात्मिक जीवन का विकास-यही तंत्र और जैन दर्शन दोनों की जीवन दृष्टि है और इस अर्थ में वे दोनों विरोधी नहीं हैं, सहगामी हैं।

फिर भी सामान्य अवधारणा यह है कि तन्त्र दर्शन में ऐहिक जीवन को सर्वथा वरेण्य माना गया है। उसकी मान्यता है कि जीवन आनन्दपूर्वक जीने के लिए है। जैन धर्म में तप-त्याग की जो महिमा गायी गई है, उसके आधार पर यह भ्रान्ति फैलाई जाती है कि जैन धर्म जीवन का निषेध सिखाता है। अतः यहाँ इस भ्रान्ति का निराकरण कर देना अप्रासंगिक नहीं होगा कि जैन धर्म में तप-त्याग के गौरवगान का अर्थ शारीरिक एवं भौतिक जीवन की अस्वीकृति नहीं है। आध्यात्मिक मूल्यों की स्वीकृति का यह तात्पर्य नहीं है कि शारीरिक एवं भौतिक मूल्यों की पूर्णतया उपेक्षा की जाय। जैन धर्म के अनुसार शारीरिक मूल्य अध्यात्म के बाधक नहीं, साधक हैं। निशीथभाष्य में कहा है कि मोक्ष का साधन ज्ञान है, ज्ञान का साधन शरीर है, शरीर का आधार आहार है। शरीर शाश्वत आनन्द के किनारे पर ले जाने वाली नौका है। इस दृष्टि से उसका मूल्य भी है, महत्त्व भी है और उसकी सार-संभाल भी करना है। किन्तु ध्यान रहे, दृष्टि नौका पर नहीं तट पर होनी चाहिए, क्योंकि नौका साधन है, साध्य नहीं। भौतिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति की एक साधना के रूप में स्वीकृति जैनधर्म और सम्पूर्ण अध्यात्म विद्या का हार्द है। यह विभाजन रेखा है जो अध्यात्मवाद और भौतिकवाद में अन्तर करती है। भौतिकवाद में उपलब्धियाँ अथवा जैविक मूल्य स्वयमेव साध्य हैं, अन्तिम हैं, जबकि अध्यात्म में वे किन्हीं उच्च मूल्यों के साधन हैं। जैनधर्म की भाषा में कहें तो साधक के द्वारा वस्तुओं का त्याग और ग्रहण, दोनों ही साधना के लिए हैं।

जैनधर्म की सम्पूर्ण साधना का मूल लक्ष्य निराकुल, निर्विकार, निष्काम और वीतराग मानस की अभिव्यक्ति है, जो वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के समस्त तनावों एवं संघर्षों को समाप्त कर सके। उसके सामने मूल प्रश्न दैहिक एवं भौतिक मूल्यों की स्वीकृति का नहीं है, अपितु वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में शान्ति की संस्थापना है। अतः जहाँ तक और जिस रूप में दैहिक और भौतिक उपलब्धियाँ उसमें साधक हो सकती हैं, वहाँ तक वे स्वीकार्य हैं और जहाँ तक उसमें बाधक हैं, वहीं तक त्याज्य हैं। भगवान् महावीर ने आचारांगसूत्र एवं उत्तराध्ययनसूत्र में इस बात को बहुत ही स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि जब इन्द्रियों का अपने विषयों से सम्पर्क होता है, तब सम्पर्क के परिणामस्वरूप सुखद-दुःखद अनुभूति भी होती है और जीवन में यह शक्य नहीं है कि इन्द्रियों का अपने विषयों से सम्पर्क न हो और उसके कारण सुखद या दुःखद अनुभूति न हो, अतः त्याग इन्द्रियानुभूति का नहीं, अपितु उसके प्रति चित्त में उत्पन्न होने वाले राग-द्वेष का करना है। क्योंकि इन्द्रियों के मनोज्ञ या अमनोज्ञ विषय आसक्तचित्त के लिए ही रागद्वेष (मानसिक विक्षोभों) के कारण बनते हैं, अनासक्तचित्त या वीतराग के लिए नहीं। अतः जैनधर्म की मूल शिक्षा ममत्व के विसर्जन की है, जीवन के निषेध की नहीं।

जैन तांत्रिक साधना और लोक कल्याण का प्रश्न–

तांत्रिक साधना का लक्ष्य आत्मविशुद्धि के साथ लोक कल्याण भी है। यह सत्य है कि जैन धर्म मूलतः संन्यासमार्गी धर्म है। उसकी साधना में आत्मशुद्धि और आत्मोपलब्धि पर ही अधिक जोर दिया गया है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जैन धर्म में लोकमंगल या लोककल्याण का कोई स्थान ही नहीं है। जैन धर्म यह तो अवश्य मानता है कि वैयक्तिक साधना की दृष्टि से समाज- निरपेक्ष, एकाकी जीवन अधिक उपयुक्त है, किन्तु इसके साथ ही साथ वह यह भी मानता है कि उस साधना से प्राप्त सिद्धि का उपयोग सामाजिक कल्याण की दिशा में होना चाहिए। महावीर का जीवन स्वयं इस बात का साक्षी है कि 12 वर्षों तक एकाकी साधना करने के पश्चात् वे पुनः सामाजिक जीवन में लौट आये। उन्होंने चतुर्विध संघ की स्थापना की तथा जीवन भर उसका मार्गदर्शन करते रहे।

जैन धर्म सामाजिक कल्याण और सामाजिक सेवा को आवश्यक तो मानता है, किन्तु वह व्यक्ति के चारित्रिक उन्नयन से ही सामाजिक कल्याण की

दिशा में आगे बढ़ता है। व्यक्ति समाज की मूलभूत इकाई है, जब तक व्यक्ति का चारित्रिक विकास नहीं होगा, तब तक उसके द्वारा सामाजिक कल्याण नहीं हो सकता है। जब तक व्यक्ति के जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक चेतना का विकास नहीं होता तब तक सामाजिक जीवन में सुव्यवस्था और शान्ति की स्थापना नहीं हो सकती। जो व्यक्ति अपने स्वार्थों और वासनाओं पर नियन्त्रण नहीं कर सकता वह कभी सामाजिक हो ही नहीं सकता, क्योंकि समाज जब भी खड़ा होता है, वह त्याग और समर्पण के मूल्यों पर ही होता है। लोकसेवक और जनसेवक अपने व्यक्तिगत स्वार्थों और द्वन्द्वों से दूर रहें- यह जैन आचार संहिता का आधारभूत सिद्धान्त है। चरित्रहीन व्यक्ति सामाजिक जीवन के लिए घातक ही सिद्ध होंगे। व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के निमित्त जो तांत्रिक साधनाएँ की जाती हैं, वे सामाजिक जीवन के लिए घातक ही होती हैं। क्या चोर, डाकू और शोषकों का संगठन समाज कहलाने का अधिकारी है? क्या चोर, डाकू और लुटेरे अपने उद्देश्य में सफल होने के लिए देवी-देवताओं को प्रसन्न करने हेतु जो तांत्रिक साधना करते या करवाते हैं, उसे सही अर्थ में साधना कहा जा सकता है? महावीर की शिक्षा का सार यही है कि वैयक्तिक जीवन में निवृत्ति सामाजिक कल्याण का आधार बन सकती है। प्रश्नव्याकरणसूत्र में कहा गया है कि भगवान् का यह सुकथित प्रवचन संसार के सभी प्राणियों के रक्षण एवं करुणा के लिए है। जैन साधना में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह- ये जो पाँच व्रत माने गये हैं; वे केवल वैयक्तिक साधना के लिए नहीं है।

जैन तंत्र के दार्शनिक आधार-

जैन तत्त्व दर्शन के अनुसार जीव कर्मों के आवरण के कारण बन्धन में है। बन्धन से मुक्ति के लिए एक ओर कर्म आवरण का क्षयोपशम आवश्यक है तो दूसरी ओर उस क्षयोपशम के लिए विशिष्ट साधना भी आवश्यक है किन्तु इस साधना के लिए बन्धन और बन्धन के कारणों का ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान दार्शनिक अध्ययन से ही प्राप्त होता है। आत्मतत्त्व के ज्ञान के बिना साधना अधूरी रहती है। अतः जैन तन्त्र में भी तान्त्रिक साधना के पूर्व तत्त्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा का सम्यक् अनुशीलन आवश्यक है। इस प्रकार जैन तत्त्व साधना में दर्शन को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। **(क्रमशः)**

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

अध्यात्म

मैत्री भाव

श्री कन्हैयालाल लोढा

जैन धर्म में साधना का विशद वर्णन व विवेचन उपलब्ध है। उसमें जो साधना सभी साधकों के लिए प्रतिदिन करना आवश्यक है, उसका वर्णन आवश्यक सूत्र में है। इस सूत्र में साधक बुराई से कैसे बचा रहे तथा उसका क्या कर्त्तव्य है और क्या अकर्त्तव्य है, यह बतलाया है। उसमें निम्न गाथा का साधना में विशेष स्थान है, यथाः

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं ण केणइ।।

-आवश्यक सूत्र, चतुर्थ अध्ययन

अर्थात् मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ। सब जीव मुझे क्षमा करें। सब जीवों से मेरी मित्रता है। किसी भी जीव से मेरा वैर नहीं है। साधु-साध्वी हो या गृहस्थ श्रावक-श्राविका हो, सभी के लिए प्रतिदिन यह भावना प्रातः एवं सायंकाल अवश्य करणीय है।

मित्रता वहाँ ही है जहाँ वैर नहीं है, प्रेम है। वैर द्वेष का द्योतक है। जिस हृदय में द्वेष है, उस हृदय में प्रेम नहीं हो सकता, मैत्रीभाव नहीं हो सकता। अतः मैत्रीभाव के लिए वैरभाव का त्याग अनिवार्य है। वैर का अभिप्राय है किसी भी जीव को बुरा समझना। वैर न करने का अभिप्राय है- किसी भी जीव को मन से बुरा न समझना, वचन से बुराई (निंदा-चुगली आदि) न करना और शरीर से उसे कष्ट न देना। यह ही धर्म और सदाचार का सबसे प्रधान अंग है। कारण कि जहाँ वैर या द्वेष की आग जलती है वहाँ कोई भी सद्गुण पनप नहीं सकता। अतः मानवमात्र के लिए वैरभाव का त्याग अनिवार्य है। वैरभाव त्यागने से मैत्री आदि सद्गुण स्वतः प्रकट होते हैं।

उपर्युक्त सूत्र में आगमकार "मेरा किसी जीव से वैर नहीं है," केवल यह निषेधात्मक सूत्र देकर ही नहीं रह गये हैं, अपितु इसके साथ "मेरा सब

जीवों के साथ मैत्रीभाव है, '' यहाँ विधेयात्मक सूत्र भी दिया है। यदि आगमकार को मित्रता का केवल निषेधात्मक रूप ही अभीष्ट होता तो ''मेरा किसी से वैर नहीं है'' इतना सूत्र ही पर्याप्त होता और ''सब जीवों के प्रति मेरी मित्रता है'' यह सूत्र जोड़ने की आवश्यकता ही न होती। इससे यह प्रकट होता है कि सूत्रकार को मित्रता का सकारात्मक पक्ष भी अभीष्ट है। कारण कि अनंतानंत प्राणियों के प्रति हमारा वैर भाव नहीं है, किन्तु वैर न होने से हमारा उन प्राणियों के साथ मैत्रीभाव है, यह नहीं कहा जा सकता।

भगवान् महावीर के द्वारा प्रतिपादित अहिंसा का एक सकारात्मक आयाम मैत्रीभाव है। उत्तराध्ययन सूत्र एवं आवश्यक सूत्र में समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री की प्रेरणा की गई है। मैत्रीभाव को प्राप्त जीव अपने भावों की विशुद्धि कर निर्भय होता है। जो मैत्रीभाव रखता है वह स्वयं तो निर्भय बनता ही है, किन्तु जिन प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव रखता है, वे भी उससे निर्भयता एवं निश्चिन्तता का अनुभव करते हैं।

मैत्रीभाव में हृदय प्रेम-रस से ओतप्रोत रहता है। जहाँ मित्रता (प्रेम) का रस है, वहाँ परमानन्द के सागर में प्रसन्नता की लहरें अठखेलियाँ करती रहती हैं। प्रेम में क्षति, पूर्ति, अपूर्ति, निवृत्ति रहित नित-नूतन रस उमड़ता रहता है। इस रस से पूरित हृदय में कामना, राग, द्वेष, मोह आदि उत्पन्न नहीं होते हैं।

जिस प्रकार जहाँ अंधकार का अभाव है, वहाँ प्रकाश स्वतः प्राप्त है, इसी प्रकार जहाँ वैरभाव का अभाव है, वहाँ मैत्रीभाव स्वतः प्राप्त है और जहाँ वैरभाव का अभाव एवं मैत्रीभाव का सद्भाव है, वहाँ क्षमादान और क्षमायाचना सहज उपलब्ध है।

क्षमादान, उदारता, क्षमायाचना, नम्रता, वैरत्याग, समता एवं प्रियता आदि गुण मित्रता के द्योतक हैं। इन गुणों का विकास अर्थात् मित्रता का विकास दुरात्मा को पुण्यात्मा, धर्मात्मा और अंत में परमात्मा बनाने में समर्थ है।

मित्रता आत्मीयता की द्योतक है। अतः ''मित्ती मे सव्वभूएसु'' का अर्थ हुआ सब प्राणियों के प्रति आत्मीयभाव, अपनेपन का भाव अर्थात् सर्वात्मभाव। आत्मीयभाव में परायेपन का भाव नहीं रहता। सर्वात्मभाव में

कोई भी जीव पराया नहीं रहता। अतः प्राणिमात्र के प्रति सहायता का भाव होता है। वस्तुतः सक्रिय सहायता ही सेवा है। सेवा में सक्रिय सर्वहितकारी भाव का होना मैत्रीभाव है। जहाँ सब प्राणियों की सेवा का भाव नहीं है, प्रत्युत उनके प्रति उपेक्षा का यह भाव है कि जीव दुःख पाते हैं तो पाते रहें अपनी बला से, दुःख पाते होंगे अपने कर्मों से, हमें उनसे क्या मतलब, क्या लेना देना? ऐसा भाव जहाँ है, वहाँ मैत्री भाव नहीं है। जब व्यक्ति प्राप्त सामग्री, सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता का उपयोग अपने सुख-भोग के लिए करता है, वहाँ सर्वात्मभाव नहीं स्वार्थभाव है। जहाँ स्वार्थभाव है वहाँ भोग है, जो समस्त दोषों व दुःखों का बीज है।

सेवा का क्रियात्मक रूप अपनी शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता के अनुसार होता है, अतः सीमित होता है, परन्तु सेवा का भावात्मक रूप असीम होता है। यही सब प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव है। अतः जहाँ सर्व प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव है वहाँ राग का, दोषों का एवं दुःखों का निवारण स्वतः होता है, इसमें लेशमात्र भी संदेह को स्थान नहीं है।

मैत्रीभाव राग को तो गलाता ही है, साथ ही द्वेष का भी नाश करता है। कारण कि मैत्रीभाव का विपरीत वैरभाव है। वैरभाव द्वेष का द्योतक है। अतः वैरभाव का त्याग कर मैत्री भाव को अपनाना द्वेष को त्याग कर प्रेम को अपनाना है। इस प्रकार मैत्रीभाव राग-द्वेष का नाशक है। अतः मैत्रीभाव वीतराग साधना का, संयम का, विरति का अंग है। जैसा कि तत्त्वार्थ सूत्र में कहा है-

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु।

-तत्त्वार्थ सूत्र 7.6

अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति मैत्रीभाव, गुणियों के प्रति प्रमोदभाव, दुःखियों के प्रति करुणाभाव और दोषियों के प्रति माध्यस्थ भाव रखना संयम में सहायक है।

मित्रता में सर्वहितकारी भाव होता है। स्वार्थभाव या भोगभाव का अभाव होता है। अपना पराया भेद वहीं गलता है, जहाँ अहंभाव गलता है, क्योंकि अहंभाव के रहते 'मैं' रहता है। जहाँ 'मैं' रहता है वहाँ भिन्नता व भेद

रहता है। अतः वहाँ आत्मीयता या मित्रता सम्भव नहीं है। 'अहं' के गलने पर ही, अर्थात् मैं कुछ भी नहीं हूँ, ऐसा 'अकिंचन भाव' होने पर ही आत्मीयता या मित्रता का भाव जगता है। जहाँ अहंभाव नहीं है 'मैं' पन का अभाव है, वहाँ कामना, ममता, भोगवृत्ति, स्वार्थभाव, मोह आदि का अभाव है। अतः मैत्रीभाव वीतरागता का पोषक है।

मित्रता का क्रियात्मक रूप उदारता है। उदारता शब्द उदर से बना है जैसे- उदर भोजन को पचाता है, उससे रस व रक्त बनता है। परन्तु उसका वह संग्रह न करके सारे शरीर को बांटता है, जिससे शरीर स्वस्थ रहता है। शरीर के स्वस्थ रहने से वह भी स्वस्थ रहता है। इसी प्रकार उदार व्यक्ति जो भी उत्पादन करता है, उसे संग्रह न करके सर्व हितकारी प्रवृत्ति में लगाता है। सबके हित में उसका हित स्वतः होता है। सर्व हितकारी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के हृदय में किसी के प्रति अहित की भावना नहीं जगती। अतः उदार व्यक्ति निश्चिन्त एवं निर्भय रहता है। उदारता में सबका हित है। सबके हित में स्व का हित है।

पारस्परिक स्नेह की एकता मित्रता है। स्नेह की एकता समाज का आधार है। स्नेह में छोटे-बड़े का भेद नहीं रहता है। परस्पर में सम्मान व समानता का व्यवहार होता है, जो संघर्ष को निर्मूल कर देता है। संघर्ष वहीं होता है, जहाँ भेद-भाव है, विषमता है।

मित्रता का भावात्मक रूप आत्मीयता है और क्रियात्मक रूप उदारता है। आत्मीयता में अपनत्व भाव है। सर्व प्राणियों के प्रति आत्मीय भाव का अर्थ है कि जैसे हम अपने लिए यह चाहते हैं कि हमारे साथ कोई भी हिंसा, झूठ, चोरी, व्याभिचार, शोषण, निंदा, हानि आदि बुरा व्यवहार न करे और हम यह भी चाहते हैं कि हमारे साथ सरलता, नम्रता, मृदुता, मित्रता, बन्धुता, सहृदयता व सहायता युक्त सद् व्यवहार करे। यह ही संसार के सर्व मनुष्य चाहते हैं। यह तभी संभव है कि जब हम इस प्रकार का व्यवहार करें। यह ही मानवता है, मानवमात्र का कर्त्तव्य है। यह ही आत्मीयता है, मित्रता पूर्ण व्यवहार है। 'सर्वभूतेषु आत्मवत्' सूत्र के अनुसार सब प्राणियों को अपने समान समझें, हम अपने प्रति जैसा व्यवहार पसंद करते हैं वैसा ही व्यवहार सबके प्रति करें। किसी

को गैर (पराया) न समझें। यह ही मित्रता का मूल मंत्र है कि 'हम अपने लिए दूसरों से जैसा हितकारी व्यवहार चाहते हैं' वैसा ही हितकारी व्यवहार दूसरों के साथ करें। 'मित्ती मे सव्वभूएसु' का अर्थ है कि सब के प्रति मैत्रीपूर्ण अर्थात् हितकारी व्यवहार करें। किसी के प्रति अहितकारी व्यवहार न करें, यह ही सब प्राणियों के प्रति मैत्री भाव है।

जो हृदयशील व्यक्ति अन्य प्राणी के दुःख से दुःखी होते हैं, उस दुःख को सहन नहीं कर सकते, उनके हृदय में दूसरों के प्रति अनुकंपा उत्पन्न होती है, उनमें सुख भोगने की रुचि (स्वार्थपरता) नहीं रहती। किन्हीं दो व्यक्तियों की योग्यता समान नहीं होती। योग्यता भेद होने से कर्म भेद, विचार का भेद, सम्प्रदायों का भेद, मान्यता भेद, मत-भेद भले ही रहें, परन्तु मनभेद व प्रीतिभेद नहीं रहना चाहिए। हृदय में सबके प्रति मैत्रीभाव उमड़ता रहना चाहिए। मैत्रीभाव एवं प्रेम राग-द्वेष को मिटा देते हैं। जहाँ प्रेम की गंगा बहती है वहाँ द्वेष-वैर समीप ही नहीं आते। प्रेम में अपना सुख बांटने की और दूसरों का दुःख बंटाने की भावना होती है। राग में दूसरों से सुख प्राप्त करने की भावना होती है, भले ही उससे दूसरे की हानि हो। राग-द्वेष रहित होना ही समता एवं समत्व में स्थित होना है। समत्व को श्रीमद्भगवद्गीता में योग कहा है। समता में भेदभाव, अपने-पराये का भाव नहीं रहता, यह ही मानवता है। मतभेद होने पर भी उसमें प्रीति भेद नहीं होता।

जिस प्रकार शरीर में कान, नाक, नयन आदि का कार्य अलग-अलग है, कान का काम सुनना, नाक का काम सूंघना, नयन का कार्य देखना है। इन कार्यों में भेद होने पर भी परस्पर में सब पूरक हैं, प्रीतिभेद नहीं है, उनमें प्रीति की एकता है। इसी प्रकार योग्यता, रुचि, परिस्थिति भेद होने से सबके कार्यों में भेद होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार व्यक्ति के कर्म में भेद होने पर भी परिवार में पति-पत्नी, पिता-पुत्र, नौकर-मालिक के काम (कर्म) में भेद होने पर भी प्रीति की एकता होती है। यह पारिवारिक भावना मानव मात्र के प्रति होना ही सच्ची मित्रता है। पारिवारिक भावना के अनुरूप पारस्परिक सद्भाव होना चाहिए। यह ही मानवता है।

मित्र की प्रसन्नता में प्रमोद होना, मित्र के कष्ट में सहयोग का भाव जगना है, सच्ची मित्रता है। प्राणिमात्र अपने मित्र हैं उनकी प्रसन्नता में प्रमोद, उनके दुःख में सहायता करना, उनके दोषों या बुराइयों में घृणाभाव न होकर हित का भाव होना, सबके प्रति मैत्रीभाव है। मैत्री, प्रमोद, करुणा और उपेक्षा इन चार भावनाओं को पातंजल योग-दर्शन में समाधि-प्राप्ति का हेतु कहा है (योगसूत्र, पाद 1, सूत्र 33) बौद्धदर्शन में इन्हें ब्रह्म-विहार कहा तथा जैनदर्शन इन्हें संयम का साधन मानता है। जिस व्यक्ति में सबके प्रति मैत्री भाव जगता है, उसे संसार के समस्त प्राणी मित्र लगते हैं। उसे कोई भी जीव बुरा तथा वैरी नहीं लगता है। अर्थात् उसे कोई भी शत्रु प्रतीत नहीं होता है। उसमें सब प्राणियों के प्रति सदैव मित्रता का भाव रहता है। उसके प्रति कोई व्यक्ति शत्रुता का भाव नहीं रखता है। (योग सूत्र 2.22)

सब जीवों को अपने समान समझना ही मानवता है। मानवता में मानव के प्रति ही नहीं, प्राणिमात्र के प्रति मित्रता का भाव जगता है, जिससे उसके हृदय में प्राणिमात्र के प्रति सदैव यह भावना रहती है कि सब जीवों का कल्याण हो, सबका भला हो, सब स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें, कोई दुःखी न रहे। इस प्रकार हृदय में प्रेम उमड़ता रहने से उसका हृदय प्रसन्नता से भरा रहता है, खिन्नता पास नहीं फटकती। जिससे उसकी मुखाकृति कान्तियुक्त एवं दीप्तिमान रहती है। वह सबको प्यारा लगता है। उसको सब प्यारे लगते हैं। उसका सबके साथ प्रेम का ही आदान-प्रदान होता है। जहाँ प्रेम है वहाँ प्रसन्नता है, प्रसाद है। जहाँ प्रसाद है वहाँ अवसाद नहीं हो सकता। अवसाद के निवारण का सबसे सरल एवं सहज उपाय प्राणिमात्र के प्रति मैत्रीभाव जागृत करना है।

मैत्रीभाव वाले व्यक्ति को सर्वव्यक्ति अपने बन्धु लगते हैं। उसका सबके प्रति व्यवहार पारिवारिक भावना के अनुरूप होता है। जिस परिवार में प्रत्येक परिजन के कर्म में भिन्नता होने पर भी वह किसी को हीन या नीचा नहीं समझता है, सबके प्रति सारा व्यवहार मित्रतापूर्वक करता है। मैत्रीभाव से जागृत सहृदयता, सद्भावना से उदित प्रसन्नता का प्रभाव उसके मन एवं तन पर पड़ता है। उसे चिन्ता, अवसाद, खिन्नता, नीरसता, हीनता, निराशा, भय

आदि मानसिक रुग्णता नहीं सताती, जिससे शरीर में रोग-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। शरीर स्वस्थ रहता है।

मित्रता का विलोम वैरभाव है। वैर का कारण है बुरा समझना। वैर का ही दूसरा नाम द्वेष है। जहाँ वैर है, द्वेष है वहाँ मैत्री व प्रेम नहीं हो सकता। अतः प्रेम का प्रादुर्भाव होने के लिए आवश्यक है कि हृदय में किसी के प्रति किसी भी प्रकार का लेश-मात्र भी वैर-भाव नहीं हो। क्योंकि, वैरभाव रहते हुए प्रीति की जागृति नहीं हो सकती, कारण कि जो किसी का भी बुरा चाहता है, जिसके हृदय में वैर-द्वेष की अग्नि जलती है उसके हृदय में प्रेम के, मित्रता के मधुर रस का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता।

वैर उसी के हृदय में उत्पन्न होता है जो किसी को बुरा मानता है और जो किसी को बुरा नहीं समझता, उसके हृदय में द्वेष एवं वैर उत्पन्न नहीं होता। उसके जीवन में दुःखियों को देख-देखकर स्वतः करुणा उत्पन्न होती है जिससे स्वार्थभाव मिटकर प्राणिमात्र के प्रति मैत्रीभाव जागृत हो जाता है।

निर्वैर होने से मित्रता की पात्रता एवं सामर्थ्य आता है। यही नहीं मैत्रीभाव के बिना निर्वैरता टिकती ही नहीं है। कारण कि जिस हृदय में प्रेम की सरिता नहीं बहती, वह हृदय शुष्क एवं नीरस होता है। नीरसता ऊब पैदा करती है। अतः सच्चे अहिंसक साधक के हृदय में सदैव यह मैत्रीभाव उमड़ा रहता है कि सबका भला हो, सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो, सबका हित हो, सब सुखी रहें। यही सच्चा मैत्रीभाव है।

मैत्री एवं वैरभाव के स्वरूप तथा इनके परिणाम पर विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं -

वैरभाव शांति व प्रसन्नता का घातक है। क्योंकि वैरभाव की उत्पति का मूल है- दूसरे में बुराई या दोष देखना। दूसरों के दोष-दर्शन, उनके द्वारा अपने प्रति किए गए आघात व अपकार स्मरण करने से प्रतिशोध के भाव पैदा होते हैं। पर दोष-दर्शन से द्वेष, अपकार और आघात के स्मरण से प्रत्यपकार व प्रत्याघात रूप वैरभाव की ज्वालाएँ ज्वलित होती हैं। ऐसा हृदयवृक्ष जो वैर की

आग से प्रज्वलित हो रहा हो, उस पर शान्ति व प्रसन्नता के पक्षी विश्राम नहीं करते।

अपकारी के प्रति अपकार करना, काटने वाले को काटना यह श्वान की प्रकृति है, सज्जन की नहीं। पाशविक प्रकृति है, मानवीय नहीं। मानवीय प्रवृत्ति या प्रकृति में तो मित्रता को ही स्थान है, शत्रुता को नहीं। वह शत्रुता को मित्रता से, अपकार को उपकार से जीतता है, कारण कि यह नियम है कि वैर से वैर की, द्वेष से द्वेष की आग घटती नहीं, अपितु बढ़ती ही है और हृदय को दग्ध करती है जो किसी भी ज्ञानी को अभीष्ट नहीं है।

दूसरे में दोष या बुराई दिखने का मुख्य कारण है उसके कार्य एवं विचारों की भलाई-बुराई को अपने आदर्श या स्वार्थ के फीते से मापना तथा अपने ही आदर्श को सर्वोत्कृष्ट मानना। अपने ही विचार, सिद्धान्त एवं आदर्श को सर्वोत्तम मानने वाले का आग्रह होता है कि समस्त संसार उसी के सिद्धान्त या आदर्श को स्वीकार करे और चले। जो उसे अस्वीकार करता है या विरोध करता है, उसकी दृष्टि में वह दोषी या बुरा है। परन्तु विज्ञजन अनेकान्त दृष्टि का उपयोग करते हैं। वे जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की विशेष स्थिति, शक्ति एवं मति होती है। तदनुसार ही वह अपना उद्देश्य बनाता एवं जीवन में ढालता है, अतः बुराई का कारण विवेक की कमी है। इसलिए वह क्षमा का अधिकारी है न कि द्वेष व दण्ड का। सत्य तो यह है कि दुरात्मा और महात्मा, पापी और धर्मी में श्रेणि और गुणों के विकास का ही अन्तर है। आज का धर्मात्मा किसी समय पापी था और आज का पापी भविष्य में धर्मात्मा (पुण्यात्मा) हो सकता है। आत्मा के विकास क्रम में पापी बच्चा है और पुण्यात्मा वृद्ध। पापियों को दुष्ट समझकर उनसे घृणा या वैर रखना वैसा ही है जैसा छोटे बच्चों को अबोध, अनाज्ञाकारी, खिलौने खेलने वाला समझकर उनसे घृणा करना या वैर रखना, जो न न्यायोचित है और न ही मानवोचित।

किसी भी व्यक्ति को पापी, दोषी एवं बुरा मानने से उस व्यक्ति के प्रति घृणा का भाव पैदा होता है, जो मित्रता का नाशक है। वस्तुतः घृणा पाप से होनी चाहिए पापी से नहीं, दोष से होनी चाहिए दोषी से नहीं, बुराई से होनी चाहिये,

बुरे से नहीं। कारण कि कोई भी व्यक्ति पापी, दोषी एवं बुरा होना पसंद नहीं करता। फिर भी वह ऐसा करता है तो निश्चय ही वह पाप के स्वरूप एवं अहितकारी परिणाम से अनभिज्ञ है। अन्यथा कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो पाप रूप विष को अहितकारी जानकर भी खाये, पाप रूप साँप को सुन्दरता के मोह से पाले। अतः पाप का कारण अज्ञान है।

अज्ञानी पर क्रोध, रोष व द्वेष करना अज्ञानता का ही परिचायक है। जिस प्रकार शिशु पाखाना कर वस्त्रों को बिगाड़ दे, घृणित पदार्थ खाने लगे तो वह शिशु क्षमा, सहानुभूति व सहायता का ही पात्र है, द्वेष या रोष का नहीं, उसी प्रकार पापी भी ज्ञान की दृष्टि से बच्चा ही होता है। अतः वह क्षमा या सहायता का ही पात्र होता है, घृणा, द्वेष या रोष का नहीं। इसलिए ज्ञानीजनों का प्रयत्न पापी को मिटाने का न होकर, पाप को मिटाने का होता है। उनके हृदय में किसी भी प्राणी के प्रति रोष, क्षोम व क्रोध के लेश भी भाव नहीं होते हैं। जब हृदय में लेश भी द्वेष या क्रोध न हो तब फिर क्षमा की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। क्षमा की आवश्यकता तो तब होती है। जब किसी के कार्य एवं वचन को बुरा माना जाय।

वस्तुतः सर्वोत्तम स्थिति तो यही ही है कि क्षमा की आवश्यकता ही न पड़े। यह ही अत्युत्तम बात है कि सर्व प्राणियों को क्षमा कर दिया जाय। उनके प्रति रहे हुए वैर भाव को भुला दिया जाय तथा मैत्री भाव स्थापित कर लिया जाय। अधम से अधम व्यक्ति में भी अगणित गुण होते हैं। विश्व में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिल सकेगा, जिसमें गुण का सर्वथा अभाव हो और जो केवल दोषों का ही पुंज हो। ज्ञानीजनों की दृष्टि व्यक्ति के गुणों पर जाती है, दोषों पर नहीं। अतः उनके हृदय में प्रीति उदित होती है जो उन्हें प्रमुदित बनाती है। इस प्रकार मैत्रीभाव की प्रसन्नता वैरभाव की खिन्नता को खा जाती है। मैत्रीभाव वाला व्यक्ति सदैव आनन्दित रहता है। अज्ञजन ही वैर भाव को अपनाकर खिन्न एवं अवसन्न रहते हैं, विज्ञजन तो मैत्रीभाव अपनाकर प्रसन्न रहते हैं।

-अध्यक्ष, अ.भा.जैन विद्वत् परिषद,

82/127, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

चतुर्विध संघ-सेवा से कर्म-निर्जरा*

श्री लक्ष्मीचन्द छाजेड़

संघ हमारा हम हैं संघ के, जहाँ भाव यह गहरा,
अनुशासित जीवन जीने का, खुद का खुद पर पहरा।
प्रेमभाव के उपवन में, जहाँ फलता भाईचारा,
बच्चा-बच्चा बोल रहा, इस संघ को नमन हमारा।।

संघ संयम-पालन एवं श्रावक जीवन के सुन्दर निर्माण का एक समुचित स्रोत है। संघ से अनुशासन, समर्पण, सेवा एवं तप-त्याग की ऊर्जा प्राप्त होती है। एक सजग चतुर्विध संघ व्यक्ति को सतत सजग साधना की प्रेरणा करता है। संघ को स्वयं तीर्थंकरों ने भी 'नमो संघस्स, नमो तित्थस्स' कहकर नमन करते हुए आदर्श प्रस्तुत किया है और बताया है कि चतुर्विध संघ की सेवा-भक्ति विनय करते हुए उत्कृष्ट रसायन आवे तो तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन होता है। सम्यग्दृष्टि आत्मा को संघ अपने प्राणों से भी प्यारा होता है।

"अच्छा करें, अच्छा पढ़ें, सदा रखें अच्छे विचार,
सहयोगी-सहायक रूप में सदा बनाएं अपने आचार-विचार।
बनें समर्थक नहीं बनें विरोधी, शुभचिन्तन जीवन का सार,
जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि सदा रखें अच्छे विचार।।"

समर्पण एवं सेवा का महत्त्व :

संघ का विकास स्पर्धा में नहीं, समर्पण में है। संघ सेवक को सदैव जाग्रत पहरेदार की तरह अपने विचार और कर्म पर कड़ी नज़र रखनी चाहिए ताकि उसके व्यवहार से संघ को हानि न हो। कार्यकर्त्ताओं का निरन्तर यह चिन्तन चलना चाहिए कि हम अपने साधर्मिक बन्धुओं के दुःखों के निवारण में कहाँ तक सहकारी बनें, हमने ग्लान की अग्लान भाव से परिचर्या की या नहीं, परस्पर उपजे कलह को निष्पक्ष और मध्यस्थ भाव से उपशान्त करने का प्रयत्न किया या नहीं, पुण्य योग से प्राप्त संसाधनों का संघ-हित में उपयोग किया या नहीं एवं

* अखिल भारतीय युवक परीषद् द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में श्रेष्ठ निबन्ध के रूप में पुरस्कृत

अपने आचरण से संघ के गौरव को ऊँचा उठाया या नहीं? संयमनिष्ठा, वत्सलता एवं शासन के गौरव की अभिवृद्धि की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करना हम सभी का कर्त्तव्य है, क्योंकि जागरूक चिन्तन ही संघ को प्राणवान बनाने में अहम् भूमिका निभाता है। चतुर्विध संघ रत्नत्रय की आराधना का केन्द्र है। जीवन के सत्य को जानने का साधन है, अतः चतुर्विध संघ कर्म-निर्जरा करने में सहायक सिद्ध होता है।

"तन से सेवा करो संघ की, मन से प्रभु के हो जाओ,
शुद्ध बुद्धि से तत्त्व निष्ठ हो, मुक्त अवस्था को पाओ।।"

सहयोग एवं प्रोत्साहन :

चतुर्दश पूर्वधर आचार्य भद्रबाहु ने अपनी ध्यान-साधना में से समय निकालकर संघ का आदेश मानकर संघ के निर्णय का सम्मान कर चतुर्विध संघ सेवा का आदर्श हमारे सामने रखा। शान्ति का केन्द्र चतुर्विध संघ है। बहने और बहाने की शक्ति जल प्रवाह में होती है, जो अनेक बूंदों का संग्रह है। अकेली बूँद में वह शक्ति नहीं होती है। सहयोग व परस्परावलम्बन से शक्ति उत्पन्न होती है, जो साधक की साधना में सहायक होती है। अतः महापुरुषों ने शान्ति सम्पादन के लिए सामुदायिक दृष्टिकोण अपनाया। चतुर्विध संघ में सहवर्तियों से प्रोत्साहन एवं प्रेरणा मिलती है, जो व्यक्ति के मनोबल को बढ़ाती है। सहयोग और सेवा से मुक्ति की ओर गमन करने में प्रोत्साहन मिलता है। चतुर्विध संघ सम्यक् आराधना का प्रशस्त राजमार्ग एवं सत्य की अनुभूति का प्रमुख साधन है।

"सास का प्यार ही बहू की सेवा पा सकता है,
स्वयं का आचार ही स्वयं को उठा सकता है।
आप बोलते हैं तो रेडियो भी बोलता है,
आपका झुकना ही किसी को झुका सकता है।।"

आचार-संहिता आवश्यक :

चतुर्विध संघ को सुव्यवस्थित गतिमान करने के लिए, सदस्यों की सार सम्भाल हेतु तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप आदि की निराबाध आराधना हेतु आगमकारों ने संघ के दो घटकों श्रमणों एवं श्रमणियों के लिए तो आगम में स्थान-स्थान पर आचार-संहिता, प्रेरणा एवं प्रत्येक संभावित ऊँची-नीची

परिस्थितियों में आराधक बनाये रखने के लिए सविस्तार प्ररूपणा की हुई है। व्यवस्थित संचालन हेतु तथा बागडोर सम्भालने हेतु-आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, गणावच्छेदक, प्रवर्तिनी आदि की प्ररूपणा की गई है। श्रमण-श्रमणी वर्ग की तरह श्रावक-श्राविका वर्ग का संचालन, सुरक्षा आदि की सुस्पष्ट व्यवस्था आगमों में नहीं मिलती है। चतुर्विध संघ को दृढ बनाने के लिए, संघ की अखण्डता के लिए, साधकों की आराधना-साधना आदि निराबाध रूप से गतिमान रखने हेतु, साधकों की सार-सम्भाल सुरक्षा आदि हेतु संघ आवश्यकतानुसार अपनी आचार-संहिता बनाता है। निष्कर्ष रूप में संघ के विधान की रूप रेखा का लक्ष्य यह होना चाहिए कि इस कल्पवृक्ष रूपी संघ की छत्र-छाया में रहे हुए सभी साधकों में परस्पर प्रेम एवं आत्मीयता बढ़े, सभी निर्भय, सुरक्षित, चरित्र सम्पन्न, विद्वान् तथा आत्मानन्दी बनें, सभी का आध्यात्मिक, नैतिक, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक तथा बौद्धिक विकास हो।

वीरशासन के प्रहरी, ये सभी मुनिराज हैं,
छत्रछाया में इन्हीं की, जीवित जैन समाज है।
रहनुमा हैं पासवां हैं, सर के मेरे ताज हैं,
ये मेरी परवाज हैं, ये ही तो धर्म जहाज हैं।।

गुरु कारीगर के समान :

किसान द्वारा बीज बोने मात्र से कार्य पूरा नहीं हो जाता है। बोने के बाद खेती को देखना, बाड़ करना, खाद देना, जल-सिंचन, निदान-परिविज्ञान, धान्यादि से घास, खाखलादि को अलग करना आदि कई कार्य होते हैं। वैसे ही साधक के लिए केवल संयम लेना ही लक्ष्य की इतिश्री नहीं, साधना का प्रारम्भ है। समिति-गुप्तियों का, महाव्रतों का पालन-सिंचन, मर्यादाओं की बाड़, तपरूपी निदान आदि समस्त कार्य होने पर संयम पर्याय रूप फसल प्राप्त होती है। जिस किसान के पास अच्छी फसल होगी वह उतना ही समृद्ध कहलाता है। इसी प्रकार मात्र आगम-कंठस्थ करने तथा कुशल उपेदशना से नहीं वरन् संयम-पर्यायों से साधक समृद्ध एवं वैभवशाली कहलाता है। प्रत्येक साधक उभयकाल आत्मनिरीक्षण से संयम की पर्यायों में निरन्तर आरोहण करे। पग-पग पर उसकी सजगता, जागृति, उसके आरोहण मार्ग का आधार है। जैसे

साधक के लिए संयम लेना ही इतिश्री नहीं, वैसे ही गुरु महाराज के लिए शिष्य बना लेना ही इतिश्री नहीं हैं। आगमकारों ने गुरु महाराज को चार प्रकार के विनय की शिक्षा अपने शिष्य को देने के लिए कहा है। जो गुरु ऐसा नहीं करते वे कर्त्तव्य च्युत होते हैं। आज जो विकृतियाँ, शिथिलताएँ दिखती हैं इसके मूल में मुख्यता इसी की है। संयम देने के बाद घड़ने की जिम्मेदारी गुरु की है। प्रत्येक साधक यह अवसर प्राप्त करने का अधिकारी है। तत्पश्चात् साधक का अपना-अपना व्यक्तित्व है। इससे साधक का गुरु आज्ञा में समर्पण भी बढ़ता है एवं शासन की गरिमा भी।

"बड़ों को प्रणाम करना, छोटों की महानता है,
छोटों को सम्मान करना, बड़ों की उदारता है।
एक विनम्रता हैं और एक वत्सलता है,
अपने-अपने स्थान पर, दोनों की प्रधानता है।।"

श्रावक का कर्त्तव्य एवं संघ सेवा :

प्रत्येक सम्प्रदाय में यह व्यवस्था पहले आवश्यक की जाए कि शिष्य बनाने के पहले उनकी शिक्षा-दीक्षा की समस्त व्यावहारिक कार्ययोजना तैयार हो, पूर्व की कार्य योजना में जो कमी रही हैं, उन्हें दूर कर अपने सामर्थ्य का सही आकलन कर ही दीक्षा देना चाहिये। शिष्य-शिष्याओं के जीवन में शिक्षा संस्कारों के आरोहण में हमारी कितनी भूमिका रहेगी? श्रावक समाज भी जागृत रहे। इन व्यवस्थाओं की समय-समय पर टोह अवश्य लें ताकि व्यवस्थाएँ और अधिक आत्म-विकासी बन सकें। आज श्रावक समाज अपनी मोहनींद में सोया है। यदि श्रावक-श्राविका जागृत हों तो स्वच्छंदताएँ तो रुकेंगी ही, साथ में पूज्य आराधक वर्ग की भी जागृति बढ़ेगी। श्रावक-श्राविका की जागृति भी बहुत बड़ी प्रभावना का रूप ले सकती है। श्रावक-श्राविकाएँ विनयपूर्वक निवेदन भी कर सकते हैं और एकजुट हो तो आत्मविकासी मर्यादाओं, आज्ञाओं, परम्पराओं के पालन हेतु दबाव भी बना सकते हैं। मात्र दीक्षा में अनुमोदना कर देना, जयकारे लगा देना, अभिनंदन कर लेना ही श्रावक समाज के कर्त्तव्यों की इतिश्री नहीं है। हम साधु-साध्वी की संयम-साधना में, विकास में कितना अधिक से अधिक सहयोगी बन सकते हैं, इस हेतु श्रावक वर्ग सदैव अनौपचारिक तत्परता रखे। संयम लेना अथवा देना दोनों कार्य जिम्मेदारी के

हैं। सभी अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी से करेंगे तो जिनशासन दीर्घजीवी एवं आत्म विकासी होगा। शासन सुरक्षित है तो साधना सुरक्षित है। साधना सुरक्षित है तो चतुर्विध संघ भी सुरक्षित है। आत्म-उत्थान, आत्म-प्रगति एवं गुणों को प्रकट करने के लिए संघ के प्रति श्रावक कर्त्तव्य के अनुकूल अगर हम 24 घण्टे में से 24 मिनट का समय निकालें तो वर्ष भर में कितना समय संघ-सेवा के लिए, आत्मा के लिए निकल सकता है, चिन्तन करें।

जोड़-तोड़ की नहीं है नीति, लक्ष्य एक सेवा का,
प्रभुता रहे संघ की प्रतिपल, हो नहीं असर हवा का।
सम्यक् ज्ञान-क्रिया से होता, जहाँ धर्म विस्तारा,
करें साधना ऐसी फिर से, नहीं लें जन्म दुबारा।।

शिथिलाचार को सहयोग नहीं :

श्रावक हित बुद्धि से संघ को जोड़ने का कार्य करेगा, तोड़ने का नहीं। वर्तमान समय में चतुर्विध संघ की समर्पण भाव से सेवा करने वाले श्रावक कम हैं और शिथिलाचार के प्रोत्साहन देने वाले अधिक हैं। वे इस बात को भूल जाते हैं कि शिथिलाचार एव संघ से निष्कासित साधु को प्रोत्साहन देने से संघ व समाज में विघटन, अशान्ति, विरोध, वैमनस्य एवं कलह का वातावरण होने की सम्भावना रहती है। विपरीत वातावरण बनने में यदि हम स्वयं ही अग्रगामी बनते हैं तो दूसरों को भी प्रोत्साहन मिलता है। इसके बदले यदि हम संघ-समर्पण और गुरु-सेवा को अपने जीवन का चरम लक्ष्य बनाकर चलें तो हमारी भी कर्म-निर्जरा होगी एवं साध्वाचार में भी सक्रिय सहयोगी बनेंगे। विवेकशील श्रावक-श्राविकाओं को साधु-साध्वियों का चारित्र निर्मल रखने में पूर्ण सहयोग देना चाहिये।

संघ प्राण है, संघ त्राण है, संघ ही एक सहारा,
संघ देव है, संघ ही पूजा, आश्रय यही हमारा।
संघ है चन्दा, संघ है सूरज, संघ सदा उजियारा,
प्रभु महावीर फरमाते हैं, संघ है तीरथ प्यारा।।

तिराने वाला तीर्थ :

भगवती सूत्र में संघ को तीर्थ कहा है-"तित्थं खलु चाउवण्णे

समणसंघे।'' श्रमण प्रधान चतुर्विध संघ ही तीर्थ है, तारने वाला है। इसी प्रकार आचार्य श्री ने श्रावक को संघ-रक्षक बतलाते हुए कहा है कि श्रावक संघ का रक्षक होता है और रक्षक का कर्त्तव्य होता है कि वह साधु-साध्वी के आहार - विहार, शिक्षा-दीक्षा और ज्ञान-ध्यान में निर्दोष मार्ग का सहयोगी बने। साधु-साध्वी के संदर्भ में निर्णय का अधिकारी आचार्य को मानते हुए आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने फरमाया है-''संघ में कोई साधु गलती कर जाय तो संघाधिकारी आचार्य यथोचित प्रायश्चित्त देकर शुद्धि करता है। कभी किसी को अलग भी करना हो तो आचार्य के अधिकार की बात है, श्रावकगण का कर्त्तव्य इस आदेश की पालना करना मात्र है, इसमें दखल देना श्रावक के अधिकार की बात नहीं है। (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 453) संघ मुख्य है, व्यक्ति मुख्य नहीं। संघ सदा रहेगा, व्यक्ति सदा नहीं रहेगा। व्यक्ति चाहे साधु हो, साध्वी हो या श्रावक -श्राविका। व्यक्ति का रक्षण संघ द्वारा होता है। नन्दी सूत्र की स्थिरावली में तीर्थंकर भगवान् की स्तुति रूप गाथा तो तीन बताई, पर संघ की महिमा आठ उपमाओं से पन्द्रह गाथाओं में बताई गई है। संघ मेरु है, संघ नगर है आदि-आदि।

संप्रदाय का वाद नहीं जहाँ, नहीं किसी से कटुता,
आगम के अनुकूल प्रेम, व्यवहार में रखते पटुता।
सद्भावों की सुन्दरता से, संघ सभी को प्यारा।।

अनुशासन में पराक्रम :

त्रिकालज्ञ सर्वज्ञों एवं शासन संचालक आचार्य भगवन्तों की आज्ञा स्खलना होने पर न तो श्रद्धा सम्यक् रहेगी न ही हमारे आचार शुद्ध रहेंगे, और न ही संघ में एकरूपता रहेगी। संघ वहीं है जहाँ आज्ञा प्रमाण है। आगम का संदेश है। ''अणुसासणमेव परक्कमे'' अनुशासन ही पराक्रम है। ''अप्पा चेव दमेयव्वो'' अपने पर अनुशासन करो। धर्म संघ आगमों की सुव्यवस्थित नैतिक आचार संहिता को व्यक्ति में प्रस्थापित करते हैं, इसी से चतुर्विध संघ का महत्त्व है। हमें सदैव ध्यान रखना चाहिये कि गुरुभगवन्तों में अनुशासन की पालना में किसी भी तरह की स्खलना न हो। हमारे आचार में अहिंसा और अनेकान्त की प्रतिष्ठा हो, तभी हमारा संघ प्राणवान रहेगा तथा व्यक्ति की साधना में सहायक एवं कर्म-निर्जरा का कारण बनेगा।

संघ-सेवा में सभी हों आगे, सेवक भाव सुहाना,
पद पूजा की नहीं चाहना, हर दिल हो संघ दिवाना।
ध्येय जहाँ हैं आत्म शुद्धि का, करके स्वयं सुधारा,
खुद तीर्थंकर महिमा गाते, संघ है तारण हारा।।

आत्मविकास का पुरुषार्थ :

भगवान् महावीर के शासन की सारी व्यवस्था आत्म-विकास के लिए है। मानव भव अत्यन्त दुर्लभ है। इसे पाकर एवं वीतराग वाणी का श्रवण कर सत्य को जानने का पुरुषार्थ नहीं किया तो मानव भव व्यर्थ ही चला जायेगा। चतुर्विध संघ वह सरिता है, जिसमें सदाचार रूपी जल निरन्तर बहता रहता है। जप और तप उसके दो किनारे हैं। पाप रूपी कालुष्य को धोने का इससे पवित्र और कोई तीर्थ क्या हो सकता है। "समाहिकारएणं तमेव समाहिं पडिलब्भई" अर्थात् जो दूसरो को, प्रतिफल की आकांक्षा के बिना सुख प्रदान करता है, वह स्वयं भी सुख और कल्याण को प्राप्त करता है एवं आगे वाले की कल्याण प्राप्ति में सहयोगी बनता है। जीवन में व्यक्ति को नहीं गुणों को, सम्प्रदाय को नहीं शासन को, अपने विचारों को नहीं प्रभु आज्ञा को महत्त्व देना होगा, तभी हम चतुर्विध संघ की सही मायने में सच्ची सेवा एवं प्रभावना कर सकेंगे। संस्कृत में एक उक्ति प्रचलित है- "सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः" सेवा का कार्य योगीजनों के लिए भी परम दुष्कर है। प्रवचन देना, पाण्डित्य की प्राप्ति, व्रत उपवासादि का पालन आदि कार्य सहज हैं, पर सेवा का कार्य दुष्कर, अति दुष्कर है, क्योंकि सेवा के लिए अहं का विसर्जन आवश्यक है। घृणा पर विजय के बाद ही व्यक्ति सेवा मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। सम्मान, सत्कार, पद प्रतिष्ठा के लिए सहज एवं निष्काम सेवा कठिन है।

वह वीणा, वीणा ही क्या, जिसमें मधुर झंकार नहीं,
वह पायल, पायल ही क्या, जिसमें मधुर गुंजार नहीं।
वह मंजिल, मंजिल ही क्या, जिसमें उपलब्धि का संकेत नहीं,
वह मानव , मानव ही क्या, जिसमें संघ सेवा का संस्कार नहीं।।

चतुर्विध संघ-सेवा का विधान :

यदि हम सम्प्रदाय को नहीं मिटा सकें तो कम से कम सम्प्रदायवाद को मिटाकर ही स्थानकवासी जैन समाज को गतिशीलता प्रदान कर सकते हैं, अतः हर सदस्य से निवेदन है-

आज विश्व की खींचतान में, केवल यही समन्वय दर्शन।
दे सकती है आकुल-व्याकुल, मानवता को नव संजीवन।।

समाज को सुदृढ़, मजबूत बनाकर विकास की ओर आगे बढ़ाने हेतु चतुर्विध संघ-सेवा में निम्नलिखित नियमों का पालन आवश्यक है-

1. चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य को निष्ठावान होना चाहिए। यथासंभव समाज के कार्य के लिए तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग देने को वह अपना अनिवार्य कार्य समझे। प्रतिदिन चतुर्विध संघ-विकास के लिए चिन्तन मनन करके अपने अमूल्य समय में से कुछ समय निकालकर सेवा द्वारा लाभान्वित करे।
2. माया, कपट की राजनीति से ऊपर उठकर अन्तर की सरलता के साथ समाज के विकास-उत्थान का लक्ष्य रखते हुए निष्कपट भाव से तन्मयता और लगन के साथ चतुर्विध संघ के उद्देश्य की पूर्ति हेतु कार्य करे।
3. पर दोष देखने के बदले स्वदोष और परगुण निरीक्षण की भावना रखे, किसी की निन्दा-टीका-टिप्पणी शिकायत न करे। दूसरों को नीचा दिखाने की दुर्भावना न हो।
4. सभी को सम्मान से साथ लेकर चले। चतुर्विध संघ के सभी घटकों का यथोचित आदर सत्कार करे। एकता, प्रेम, स्नेह, अपनत्व का व्यवहार संघ-विकास का प्रतीक है।
5. चुतर्विध संघ को प्रेम एकता के सूत्र में पिरोना अपना आवश्यक कर्त्तव्य समझे। चतुर्विध संघ का हित सर्वोच्च हो, व्यक्ति मैं और मेरेपन के अहं से दूर रहे।
6. साधु-साध्वी गुरु भगवन्तों के आहार, विहार, स्वाध्याय, ज्ञान-ध्यान, त्याग-तपस्या में आचार-संहिता के अनुरूप वैय्यावच्च करते हुए तन, मन, धन से जो साध्वाचार के नियमों के अन्तर्गत कल्पनीय हैं, सेवा में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।
7. जहाँ भी अवसर मिले, अपनी शक्ति रहते हर जगह सहयोग के लिए तैयार रहना चाहिये। सहयोग घर, परिवार से शुरु होते हुए संघ, प्रांत एवं देश सेवा तक बढ़ाते जाना है। यदि चतुर्विध संघ का कोई घटक दुःखी है तो वह संघ कभी उन्नति नहीं कर पायेगा।

तन-मन-धन और समय, समर्पित जिनशासन की सेवा में,
निकले प्राण कभी भी मेरे, जिनशासन की सेवा में।
जीवन का हर पल समर्पित, जिनशासन की सेवा में,
मैं और मेरा सर्वस्व समर्पित, जिनशासन की सेवा में।।

निःस्वार्थ-सेवा :

नाम, पद, प्रतिष्ठा पाने के लिए संघ सेवा नहीं करें, क्योंकि सेवा का सही स्वरूप यह नहीं होता एवं इससे सेवा का विशेष लाभ मिलने वाला नहीं है। ऐसे भाव भी कभी न रखें कि क्या करें, संघ के सदस्य हैं इसलिए सेवा कार्य करने पड़ते हैं। शासन सेवी जो हैं उनमें संघ व संघनायक के प्रति एकनिष्ठ श्रद्धा और समर्पण भाव होना आवश्यक है। प्रत्येक व्यवहार विद्या, विनय व विवेक से युक्त हो, संघ की आचार संहिता का ज्ञान हो, करणीय-अकरणीय का विवेक हो, जो कार्य साधु नहीं कर सके, वह कार्य संघ सेवी सदस्य कर देते हैं। इतिहास साक्षी है निन्हवों को सुधारने वाले श्रावक ही थे।

ऐसा दीप जलाओ कि कभी बुझे ही नहीं,
ऐसा फूल खिलाओ कि कभी मुरझाए ही नहीं।
सुलझा लो अपनी चेतना के हर तार को,
ऐसा जीवन बनालो कि कभी उलझे ही नहीं।।

उपसंहार :

स्थानांग सूत्र में राष्ट्रधर्म, कुलधर्म, गणधर्म आदि के साथ ही संघ धर्म का भी उल्लेख आया है। यहाँ धर्म का मतलब इन सबके प्रति हमारे जो कर्त्तव्य या दायित्व हैं उनके परिपालन से है। ताकि वैयक्तिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक जीवन में भी शान्ति और समता की स्थापना की जा सके। हम विभाव दशा से स्वभाव दशा में आएँ। हम अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए चतुर्विध संघ को ऐसा स्वरूप दें कि वह प्रभु का सर्वोदय तीर्थ बने। एक आदर्श चतुर्विध संघ की मंगल भावनाओं के साथ-साथ चतुर्विध संघ की जय हो, विजय हो। कल्पवृक्ष रूपी चतुर्विध संघ की पावन, आध्यात्मिक छत्र-छाया में सभी का सर्वांगीण विकास हो, सभी का आत्म कल्याण हो, सभी का मंगल हो, सभी के व्यावहारिक जीवन में आध्यात्मिकता का विकास हो, सभी भव्य जीव मोक्षगामी बनें।

-नेताणियों का बास, भकार का बास, समदड़ी-344021 (राज.)

प्रासंगिक

Empowering The Vegetarians

Dr. Jeoraj Jain

A Group of aggressive but well educated youngsters paused following questions in a workshop.

Is it not a delusion to say that vegetarians are **non-violent** due to their sticking to **plant-based** diet only, because science knows very well that like animals, plants are also living-beings!

Is it not more rational & prudent to feed 4 people just by killing a single goat rather than to feed 1 person only by killing more than 1000 wheat seeds!

Vegetarians claim to eat plant-based products only, where as in practice, they do take animal products, like milk and milk products in their diets.

Why should vegetarians avoid unfertilized eggs, when we know that no bird or animal would be coming out of it!

****Before attempting to answer these questions, it was considered worth while to understand the scientific principles of vegetarianism in proper perspective.**

(1) The simple fact is that people have to depend for their food on living-beings. But the **first principle** is that one must consciously **strive** to **limit** and reduce the injury or **killings** of living-creatures.

(2) The **second** fact is that like Charles **Darvin's** theory of **Evolution** of living-beings, our philosophy also says that the evolutions of creatures is designated in different stages by the **number of senses** it owns or possesses. That means, in simple language, the least developed living-being will have only one sense with it, and that is the "touch-sense". Next higher stage of development would bring one more sense to it and that is the mouth organ. The third sense is smell. 4th

stage of development would add eyes and 5th stage would bring ears to it. The creatures having 5 senses along with mind are on the top of the ladder of development. man is the highest developed creature by this reckoning.

(3) It is logically and naturally expressed that killing of higher developed creatures would attract more sins or destruction than the killing of less developed creatures. This logic is derived from the principle of **optimization of resources** being followed by the nature. According to the **Law of Nature** and the Moral Ethos, optimization of natural resources can be attempted with respect to the following **two variables:-**

(i) Development:- Man knows that he has to depend on other living beings. But he uses the above noted principles, while selecting his food. A Common sense would also reveal that if one can sustain oneself on least developed creatures, then one has no right at all to kill higher developed creatures. More over there is a vast difference in development of faculties of one sensed and two-sensed creatures. The two sensed is a mobile creature, which can move from uncomfortable to comfortable environment besides other advantages.

(ii) Quantity:- A rational human being thinks further that amongst one sensed plants also, if he can sustain on 10 nos. of living-beings than he should avoid killing even the 11th living-being! The whole approach is to minimize the injury or to minimize the killings.

Thus in nature, maximum of wasteful or unnecessary killings is avoided, This leads to conservation of natural earth resources and its environment.

(4) Jain philosophy also gives great importance to the **intentions** of the doer. If we have intentions to help others or have cruel intentions to inflict maximum injury to living-

being, the strength of bond of **Karma** would vary according to these intentions. This principle is also applied in our daily life. If a patient dies, while he is under treatment by a doctor, the doctor does not get punishment, because he had noble intentions of saving the patient. But while driving a car, if any pedestrian dies due to hitting of the car, the driver would get some punishment because of negligent or rash driving. However, if a thief shots dead a person with an intention to hide his deed, he would be treated as fit to get capital punishment!

As such it is advised that we should have **compassion** towards every living-being, even towards plant-beings, while using them for our food. That means we should strive to minimize the killings of plant-beings at its lowest number. When we inculcate such rational and **scientific mindset** towards all our resources, particularly the **living-beings** around us, we become very sensitive and by nature cannot indulge in disturbing our ecosystem just for the sake of lust and greed. Such **life-style** is called **Vegetarian** or non-violent life-style. When we look at the **startling** statistical data about the rash and **ignorant** acts of **violence**, being committed towards the innocent animal-world and environment by non-vegertarians, we would feel so sorry and guilty that our **hearts** would **bleed** and cry out to stop immediately the killings of all animals in the world without any precondition. This data is presented below in the fact-sheet, **"Did you know the efficiency"**.

(5) Metabolism:- Our Rishis have looked at the metabolism, taking place in our body after we eat food, from a different and rational angle. According to them, there are **seven stages** of **metabolism**. The food is **first** converted in **'Rasa'**, absorbed and secreted by our glands (juices) in form of simple non-living juice. Milk comes in this Category. The next stage is blood. The food Juices are absorbed by blood-

cell and form blood. The subsequent conversions are in form of 5 dhatus, viz. flesh, bone fat, marrow and virya (vitality). The second onward Dhatus are part of living-cells.

(6) The efficiency of digestion :- The human stomach is considered to be the most efficient machinery for utilization of our food intake. If we use any intermediary machine, like stomachs of animals, to get our secondary food ingredients from the primary food- grains, in form of meat, the gross (ultimate) efficiency of utilization of food-grains reduces drastically. In fact, the following data reveals that introduction of this intermediate machinery in food chain, reduces the utilization by a **factor** of **12!**

(7) Did one know the efficiency of vegetarians?

Actual statistical data reveal that:-

7(1) Fact A:- ***Food-Grains, down the drain!***

Average consumption of food-grains per person per year in India is about 178 kg and in USA it is 1100kg. That means an American consumes **7 times more** than an Indian does. But a simple observation reveals that an American friend does not eat more than an Indian, when they were kept together on plant-based diet!

Then a big **Question** arises, as to how come we consume only 178kg, whereas an American is able to gulp almost 1100kg?

7(2) Fact B:- ***Colossal wastage by non-vegs!***

(i) An **American survey report** reveals that on **one Acre** of land in USA, if **Soyabean** is grown; it would yield **510kg** of useable protein. If wheat is grown, it would yield 475kg of protein.

(ii) If any of these farm products is fed to animals like **steer**, it would yield only **50kg** of useable protein.

(iii) A similar report by the "President's Science Advisory committee", vol.II, May 1967 titled as "The world food

problem", highlights a fact that cattle must be **fed 10 kg of vegetable** protein (from grains etc.) in order to produce **1kg of animal** protein.

(iv) Another report in USA substantiates this fact by enumerating that **78%** of all grains, that are grown there, are fed to **raise animals.** They are reared for slaughter houses They have an optimum life-span of **14 months** only, because their conversion efficiency is maximum during this period.

(v) Even during this period, 14kg of grains as feedstock, would produce 1 kg of Beef, and 8 kg of grains would produce 1 kg of pork.

The above data corroborates the facts, stated in the report on productivity of land in Fact B (ii) above.

(vi) On an average conversion ratio may be taken as 12, which translates into the simple **fact** that a person depending on slaughter-house culture (Non-veg or meat eater) would need **12 times more food-grains** than a person sustaining on plant-based Diet (vegetarian)!

7(3) Fact C :- ***Mind boggling figures!***

(i) Another **survey report** says that an American eats 88kg of beef and chicken, whereas an Indian consumes 3.4kg of it per year.

(ii) Based on the fact that an average **healthy** person needs **140-150** kg of solid direct food- grains per year. (An Indian may be requiring 140 kg and an American may be requiring 150 kg), the direct grain consumption for an American and Indian works out to be 62 kg (150-88) and 136.6kg (140-3.4) respectively.

(iii) Taking into account the conversion ratio of 12 for animals, the **equivalent food** grain consumption would be for-

an American= 62+88X12=**1177kg**

and for an Indian=136.6+3.4X12=**177kg.**

These **startling facts** compare very well with those

given in Fact A above.

(iv) A Relook at the Possible Scenario:-

(a) If all Americans become vegetarian- After meeting the full requirement of their **vegetarian diet,** Americans would be saving 1100-150=950kg of food-grains per person per year. The surplus food, so generated, would be sufficient to feed fully an additional population of 1700 millions. through out the year! In comparison to it, the population of India is merely 1100 millions.!

(b) If all the Indians become non-vegetarian- They would need **2000 millions** Tons of food-grains to produce sufficient **meat,** (through secondary machines, like animals), to feed them for a year. In comparison to it, the present day production of food-grains, in India, is merely 210 millions Ton.

(8) Environment:- During **'World Environment Day'** celebrations on 05.06.2009 at The Institution of Engineers, Jamshedpur, an interesting fact had emerged viz, one should change one's **attitude** and **life style** to achieve incremental improvement in our existing polluting system. Having said that, the findings of a **Report** of United Nations by H. Steinfeld et al, "Live stocks Long Shadow"--Environmental Issue and Options-2006, was placed on the table. It says emphatically that the **meat industry pollutes** more than **all the cars**, SUVs, trucks, planes, ans ships in the **world combined?**

In view of it, the single **most effective** thing one responsible citizen can do to **help reduce** pollution and **global warming**, is to increase his **"No-Meat"** days in a week, and as a responsible **Nation**, put a blanket **Ban** on opening of any new **slaughter house**.

(9) Conclusion:-

9.1 *Facts!*

(i) The slaughter-house culture or meat eating satisfies lust

and greed of ignorant people to earn more. ***Conversion*** of food-grains by animals for human food is a **colossal wasteful practice** and hence it must be stopped immediately. The export of meat must also be banned in India.

(ii) Since Govt. of **India** is blinding following the wasteful American model to convert food grains into meat through animals by starting several new slaughter houses, the knowledgeable **intelligentsia** should come forward with all their might to **reverse** this trend and to show their commitment for conservation of resources.

(iii) American companies must stop their misplaced propaganda for meat eating and abandon the production of meat by **dismantling** of facilities at least in India.

(iv) To change the existing mind-set of offenders, ***dissemination*** of information of above noted **facts** and figures, at various levels on massive scale, should be the **top priority** of the society to create **awareness.**

9.2 General

These are stunning facts. We may feel pity on our ignorance and the prevalent mis-information. But what next? what should a knowledgeable ordinary citizen do? Can he contribute his part of duty, at least by sharing this information and communicating with his neighbors!

The social organizations can use the powerful modern media to enlighten the masses in proper perspective, so that each city or social group is motivated and inspired to discard such wasteful habits like meat-eating. The vested interest, running the slaughter-houses should realize their folly and should not dare to oppose the sensible, humanitarian, efficient and eco-friendly life-style of vegetarianism.

-Kamani Centre, 2nd Floor, Bistapur, Jamshedpur-831001

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (2)

प्रश्न 1. – सत्त्वेषु मैत्रीं, गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थ भावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव! ।।
दशवैकालिक सूत्र की कौन-कौनसी गाथाएँ इसकी पुष्टि करती हैं?

उत्तर : **(1) सत्त्वेषु मैत्रीम्:–** संसार के सभी प्राणियों को अपने समान समझना। जैसे मुझे सुख प्रिय एवं दुःख अप्रिय है, वैसे ही अन्य जीवों को भी सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है। इस प्रकार जीव मात्र को आत्मवत् समझना, सभी का कल्याण चाहना, मैत्री भावना है। यह मैत्री भावना चार प्रकार की है :–

(अ) रागजनित मैत्री– माता-पिता, स्वजन सम्बन्धी आदि पर जो आत्मीयता का भाव है, वह स्वार्थपूर्वक मैत्री होने से हेय है।

(ब) शुभ मैत्री– समस्त जीवों की कल्याण हेतु भावना– दशवैकालिक 6/3 "सव्वभूय........................।"

(स) साधन रूप मैत्री– यह धर्म से युक्त मैत्री है। सर्वभूत संयम के बिना इसका पालन नहीं हो सकता। वास्तव में सर्वभूतों के प्रति संयम ही साधन रूप मैत्री है। दशवैकालिक 4/9. "सव्वभूयप्पभूयस्स......", दशवैकालिक 10/5 अत्तसमे मणेज्ज छप्पिकाए........।"

(द) शुद्ध मैत्री– आत्मा की मैत्री अर्थात् अपनी आत्मा को पाप से बचाना। दशवैकालिक चूलिका 2/16 "अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो...." उत्तराध्ययन 20/37 अप्पामित्तं ....
आचारांग 1/3/3 पुरिसा तुममेव तुमं मित्तं..........।

(2) गुणिषु प्रमोदं– गुणवान आत्माओं के सद्गुणों को देखकर मेरा हृदय नाच उठे, अर्थात् जड़ता को मिटाकर जो चिन्मयता का विकास कर रहे हैं, निर्दोषता की ओर अग्रसर हैं, उनको देखकर रोम-रोम पुलकित होना 'गुणिषु प्रमोदं' है। गुणीजनों के प्रति प्रमोद भाव से, गुणों का प्रवाह अपने अन्दर आता है। मैत्री भावना की तरह इनके भी चार भेद

हैं –

(अ) रागजनित प्रमोद– अपने संबंधी के गुणों को देखकर प्रमोद होना।

(ब) शुभ प्रमोद– जीवमात्र में गुणों को देखकर प्रमोद होना। जिस प्रकार महासती राजीमती ने रथनेमि को संयम में स्थिर करने के लिए अगंधन कुल में जन्मे सर्प के गुणों का आख्यान किया।

पक्खंदे जलियं जोइं, धुमकेउं दुरासयं।

णेच्छंति वंतयं मोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ।। **-दशवैकालिक 2/6**

अगंधन कुल में उत्पन्न हुए सर्प की यह विशेषता है कि वह जलती अग्नि में कूदकर मर जायेगा, किन्तु वमन किये हुए विष को पुनः ग्रहण नहीं करता, केवल रथनेमि के लिए ही नहीं, अपितु प्रत्येक साधक के लिए यह गुण उपादेय है। ''गुणेहिं साहू, अगुणेऽसाहू, गिण्हाहि साहू गुण मुंचऽसाहू ।।'' दशवै. 9/3/11 अर्थात् गुणों से साधु होता है और दुर्गुणों से असाधु। इसलिए हे साधक! तू साधु के योग्य गुणों को ग्रहण कर और असाधु (अगुणों) को छोड़।

(स) साधन रूप प्रमोद :– देव, गुरु एवं धर्म के प्रति होने वाला अहो भाव–

अहो जिणेहिं असावज्जा............दशवैकालिक 5/1/92

भगवान् की आज्ञा के प्रति प्रमोद होना– अहो! परम दयालु जिनेश्वर देवों ने मोक्ष साधन में सहायक साधु के शरीर के धारण एवं पोषण के लिए कैसी निर्दोष वृत्ति बतलाई कि शरीर का भरण-पोषण भी कर ले और पाप के दोष से भी बचा रहे।

''जहाहि अग्गिजलणं णमंसे..........दशवैकालिक 9/1/11

विनय-समाधि नामक नवम अध्ययन गुणवान् गुरु भगवंतों के प्रति प्रमोद भाव को अभिव्यक्त कर रहा है कि जैसे आहिताग्नि देव पूजक विप्र अनेक प्रकार से घी, मधु आदि की आहुति और वेद मंत्रों से अभिषिक्त अग्नि को देव भाव से नमस्कार करता है, वैसे ही योग्य शिष्य, अनंत ज्ञान हो जाने पर भी आचार्य महाराज की सेवा में तत्परता से उपस्थित रहे।

उपासकदसा सूत्र- अट्ठिमेज्ज पेमाणुराग रत्ता - अर्थात् अस्थि-मज्जा तक में धर्म के प्रतिप्रेम और अनुराग होना- यह साधक का प्रशस्त धर्मानुराग है।

(द) शुद्ध प्रमोद :- आत्म गुणों के प्रति प्रमोद भाव होना-

णिरुवक्के से परियाए.....मोक्खे परियाए......अणवज्जे परियाए।

दशवैकालिक, प्रथमचूलिका सूत्र 11,12,13,

आत्मरमणता रूप संयम पर्याय क्लेश रहित, मोक्ष में ले जाने वाली तथा निरवद्य है। इस प्रकार चारित्र गुणों के प्रति हृदय में प्रमोद होना-

एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जए।
तारिसो मरणंतेवि, आराहेइ संवरं॥

दशवैकालिक, 5/2/44

ज्ञानादि गुणों की प्रेक्षा करने वाला साधक, मरणान्त काल में भी आराधक होता है।

3. क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्- आधि-व्याधि और उपाधि से घिरे हुए जीवों के दुःख को देखकर हृदय का द्रवित होना कारुण्य भावना है। जिनशासन में तीन स्थानों पर आँसू आना अच्छा बतलाया है-

(1) उपकारी के प्रति कृतज्ञता के आँसू।

(2) पाप के प्रति पश्चात्ताप के आँसू।

(3) दुःखी के प्रति करुणा के आँसू आना सम्यक्त्व का लक्षण है।

दशवैकालिक सूत्र की रचना का कारण भी आधि-व्याधि और उपाधि से घिरे हुए अल्पायुष्क मनक की आत्म-समाधि ही है। यह भी 4 प्रकार की हो सकती है -

(अ) मोहजनित करुणा :- राजीमती पर रथनेमि की कही जा सकती है।

दशवैकालिक 2

(ब) शुभ करुणा -

दशवैकालिक 5/1/39-40 गर्भवती से आहार नहीं लेना।

दशवैकालिक 5/2/10-11 रंक-भिखारी आदि पर

(स) साधन रूप करुणा- दशवैकालिक 2/7 राजीमती द्वारा रथनेमि पर दशवैकालिक अध्ययन 5 में स्थल-स्थल पर प्राणिरक्षण की बात

कही गई है।

(द) शुद्ध करुणा– दशवैकालिक अध्ययन 4 में यथा- अत्तहियट्ठयाए अर्थात् आत्म हितार्थ भाव दया, स्वदया, निश्चय दया।

4. माध्यस्थ भावं विपरीतवृत्तौः– किसी की गलती को देखकर खेद या क्षोभ नहीं करना। वह गलती मैंने अनन्त बार की है। अतः उस व्यक्ति से आत्मीयता रखते हुए असत् प्रवृत्ति में उदासीन होना ही माध्यस्थ भावना है। प्रायः देखा जाता है कि जब साधक अपने न्यून स्पर्शना वाले को देखता है तो अहंकार करता है और अधिक स्पर्शना वाले को देखकर ईर्ष्या करता है। ये दोनों ही दूषण आत्मा का पतन करने वाले हैं। अतः आगम वाणी फरमा रही है -

ण बाहिरं परिभवे, अत्ताणं ण समुक्कसे। -दशवैकालिक 8/30

साधक न दूसरे का तिरस्कार करे, न आत्म-प्रशंसा करे, प्रत्येक के पुण्य-पाप कर्म भिन्न-भिन्न हैं, ऐसा जानकर माध्यस्थ भाव को धारण करे।

दशवै. 5/2/30 जेण वंदे ण से कुप्पे, वंदिओ ण समुक्कसे।

जो मुनि वंदन न करने पर क्रोध नहीं करता और मान-सम्मान पाकर गर्व नहीं करता, दोनों स्थितियों में माध्यस्थ्य स्वभाव में रहता है, उसका श्रमण-धर्म बिना बाधा के अखण्ड टिका रहता है। इसके भी चार प्रकार हैं-

(अ) मोहजनित माध्यस्थ– गाली-गलौच को सहन करना, भोजन मिलने के आशय से, पराधीनता से सहन करना। (दशवैकालिक 2/2)

(ब) शुभ माध्यस्थ्य– दशवैकालिक 5/2/27-28 नहीं देने पर समभाव।

(स) साधन-रूप माध्यस्थ्य– दशवैकालिक 9/3/6 अणासए जोउ सहिज्ज कंटए... पृथ्वी सम सहनशील-दशवैकालिक 10/19 पुढवीसमे मुणि हवेज्जा........

(द) शुद्ध माध्यस्थ्य– दशवैकालिक 6/69 अममा अकिंचणा।
दशवैकालिक 8/64 अममे अकिंचणे।

(क्रमशः)

Tattva bodha

VANDANĀ

Dr. Priyadarsṇa Jain

TEXT	TRANSLATION
Icchāmi Khamāasamaṇo	-I desire O *Ksamāśramaṇa*
Vāndiuṃ	-To bow
Jāvaṇijjāe	-In the best of my capacity
Nisihiyāe	-Giving up the sinful deeds
Aṇujāṇaha	-Please permit
Me Miuggahaṃ	-Me to do so
Nisihi	-Giving up inauspicious deeds
Aho kāyaṃ	-At both your feet
Kāyasamphāsaṃ	-I bow my head with folded hands
Khamaṇijjo	-Please forgive
Bhe kilāmo	-If I have hurt you
Appakilaṇtāṇaṃ	-Hope you do not suffer from any disease
Bahu Subheṇam	-Peace be on you
Bhe divaso	-O Lord! Has the day
Vaikkanto	-Gone by peacefully
Jattābhe	-Your spiritual journey
Javaṇijjam ca bhe	-Devoid of obstructions
Khāmemi Khamasāmaṇo!	-I beg pardon O noble one
Devasiyaṃ	-Related to the day
Vaikkammaṃ,	-My shortcomings
Āvassiyāe	-For essential duties
Padikkamami	-I give up
Khamāsamaṇāṇaṃ	-If I have disrespected you Virtous souls
Devasiyāe	-During the day
Āsāyaṇāe	-In any way
Tittisannayarāe	-Through 33 ways

Jam kinci	-Any one way
Micchāe	-Falsely
Maṇadukkadāe	-Through evil mind
Vayadukkadāe	-Through evil words
Kāyadukkadāe	-Through evil deeds
Kohāe	-Due to anger
Mānāe	-Due to conceit
Māyāe	-Due to deceit
Lohāe	-Due to greed
Savvakāliyāe	-All times
Savvamiccho vayarāe	-All false dispositions
Savvadhammāikkamanāe	-Giving up righteousness
Āsāyaṇae	-Hurt you
Jo me Devasio	-Related to the day
Aiyāro	-Any transgression
Kao	-I have committed
Tassa Khamāsamaṇo!	-That, O Virtuous one
Padikkamāmi	-I expiate
Nindāmi	-I criticize
Garihāmi	-Before the Guru I confess and expiate
Appāṇam	-Myself
Vosirāmi	-I separate from all sins.

Meaning

O! ***Ksamāśramaṇa*** ascetic, the compassionate and the forgiving one, I give up all sinful deeds and bow to you, I request you to grant me permission for the same. I fold my hands and bow down before you, while doing so, if I have been careless I beg your pardon. I hope your spiritual journey is smooth and the practice of self-restraint is unobstructed and your body, mind and speech are under your control and do not trouble you. If I have nurtured any evil thoughts, uttered any evil words, committed any evil deeds out of anger, conceit, deceit and greed in the past, I expiate for the same and detach my self from all sinful activities.

Explanation

Jainism is a religion of self-help and there is no compulsion of any regulation on any one. Who so ever desires to be spiritually evolved, on his own takes to the practices prescribed by the ***Jinas***. Firstly he takes the vow of equanimity, devotedly surrenders i.e. takes refuge in the emancipated souls i.e. ***Tīrthaṇkaras***, there upon the ***Guru*** i.e. spiritual guides and masters are venerated, because in the absence of the ***Tīrthaṇkara Paramātmans***, it is they who guide, teach, inspire, bless the aspirants to tread on the path of spirituality. Without a spiritual guide it is impossible to free one self from the wheel of transmigration, hence all spiritual, religious and ethical practices are under taken with their permission and under their guidance. Hence prior to commencing the ***Pratikramaṇa*** i.e. the ritual of expiation and regression, the spiritual adepts i.e. masters are venerated.

The epithet ***Kṣamāśramaṇa*** is inclusive of two words, ***Kṣamā*** and ***Śramaṇa i.e.*** meaning forgiveness and an ascetic respectively. One who practises the ten-fold ***Dharma*** viz. forgiveness, etc. one who is detached, one who exerts to conquer the senses and passions, one who exerts in austerities to annihilate the ***karmas***, who is equanimous in all adversities and prosperities and is efficient to preach the law of righteousness is a ***Śramaṇa***.

This lesson teaches the aspirant the way of venerating to the ascetics, so that they become worthy of treading on the path practised and preached by them. This is true devotion, surrender and obedience. By venerating one becomes humble and worthy of receiving more knowledge blessings. ***Vinaya*** i.e. humility is the root of the tree of righteousness which yields the fruit of emancipation, in its absence all practices are fruitless!

Vandanā or veneration is of three types viz. ***Jaghanya, Madhyama*** and ***Utkṛṣta***. When one meets the ascetics on the way he says ***Matthaeṇa Vandāmi***, i.e. I bow to you (whole heartedly with devotion). ***Madhyama Vandanā*** is done through the ***Tikkhutto patha*** i.e. ***Guru Vandanā***

sūtra and ***Utkrṣta Vandanā*** is done through the ***Icchāmi Khamāsamaṇo sūtra.***

Vandanā i.e. veneration signifies humility and it is also a type of austerity by which we can annihilate inauspicious status-determining ***karma*** (***Gotra karma***). Spiritual journey commences with ***Vinaya*** and ***Vandanā*** i.e. humility and veneration. Only through veneration we can rise to great heights and achieve the impossible.

-Lecturer, Dept. of Jainology, University of Madras, Chennai

क्षमायाचना

छद्मस्थता में त्रुटि स्वाभाविक है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए हमने भाद्रपद शुक्ला 5, सोमवार, 24.08.2009 को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवयोनि से विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की है। हम पूज्य आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द से अविनय-आशातना के लिए करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं, वहीं संघ-समाज के सभी भाई-बहनों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं।

क्षमाप्रार्थी

सुमेरसिंह बोथरा अध्यक्ष	ज्ञानेन्द्र बाफना कार्याध्यक्ष	नवरतन डागा महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

पी.एस. सुराणा अध्यक्ष	नवरतन भंसाली, आनन्द चौपड़ा कार्याध्यक्ष	प्रेमचन्द जैन मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

डॉ. मंजुला बम्ब अध्यक्ष	मधु सुराणा कार्याध्यक्ष	आशा गांग महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

कुशल गोटेवाला अध्यक्ष	बुधमल बोहरा, प्रमोद हीरावत कार्याध्यक्ष	महेन्द्र सुराणा महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

सुशीला बोहरा संयोजक	सुरेश चोरडिया सह संयोजक	राजेश कर्णावट सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

चंचलमल चोरडिया संयोजक		मोहनकौर जैन सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

विमला मेहता संयोजक	धर्मेश चौपड़ा सह संयोजक	सुभाष हुण्डीवाल सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर

धारावाहिक (क्रमशः 64)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

जम्बूकुमार ने जब मृत्यु और आधि-व्याधि से बचाए रखने की शर्त को नागरिक जन के समक्ष रखा, तो सभी असमर्थता प्रकट करते हुए उनके समक्ष नतमस्तक हो गए। नागरिकों से आज्ञा प्राप्त कर जम्बूकुमार, उनके परिवार व सम्बन्धीजन और प्रभव आदि पाँच सौ सत्ताईस लोगों ने सुधर्मा स्वामी के पास जाकर दीक्षित होने की भावना प्रकट की। सबको श्री सुधर्मा स्वामी ने मुनि पद की गुरुता का बोध करवाया और उस समयोचित देशना को सुनकर सबने पुनः अपने निश्चय को प्रकट किया। तब श्री सुधर्मा स्वामी ने सभी मुमुक्षुओं को यावज्जीवन पाँच महाव्रतरूप मुनि दीक्षा से दीक्षित कर दिया। इसके पश्चात् नवदीक्षित मुनियों एवं साध्वियों को इस प्रकार शिक्षा देते हुए कहा-

तुम सब यतना के साथ प्रवृत्ति करना। माया, मिथ्यात्व और निदान रूप शल्यों का सर्वथा परित्याग करना। मनोज्ञ-अमनोज्ञ विषयों पर राग-द्वेष मत करना। रूखा-सूखा, बचा-खुचा निर्दोष आहार लेना। आदर-सत्कार और पूजा-प्रतिष्ठा की अभिलाषा न करना। मन्त्र-तन्त्र या भविष्य-भाषण आदि कार्य न करना। लौकिक लाभ की प्राप्ति के लिए किसी गृहस्थ आदि की प्रशंसा न करना। कोई आहार-पानी न दे या अन्य योग्य वस्तु के लिए मना कर दे तो रुष्ट न होना। देने वाले पर अनुरक्त न होना, राग-द्वेष को अपने पास न फटकने देना। देव-दानव-मानव या तिर्यञ्च के द्वारा आए उपसर्गों को धैर्य के साथ सहन करना। विकथा न करना। कषाय से दूर रहना आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान को त्यागना। व्रतों में, समितियों और गुप्तियों में सदा दृढ़ रहना। आठ मदों का परित्याग करना, नौ ब्रह्मचर्य की बाड़ों का पालन करना। दस यति धर्मों की सदा आराधना करना। भिक्षु की ग्यारह प्रतिमाओं के पालन करने की चेष्टा करना। सदा आत्मा की निगरानी रखना। हृदय में कभी कुत्सित भाव उत्पन्न न होने देना। आत्मिक निर्बलता के कारण यदि

कभी स्खलना हो जाय तो तत्काल उसकी निन्दा-गर्हा करना, जिनवचन के अनुसार उसका प्रायश्चित्त लेना। शत्रु-मित्र पर समता भाव रखना।

जो साधु क्षणिक वैराग्य के वश होकर महाव्रत ग्रहण कर लेता है फिर मनचाहा व्यवहार करने लगता है वह पाप श्रमण कहलाता है। अतएव तुम पापश्रमण से बनने सदा बचते रहना। निद्राशील होना अर्थात् खा-पीकर सुख से सोए रहना, आचार्य, उपाध्याय और रत्नाधिक का विनय न करना, उन पर क्रोध करना, उन्हें सन्तुष्ट न रखना, षट्काय की रक्षा न करना, शय्या, संथारे आदि का बिना प्रतिलेखन और प्रमार्जन किए ही उपयोग करना, जल्दी-जल्दी अयतना से चलना, क्रोधशील होना, बिना यतना के प्रतिलेखन आदि करना, गुरु का तिरस्कार करना, मायाचार का सेवन करना, अधिक बातें करना, अभिमान करना, लोभी होना, इन्द्रियों और मन का निग्रह न करना, वाद-विवाद खड़ा करना, कलह- उपजना, चंचल होना, हंसी मज़ाक करना, जहाँ-तहाँ बैठ जाना, रजयुक्त पैरों से सो जाना, दूध-दही-घी-शहद आदि विगयों का बार-बार सेवन करना, तपस्या में अनुराग न रखना, सूर्यास्त हो जाने पर खाना, आचार्य का परित्याग कर स्वच्छन्द विचरना, एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में चला जाना, अपनी जाति के प्रति अनुराग रखना, गृहस्थ के घर बैठ जाना, इत्यादि पाप-श्रमण के लक्षण हैं। पाप-श्रमण अपना यह लोक और परलोक दोनों को बिगाड़ लेता है। अतएव इन दोषों का कभी आचरण न करना। परमार्थ में एकाग्रह, एक निष्ठ और तन्मय रहना।

प्रातःकाल और सायंकाल प्रतिक्रमण आदि आवश्यक क्रियाएँ निरन्तराय करना। प्रतिलेखन के समय का व्यंतिक्रम न करना। ज्ञान रूपी घोड़े पर सवार होकर, तप रूप तलवार को हाथ में लेकर, कर्म रूप रिपुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करना। प्रथम प्रहर में स्वाध्याय करना, दूसरे प्रहर में ध्यान करना, तीसरे प्रहर में गोचरी करना और चौथे में फिर आत्मा का ध्यान करना।

इस प्रकार चारित्र का पालन करने से असीम और अनन्त आनन्द के पात्र बन जाओगे।

सबने सुधर्मा स्वामी की शिक्षा अत्यन्त आदर के साथ श्रवण की, विनय के साथ शिक्षा को स्वीकार किया। अन्त में भक्ति के साथ उन्हें नमस्कार कर अपने को धन्य और कृतार्थ माना।

जम्बूकुमार अब दीक्षा धारण करके जम्बू स्वामी हो गए।

जम्बूस्वामी ने मुनि अवस्था में ज्ञान और चारित्र की सम्पूर्ण शक्ति लगाकर आराधना की। ज्ञान और चारित्र दोनों ही मुक्ति के मार्ग हैं अतएव उन्होंने दोनों की समान रूप से साधना करने में जरा भी कसर नहीं रखी। साथ ही कर्मों की निर्जरा हेतु उन्होंने तीव्रतर तपश्चरण का अनुष्ठान किया।

श्रमणोत्तम भगवान् महावीर का प्रवचन, जो आज हमें उपलब्ध है, प्रायः श्री जम्बूस्वामी के प्रश्नों और श्री सुधर्मा स्वामी के उत्तर रूप में है। जम्बूस्वामी ने अपनी जिज्ञासा की पूर्ति करने के साथ जगत् के जीवों का उपकार करने के अभिप्राय से यह प्रश्न पूछे थे। अतएव संसार पर जम्बू स्वामी का असीम और अमिट उपकार है।

जम्बू स्वामी सोलह वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम में रहे। फिर आठ पत्नियों को छोड़कर तथा निन्यानवें करोड़ मोहरों की धन-सम्पत्ति को तिनके की तरह त्यागकर मुनिव्रती बने। मुनिव्रतों का पालन करने से तथा तीव्र तपस्या के प्रभाव से आपको केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई। केवल ज्ञान की प्राप्ति होने पर लोक-अलोक, भूत, भविष्य तथा वर्तमान के समस्त पदार्थों को और समस्त पदार्थों की समस्त पर्यायों को एक साथ हस्तामलकवत् जानने लगे। आप महावीर भगवान् के निर्वाण से चवालीस वर्ष तक केवली पर्याय में विराजमान रहे। अस्सी वर्ष की आयु में आपने इस अशुचि, अनित्य और दुःख के मूल शरीर का सदा के लिए परित्याग कर दिया। अशरीर होकर सिद्ध, बुद्ध और विशुद्ध होकर लोक के अग्रभाग में विराजमान हुए।

जम्बू स्वामी इस अवसर्पिणी काल के अन्तिम केवली थे। उनके पश्चात् फिर कोई भी महापुरुष सिद्धि-लाभ करने में समर्थ नहीं हुए। यही नहीं, आपके मोक्षगमन के पश्चात् निम्नलिखित दस बोलों का विच्छेद हो गया, जो अभी तक कायम हैः-

(1) मनःपर्यव ज्ञान, (2) परमावधि ज्ञान, (3) पुलाक लब्धि, (4) आहारक शरीर, (5) केवल ज्ञान, (6) क्षायिक सम्यक्त्व, (7) जिनकल्प, (8) परिहार विशुद्धि चारित्र, (9) सूक्ष्म सम्पराय चारित्र और (10) यथाख्यात चारित्र।

इस प्रकार महामहिम जम्बूस्वामी इस अवसर्पिणी युग की अन्तिम ज्योति थे।

(समाप्त)

उपन्यास (7)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- किशनलाल ने क्रान्तिलाल को उसकी बेटी के साथ आलोक के सम्बन्ध के लिए मना करते हुए भूतकाल में उनके बीच रही प्रतिद्वन्द्विता का हवाला दिया। आलोक के इंग्लैण्ड जाकर अध्ययन करने की अनुमति के विषय में क्रान्तिलाल ने राय देनी चाही तो किशनलाल ने उनका अपमान कर दिया और क्रान्तिलाल उठकर चले गये। पिता-पुत्र में लम्बी बहस हुई, अन्त में किशनलाल ने आलोक के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। आलोक भी घर छोड़ कर चला गया। शान्ति सिसकियाँ भरती हुई रह गई। उधर किशनलाल के बड़े पुत्र विश्वास के घर छोड़ने के बाद......

मन में विचारों का तूफान लिये विश्वास और मीनाक्षी घर से बारह निकले, और टैक्सी लेकर, सीधे स्टेशन आ गये।

'आप क्यों मेरी खातिर, घर से बेघर हो रहे हैं। मुझे अपनी माँ के पास भेज दीजिए' – पति को चिन्तामग्न देखकर मीनाक्षी बोली।

'नहीं मीनाक्षी! अब मेरा और तेरा भाग्य अलग-अलग नहीं रहा है।'

'लेकिन, अब हम चलेंगे कहाँ?'

' जहाँ तकदीर ले जायेगी।'

'आप भी तकदीर पर भरोसा करते हैं?'

'हाँ, लेकिन तदबीर के पश्चात्।' मुस्कुराते हुए बोला।

मेरी तकदीर के कारण आपकी यह स्थिति हुई है'

'नहीं मीनाक्षी! इस स्थिति का कारण तो पिताजी की जिद्द है। मुझे नहीं मालूम था कि पिताजी इतने दकियानूसी विचारों के हैं। दो वर्ष बाद घर लौटा हूँ। पूरी बात सुनी नहीं। और घर से चले जाने को कह दिया। मुझे कोई चिन्ता नहीं है। मैं एक योग्य डॉक्टर हूँ। मैं अपने भाग्य को स्वयं बना लूँगा। केवल तुम्हारा सहारा चाहिए मुझे बस!'

मेरे ही कारण तो यह स्थिति हुई है। आगे कोई और विपत्ति आ पड़ी तो?'

नहीं मीनाक्षी! यह हमारे कर्मों का फल है। हो सकता है, हमारा भाग्य ही हमें पुकार रहा हो। हमें संघर्ष करके, अंधेरे को चीरकर ही तो जीवन में उजाला भरना

है। वर्तमान की अपेक्षा हमारा भविष्य ही अधिक बेहतर बने, इसी के लिये तो ये दिशाएं हमें मौन आमंत्रण दे रही हैं। इन संघर्षों को देखकर तुम विचलित मत हो जाना मीनाक्षी!'

'नहीं विश्वास! दुनियां की कोई ताकत मुझे तुमसे अलग नहीं कर सकती।'

'मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।'

'खैर! यह तो बताइये, इस समय हम चलेंगे कहाँ?'

बम्बई में हमारा एक मित्र है। हम सीधे उसी के पास चलेंगे।' यह कहकर उसने कलाई पर बंधी घड़ी पर दृष्टि डाली। और बोला- 'टिकिट की खिड़की खुल गई होगी मीनाक्षी! तुम जाकर के टिकिट ले आओ।'

'हाँ, हाँ, क्यों नहीं? 'लेडीज फर्स्ट' के कारण मुझे टिकट जल्दी मिल जायेगा।'

मुस्कुराती हुई मीनाक्षी, महिलाओं की कतार में खड़ी हो गई।

करीब पाँच मिनट की प्रतीक्षा के बाद, उसके हाथों में दोनों टिकट आ गये। उसने समीप खड़े हुए विश्वास को टिकट थमाकर कहा- 'लीजिए'।

'देखा, तुम्हारे साथ होने का कैसा लाभ मिला। वरना, अभी आधे घंटे तक धक्के खाने पड़ते मुझे। आओ गाड़ी खड़ी है स्टेशन पर!'

दोनों, अपने-अपने बैग उठाकर प्लेटफार्म पर आये और गाड़ी का एक डिब्बा खाली देखकर उसी में चढ़ गये।

यह डिब्बा पूरा खाली था। डिब्बे में किसी भी यात्री को न देखकर मीनाक्षी बोली- 'इस डिब्बे में तो कोई भी नहीं है। हम किसी दूसरे डिब्बे में क्यों न बैठ जायें।'

'कोई नहीं है तो क्या हुआ? जगह कैसे आराम से मिल गई। अभी, थोड़ी देर बाद देखना, लोग, मधु-मक्खियों की तरह टूट पड़ेंगे।'

विश्वास अपनी बात पूरी कह ही पाया था कि एक व्यक्ति ने अनायास वहाँ आकर, डिब्बे का दरवाजा बन्द कर दिया। फिर अपने हाथ में नंगा चाकू निकाल कर बोला- 'जो कुछ भी तुम्हारे पास है; मुझे दे दो। वरना यह चाकू.... ।'

मीनाक्षी, भयभीत होकर, विश्वास से चिपक कर खड़ी हो गई।

'जल्दी करो, वरना' - उस व्यक्ति ने कड़क आवाज में कहा।

'हमारे पास कुछ भी नहीं है।'

'वह बैग मुझे दे दो।'

'उसमें मेरे जरूरी कागजात हैं।'

'तब तो और भी अच्छी बात है।'

विश्वास ने बैग को उठाया, और अचानक बदमाश के मुँह पर दे मारा।

बदमाश के हाथ से चाकू उछल कर दूर जा गिरा। यह देखकर मीनाक्षी भी हरकत में आ गई। उसने अपने अध्ययन के साथ-साथ सीखे हुए 'जूडो-कराटे' की जरूरत वस्तुतः आज महसूस की।

उसने तेजी के साथ चीख करके, उछलते हुए, एक जोर की लात उसके जबड़े पर मारी। बदमाश, प्रहार की पीड़ा से कराहता हुआ, खड़ा-खड़ा एक ओर को लुढ़क कर गिर पड़ा।

संयोग से, जहाँ वह गिरा, वहाँ पर एक कील ऊपर निकली हुई थी। वही कील, उसके सिर में चुभ गई, तो खून की धारा बह निकली।

मीनाक्षी की चीख सुन करके, कई लोग डिब्बे के पास आ गए। स्टेशन की जी.आर.पी. चौकी का एक सब-इन्स्पेक्टर और कुछ सिपाही भी, तुरन्त वहाँ आ पहुँचे।

पुलिस को देखकर, विश्वास ने दरवाजा खोल दिया। क्षण भर में ही पुलिस के सिपाही डिब्बे में घुस गये।

विश्वास ने फर्श पर औंधे मुंह पड़े हुए बदमाश की ओर संकेत किया, तो पुलिस के दो सिपाहियों ने उस बदमाश को पकड़ लिया। और इन्स्पेक्टर के सामने ले आये।

पुलिस-इन्स्पेक्टर ने उसका चेहरा देखा, तो कड़ककर पूछा- 'तो आप हैं वह महाशय, जिन्होंने इन रेलों में अपना आतंक मचा रखा है।'

'जी.....जी.......।'

'सट-अप! उचक्का कहीं का।' इन्स्पेक्टर ने उसे जोर से डपटा। फिर सिपाहियों को आदेश देते हुए कहा 'इसके हाथों में हथकड़ियाँ लगा दो।'

तुरन्त, दो सिपाही हथकड़ियाँ लिये आगे आये, और उसे पहिना दीं।

'हम आपके बहुत आभारी हैं महाशय!' इन्स्पेक्टर ने विश्वास को सम्बोधित करते हुए कहा- इस बदमाश ने हमारी नाक में दम कर रखा था। इस पर रेल-विभाग ने पाँच हजार का पुरस्कार घोषित कर रखा था। आपने इसे पकड़वाया

है। इसलिए, आप मेरे साथ आयें और तुरन्त, नकद पुरस्कार ग्रहण करें।

'अरे श्रीमान् जी! इसमें हमने किया ही क्या है? अपने सिर पर आई बला तो हमें हटानी ही थी।'

'नहीं, यह बात नहीं है। आपका यही प्रयास तो प्रशंसनीय रहा। खैर! अब आइए मेरे साथ। आपका अधिक समय खराब नहीं होगा।'

विश्वास और मीनाक्षी, दोनों ही, अपना सामान उठाकर, डिब्बे से नीचे आ गये।

अब तक कई लोग वहाँ इक्ट्ठे हो चुके थे।

इन्सपेक्टर, विश्वास को लेकर स्टेशन मास्टर के कमरे में गया और उसे सारी घटना का विवरण बतलाकर, विश्वास को नकद पुरस्कार राशि देने का अनुरोध किया।

स्टेशन मास्टर ने तुरन्त, नकद पाँच हजार की राशि विश्वास को दी, और उसके हस्ताक्षर ले लिये।

पत्रकारों और फोटोग्राफरों को भी इस काण्ड की न जाने कहाँ से भनक लग गई। वे भी अब तक स्टेशन पर आ चुके थे, और विश्वास को तलाशते घूम रहे थे।

स्टेशन मास्टर के कमरे से बाहर निकलते ही ये सब उसे मिल गये। पत्रकारों ने तुरन्त उसका साक्षात्कार लिया, और फोटोग्राफरों ने उसके फोटों खीचें। तब कहीं उसे वहाँ से निकलने का मौका मिला।

अधिक भीड़ बढ़ते देखकर, इन्स्पेक्टर ने उसे हटाया, और विश्वास व मीनाक्षी को लेकर चलने ही वाला था, तब तक स्टेशन मास्टर ने कहा- 'आप लोगों के इन्तजार में ट्रेन खड़ी हुई है। कृपया उधर ही चलें आप।'

स्टेशन मास्टर और पुलिस इन्सपेक्टर के साथ, वे दोनों पुनः उसी डिब्बे में आये, और खाली स्थान देखकर बैठ गये।

अब तक डिब्बे में भी काफी लोग बैठ चुके थे। प्रशंसा और उत्सुकता से भरी उन सबकी आँखें, विश्वास और मीनाक्षी के चेहरों पर टिक कर रह गई।

अब, स्टेशन मास्टर ने संकेत किया, तो गाड़ी, एक हल्के से झटके के साथ हिली, और कुछ ही पलों में प्लेटफार्म को पीछे छोड़ती हुई तेजी से भागने लगी।

क्रमशः

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 50)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- समुद्घात किसे कहते हैं?

समाधान- समुद्घात में तीन शब्द हैं- सम्+उद्+घात। सम् का अर्थ है- एकीभाव पूर्वक, उद् का अर्थ है- प्रबलता से, घात का अर्थ है- घात करना।

अर्थात् एकाग्रतापूर्वक प्रबलता के साथ घात करना। दूसरे शब्दों में वेदना आदि के साथ तीव्र रूप से एकीभूत हो जाना।

तात्पर्य यह है कि वेदना आदि समुद्घात के समय आत्मा वेदनादि रूप में परिणत हो जाता है, उसे अन्य कोई भान नहीं रहता।

जिज्ञासा- समुद्घात में जीव क्या करता है?

समाधान- जब जीव वेदनादि समुद्घातों में परिणत होता है, तब कालान्तर में अनुभव करने योग्य वेदनीय आदि कर्मों के दलिकों को उदीरणा करण के द्वारा खींचकर, उदयावलिका में लाकर, उनका अनुभव करके उनकी निर्जरा कर डालता है, अर्थात् आत्मप्रदेशों से उन कर्मों को अलग कर देता है, यही घात की प्रबलता है।

जिज्ञासा- समुद्घात कितने प्रकार के होते हैं?

समाधान- समुद्घात सात प्रकार के होते हैं- 1. वेदना, 2. कषाय, 3. मारणान्तिक, 4. वैक्रिय, 5. तैजस, 6. आहारक और 7. केवली समुद्घात।

जिज्ञासा- कौनसा समुद्घात किस कर्म के आश्रित है?

समाधान- 1. वेदना समुद्घात असातावेदनीय कर्म के आश्रित।

2. कषाय समुद्घात चारित्र मोहनीय के आश्रित।

3. मारणान्तिक समुद्घात आयुष्य कर्म के आश्रित।

4. वैक्रिय समुद्घात वैक्रिय शरीर नामकर्म के आश्रित।

5. तैजस समुद्घात तैजस शरीर नामकर्म के आश्रित।

6. आहारक समुद्घात आहारक शरीर नामकर्म के आश्रित।

7. केवलिसमुद्घात साता-असाता वेदनीय, शुभ-अशुभ नाम और उच्च-नीच गोत्र कर्म के आश्रित है।

जिज्ञासा- किन-किन जीवों में कौन-कौन से समुद्घात पाये जाते हैं?

समाधान- चार स्थावर में (वायुकाय को छोड़कर), तीन विकलेन्द्रिय में, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में, असन्नी मनुष्य में, युगलिक तिर्यञ्च व युगलिक मनुष्य के पर्याप्तकों में, इन सभी में प्रथम तीन समुद्घात-वेदना, कषाय एवं मारणान्तिक पाये जाते हैं। युगलिकों के अपर्याप्तकों में प्रथम दो समुद्घात ही होते हैं। नवग्रैवेयक तथा पाँच अनुत्तर विमान के देवों में वैक्रिय व तैजस समुद्घात करने की शक्ति होते हुए भी वे ये दोनों समुद्घात करते ही नहीं हैं। अतः इन दोनों देवों में भी प्रथम तीन समुद्घात प्राप्त होते हैं।

वायुकायिक जीवों में प्रथम चार समुद्घात होते हैं। वायुकायिक में भी बादर पर्याप्त वायुकायिक जीवों में ही चार समुद्घात हैं, शेष वायुकायिक जीवों में तो प्रथम तीन समुद्घात ही मिलते हैं। कर्मभूमिज सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के पर्याप्त जीवों में प्रथम पाँच समुद्घात, इनके अपर्याप्त जीवों में प्रथम तीन समुद्घात होते हैं। कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य के पर्याप्त में सातों समुद्घात तथा अपर्याप्त में प्रथम तीन समुद्घात होते हैं।

नारकी के पर्याप्तकों में प्रथम चार समुद्घात तथा अपर्याप्तकों में प्रथम दो समुद्घात होते हैं। देवों के पर्याप्तकों में (नवग्रैवेयक व पाँच अनुत्तर विमान को छोड़कर) प्रथम पाँच समुद्घात तथा अपर्याप्तकों में प्रथम दो समुद्घात होते हैं।

(क्रमशः)

-रजिस्ट्रार- अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

जीवन-व्यवहार

संभाषण में हो मृदुवाणी

श्री देवेन्द्र नाथ मोदी

वाणी वस्तुतः बोलने-सुनने के समग्र और संपूर्ण व्यवहार की कला है। अन्तर के भावों को एक दूसरे तक पहुँचाने का एक बहुत बड़ा माध्यम वाणी ही है। मृदुवाणी और व्यवहार का मानव जीवन में विशेष महत्त्व है। मनुष्य अपनी मृदुवाणी से परायों को अपना बना लेता है तथा कटुवचनों का प्रयोग कर अपनों को भी पराया कर देता है। मृदु संभाषण के कुछ सामान्य सूत्र इस प्रकार हैं-

1. बोलने हेतु उचित समय की प्रतीक्षा करें।
2. सोच-विचार कर बोलें।
3. बात करते हुए दूसरे व्यक्तियों के मध्य न बोलें, बोलें भी तो अनुमति लेकर।
4. अपनी बात कहने से पूर्व दूसरे की मनः स्थिति भांप लें।
5. कम बोलें और तभी बोलें, जब दूसरा सुनने को तैयार हो।
6. धैर्य पूर्वक दूसरे की बात भी सुनें, फिर जो कुछ कहना हो, कहें।
7. दूसरे को अपनी बात पूरी करने का अवसर दें।
8. आदर से एवं धीरे बोलें तथा वाणी में आवेश न लाएँ।
9. बहस में न उलझें एवं प्रति-प्रश्न न करें।
10. एक ही बात बार-बार न कहें एवं बिना पूछे सुझाव भी न दें।
11. अन्यायपूर्ण बात न कहें।
12. मिथ्याभाषण (झूठ) न करें।
13. दूसरों को अपशब्द न कहें एवं व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग न करें।
14. तकिया कलाम की आदत से बचें।
15. अशिष्ट लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग न करें।
16. अहंकारपूर्ण वाणी का प्रयोग न करें।
17. बातचीत के समय मुख-मुद्रा का ध्यान रखें।
18. भाषा की शुद्धता और वाक्य-रचना का ध्यान रखें।
19. दूसरों की निंदा न करें, बल्कि प्रशंसा करें।
20. आत्म प्रशंसा न करें।
21. दूसरों के दुःख में सहानुभूति और सुख में प्रसन्नता व्यक्त करें।

अन्त में-

"शब्द सरीखा धन नहीं, जो कोई जाणै बोल।
हीरा तो धन से मिले, शब्द मिले ना मोल।।"

-5-A/1, सुभाष नगर, पालरोड़, जोधपुर (राज.)

सामान्य-ज्ञान

क्या आप जानते हैं?

श्री सुरेशचन्द थींग

- महाराणा प्रताप जब संकट में थे तब एक जैन मुनि के उपदेशानुसार उन्होंने विधिपूर्वक 23वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ की उपासना की थी और वे संकट-मुक्त हुए थे।
- लॉर्ड एटनबरो की ऑस्कर विजेता फिल्म 'गाँधी' की भूमिका निर्वहन करने वाले अभिनेता बेन किंग्सले ने अपने अभिनय को प्रभावशाली व जानदार बनाने के लिए मांस-मदिरा का त्याग कर दिया था।
- नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित दलाई लामा अपनी आत्मकथा 'आजाद शरणार्थी' में लिखते हैं कि तिब्बत प्रवास के दौरान वे बूचड़खाने में ले जाते पशुओं को कसाइयों से छुड़वा लिया करते थे। इससे उनको अपार खुशी मिलती थी।
- पश्चिमी तिब्बती नगर ढींगरी में पेंपा नामक एक व्यक्ति दलाई लामा की दीर्घायु की कामना के लिए बड़ी संख्या में भेड़-बकरियों को खदीदकर उन्हें बूचड़खाने में जाने से बचाया करता था।
- वर्ष 2007 के नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता संयुक्त राष्ट्र के इंटरगवर्नमेंटल पेनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आई.पी.सी.सी.) के अध्यक्ष राजेन्द्र पचौरी पक्के शाकाहारी हैं। इक्कीस पुस्तकों के लेखक पचौरी का मानना है कि मांसाहार से तौबा करना जरूरी है। क्योंकि मांस उत्पादन से जलवायु को खासा नुकसान पहुँचता है। (स्रोतः राजस्थान पत्रिका, उदयपुर 15 अक्टूबर, 2007, पृ. 13)
- समाजसेवी बाबा आमटे फूलों से बनी माला कभी नहीं पहनते थे। उनका मानना था कि किसी भी तरह के स्वागत या अभिनन्दन के लिए फूलों को तोड़ना बिल्कुल भी उचित नहीं है। (स्रोत : दैनिक भास्कर-मधुरिमा 3 जून, 2009)
- भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में राजस्थान से प्रथम स्वतंत्रता सेनानी और शहीद होने वाला व्यक्ति एक दानवीर जैन श्रावक था। उस वीर श्रावक का नाम है- अमरचन्द बांठिया।
- भारतीय अन्तरिक्ष विज्ञान के जनक वैज्ञानिक विक्रम साराभाई जैन धर्मावलम्बी थे। साराभाई पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के गुरु थे। डॉ. कलाम उन्हें 'विज्ञान जगत का गांधी' मानते हैं।

-बम्बोरा-313706, उदयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

परिवारोत्कर्ष के सूत्र

श्रीमती उमरावदेवी धींग

वर्तमान में अनेकानेक परिवार क्लेश, कलह, अप्रेम तथा विघटन के सन्ताप से त्रस्त हैं। प्यार, समता, सहकार, आत्मीयता जैसे जीवन मूल्य दिन-प्रतिदिन न्यून होते जा रहे हैं। 'सत्त्वेषु मैत्रीं', 'मित्ती मे सव्वभूएसु' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे शाश्वत स्वरों की दुहाई देने वाले अपने ही छोटे से परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम एवं शान्ति से नहीं रह सकें तो हृदय को गहरी पीड़ा होती है। यदि व्यक्ति स्वयं के प्रति जागरूक व दूसरों के दृष्टिकोण से परिचित रहे और प्रत्येक व्यवहार सोच-समझकर करे तो खटपट व टकराहट की स्थिति पैदा नहीं होगी।

परिवार में नारी की अहम् भूमिका होती है। परिवार का उत्कर्ष-अपकर्ष, उन्नति-अवनति बहुत कुछ नारी पर निर्भर है। नारी की कृपा से अनेक परिवार टूटने-बिखरने से बचे, जुड़े व संगठित रहे/हुए हैं। इसके विपरीत कई परिवार उसके कोप-कलह से बुरी तरह शिकार हो खण्ड-खण्ड हो गये। जिस परिवार में नारी व्यावहारिक सूझबूझ से युक्त, प्रपंचों से मुक्त और कर्तव्यपरायण होती है, उस परिवार की सर्वांगीण प्रगति का चक्र निरन्तर गतिमान रहता है।

परिवार उत्कर्ष का प्रथम सूत्र है - समता। समता के अन्तर्गत समभाव, सहनशीलता, क्षमा, तितिक्षा, धैर्य आदि सद्गुण समाविष्ट रहते हैं। परिवार में भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले व्यक्ति होते हैं। सहनशील व्यक्ति सबके भले-बुरे, खट्टे-मीठे व्यवहार को पचा लेते हैं। इस सम्बन्ध में महिलाओं को अधिक जिम्मेदारीपूर्ण योगदान करना होता है। असहिष्णुता से पारिवारिक प्यार का निर्मल निर्झर अस्वच्छ व मलिन हो जाता है। सभी सदस्यों के प्रति समभावपूर्ण एवं निष्पक्ष रवैया आपसी प्रेम को प्रगाढ़ व स्थायी बनाता है। 'मानव मात्र भूल का पात्र है' के अनुसार कभी कोई गलती कर बैठे तो उसे तूल न देकर क्षमा किया जाना चाहिये। क्षमा का स्वस्थ आदान-प्रदान भूलों को भूलने में, गलतियों को तिरोहित करने में एवं त्रुटियों के संशोधन में अत्यन्त सहायक होता है। वस्तुतः जहाँ समता होती है, वहाँ क्रोध, वैर, मनमुटाव, तनाव तथा अशान्ति की स्थिति ही पैदा नहीं होती है।

पारिवारिक उत्कर्ष के लिए दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है- वाणीसंयम। कटु, कर्कश, मर्मभेदी, व्यंग्यात्मक, असत्य तथा अविचारित वाणी से कलह/झगड़े की जड़ सिंचित होती है। हर परिस्थिति में हित, मित, मधुर वचनों का प्रयोग करके कुलीनता और शालीनता का परिचय देना चाहिये। अभ्याख्यान, पैशुन्य, पर-परिवाद अथवा निन्दा-विकथा तथा चुगली से सबको सदा सर्वथा दूर रहना चाहिये। इसके लिए भाषा समिति तथा वचन गुप्ति को साधना चाहिये। मृदुभाषी, मितभाषी और सत्यभाषी सबको अपना बना लेता है।

ईर्ष्या की वृत्ति भी पारिवारिक वातावरण को कलुषित एवं खट्टा बना देती है। इसलिए परिवार के समग्र हित के लिए तीसरी बात है- सबकी प्रगति-समृद्धि में प्रसन्न होना तथा सहायक बनना। कहा जाता है कि महिलाओं में मत्सर-भाव अधिक होता है। लेकिन महिलाओं ने ही सेवा और सहयोग से इस कथन को झुठलाया है। जिस घर में ईर्ष्या जैसी नकारात्मक भावनाएँ नहीं होती हैं, वहाँ सुख-समृद्धि का निवास होता है।

अन्तिम किन्तु महत्त्वपूर्ण सूत्र है- धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण। आध्यात्मिक साधनाएँ बाह्य-आन्तरिक व्यक्तित्व को परिष्कृत करती हैं। ऐसी सामूहिक और व्यक्तिगत साधनाएँ पारिवारिक वातावरण को सकारात्मक बनाती हैं तथा पूरे कुटुम्ब को एक सूत्र में बांधे रख सकती हैं। समस्त अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में चित्त का सन्तुलन, अखिन्नता, आह्लादभाव, प्रमोदभाव, सहृदयता आदि धर्म-ध्यान के सुफल हैं। समूह में रहते हुए कई प्रकार की बातों को जानते हुए भी अनजान बने रहना पड़ता है। विवेक जीवन में कदम-कदम पर काम आता है। अविवेक तथा विचारहीनता को मिटाने के लिए स्वाध्याय जरूरी है।

परिवार में बड़ों के प्रति सम्मान, समान उम्र वालों के बीच मैत्री तथा छोटों के प्रति स्नेह भरा व्यवहार किया जाना चाहिये। जिस परिवार के सदस्यों के बीच पारस्परिक सामंजस्य, समन्वय व सहकार होता है, उस परिवार के सदस्य अधिक योग्य, व्यवहार कुशल, अपने-अपने क्षेत्र में निपुण और अग्रगामी होते हैं। परिवार रूपी उपवन सदैव खिलता-महकता रहे, इसके लिए सबकी अपनी-अपनी भूमिका अपेक्षित है।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

चिन्तन

ढलती संध्या का सूर्य

मोहनोत गणपत जैन

सुहावना स्वप्न अगर बीच में ही टूट जाए तो दुःख का एहसास होता है- जबकि सभी जानते हैं कि वह तो सिर्फ एक स्वप्न था, जिसका दायरा कल्पना तक ही सीमित होता है। मानव जीवन स्वप्न नहीं बल्कि यथार्थ का द्योतक है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त विभिन्न रिश्तों से जुड़ा, पारस्परिक विश्वास पर टिका, मोह-माया-ममता के जाल में उलझा, सुख-दुःख की निरन्तर घूमती धुरी पर अवस्थित किन्तु अपनी संतान के प्रति नितान्त सहृदय, उदार और अत्यधिक संवेदनशीलता का प्रतीक। अन्ततः खून का रिश्ता जो ठहरा, माता-पिता के प्यार की सौगात। उसके वयस्क (बालिग) होने तक तत्सम्बन्धित समस्त जिम्मेदारियों का निर्वाह माता-पिता का दायित्व होता है। अन्ततः संतान की शादी और आत्मनिर्भर होने की परिपक्वता.....बस। संतान के पोषण का एक सोपान सम्पन्न। तत्पश्चात् बाप-बेटे और सास-बहू के रिश्तों की सुदृढ़ता पारस्परिक व्यवहार, सहनशक्ति और सामंजस्य पर निर्भर होती है। अधिकांश सभ्य और शिक्षित परिवारों में रिश्तों का तालमेल नहीं बैठता, अतः बेटे-बहू अपना नीड़ (घर) अलग बसा लेते हैं। वर्तमान युगीन बदलती परम्पराओं, विचारधाराओं तथा स्तरीयता के अभिवर्धित सोपानों को ध्यान में रखते हुए अगर इसे उचित समझ लिया जाए तो अतिशयोक्ति नहीं। अन्ततः बेटे-बहू को भी 'स्वतन्त्रता' चाहिए, बन्धन नहीं।

युवा पुत्र के अधेड़ माता-पिता को संतान का अभाव तब सालता है जब वे शनैः शनै वृद्धावस्था की दहलीज पर पाँव रखते हैं। उस वक्त उन्हें भावी वृद्धावस्था की त्रासदायक स्थिति का आभास होने लगता है। उनके उम्र की सुबह-दोपहर संतान के प्रति दायित्वों के निर्वाह में ही तो व्यतीत हुई। उस दरम्यान कितनी कठिनाइयाँ झेली, कैसे-कैसे कष्ट सहे, कितना श्रम किया और किन-किन परिस्थितियों का सामना किया- कभी लेखा-जोखा नहीं किया। हृदय को आघात तो उस वक्त लगा जब शरीर वृद्ध-शिथिल और रुग्ण हुआ, आँखों की रोशनी मंद तथा हाथ-पाँव अशक्त से हो गए। ऐसी अवस्था में भी हमारा उत्तरदायित्व उठाने को कोई नहीं, परवरिश में कहाँ और क्या कमी रह गई?

वृद्धावस्था हो या प्रौढ़ावस्था अथवा युवावस्था-किसी भी स्थिति में अलगाव का दुःख टीसता ही है-एकाकीपन का अवसाद दिलोदिमाग पर कुहासे की तरह छाया रहता है। आज के युवावर्ग से एक यह प्रश्न है कि भारतीय संस्कृति के उत्तराधिकारी, अपने बुजुर्गों को कितना मान-सम्मान, स्नेह, साथ एवं आत्मीयता दे रहे हैं। किसी सीमा तक गिने-चुने कुछ युवा अगर ऐसा करते हैं तो क्या निःस्वार्थ भाव से या........? वृद्धजन अनुभवों के धनी होते हैं- उनसे कुछ सीखने, अनुभवों का लाभ हासिल करने के स्थान पर उन्हें अनुपयोगी, बेकार और अनचाहा बोझ समझने की भूल क्यों की जा रही है? जीवन के ढ़लान पर जब पारिवारिक आत्मीयता की आवश्यकता अधिक होती है, तब क्यों मिलती है उपेक्षा, त्रास, तिरस्कार और अपनों की दूरी?

शैशवावस्था में जब संतान अशक्त थी तो क्या माता-पिता ने उसे सशक्त बनाने में कमी रखी? रुग्णावस्था में दवाई की व्यवस्था करने से मुँह मोड़ा या सेवा नहीं की? समुचित शिक्षा की व्यवस्था कर आत्मनिर्भर बनाने में त्रुटि रही? युवा संतान को गृहस्थ बनाने की प्रक्रिया में कमी की? पुत्र-वधू के स्त्रियोचित सुख-दुःख, पीड़ा-कष्ट के वक्त क्या सास ने अपना कर्त्तव्य निर्वाह नहीं किया? अगर हाँ, तो क्या कारण है कि वृद्धजन अपनों से दूर, एकाकी जीवन व्यतीत करने की विवशता ढ़ो रहे हैं? माँ की ममता का आँचल संतान के ममत्व के अभाव में सूना है, सास अपनी ही बहू से थोड़ा-सा सम्मान पाने के लिए तरस रही है, दादा-दादी अपने पोते-पोती के स्नेहिल माहौल से वंचित हैं...ऐसा क्यों? वृद्धों को चाहिए, आत्मीयता का गरमाहटयुक्त अलाव, जो सिर्फ अपनों के साथ रहने से ही नसीब हो सकता है।

समाज के प्रतिष्ठित जातीयता के संगठनों के पदाधिकारी तथा रिश्तों की डोर में बंधे स्वजनों/परिजनों को एहसास होना ही चाहिए कि आज के युग में बहुत से ऐसे प्रौढ़ और वृद्ध हैं, जिन्होंने अपने परिजनों के साथ रहकर भी इतनी दूरियाँ नापी हैं कि अब ऐसी दूरियाँ उनके लिए भले ही बाह्य दुःख का कारण न हो, मगर आन्तरिक कसक एवं आघात देती ही हैं। वस्तुतः ऊपर से हँसने वाला व्यक्ति अन्दर से रोता हुआ भी हो सकता है, क्या यही है उम्र का अन्तिम पड़ाव? ढ़लती संध्या? जहाँ खून के रिश्ते भी पराये हो जाते हैं।

-द्वारा- 'आस्था' (वरिष्ठ नागरिक सद
दिग्विजय नगर, खेमे के कुँए के पास, पाल रोड़, जोधपुर- 342003(

बाल-स्तम्भ

करकंडु मुनि

श्री जशकरण डागा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अक्टूम्बर 2009 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

संसारी आत्माएँ जो कर्म क्षय कर केवलज्ञानी होकर मोक्ष को प्राप्त होते हैं, उनके पन्द्रह प्रकार कहे गए हैं। उनमें एक प्रकार 'प्रत्येक बुद्ध' है। इस काल में भरत क्षेत्र में चार प्रत्येक बुद्ध होने का उल्लेख मिलता है, यथा- (1) नमि राजर्षि, (2) करकंडु, (3) द्विमुख एवं (4) नग्गति।

इन चारों ने ही प्रत्येक बुद्ध होने का निमित्त पाकर मुनि दीक्षा ग्रहण की तथा सम्यग्ज्ञान पूर्वक चारित्र की साधना करते हुए कर्मक्षय कर सिद्ध गति प्राप्त की। यहाँ पर करकंडु के विषय में जानकारी दी जा रही है।

करकंडु मुनि दधिवाहन और महासती पद्मावती (जिसका नाम सोलह सतियों में प्रसिद्ध है) के पुत्र थे। किन्तु 'कर्मणो गहना गतिः' के अनुसार इनका लालन-पालन एक चाण्डाल के यहाँ हुआ था। अशुभकर्मों के उदय से ऐसी स्थितियाँ बन जाती हैं। करकंडु के जीवन में जो घटना घटित हुई वह इस प्रकार है- एक बार पद्मावती वनक्रीड़ा के लिए राजा दधिवाहन के साथ हाथी पर सवार होकर निकली। बसंत ऋतु थी। वन में फूलों की सुगन्ध से हाथी मदोन्मत्त हो भाग छूटा। राजा तो मार्ग में आए एक वृक्ष की डाल पकड़ कर उससे लटक गया, किन्तु रानी गर्भवती होने के कारण हाथी पर ही बैठी रह गई। हाथी एक जलाशय पर पानी पीने को

रुका तो रानी भी एक वृक्ष की डाल के सहारे से नीचे उतर गई, किन्तु रानी अकेली रह गई थी। भयावह जंगल में वह मार्ग तलाश करती हुई एक नगर में आ पहुँची। वहाँ वह साध्वियों के उपाश्रय में पहुँची तथा उनसे प्रेरित हो, उनके पास दीक्षित हो गई। कुछ दिनों बाद साध्वियों को उसके गर्भवती होने का पता लगा, तो सभी ने उसे गर्भ छिपाने का उपालम्भ दिया। पर अब क्या हो सकता था? पद्मावती ने गर्भ का अन्य साध्वियों के सहयोग से गुप्त रीति से पालन किया, जिससे धर्म की बदनामी न हो। गर्भकाल पूर्ण होने पर बालक का जन्म हुआ, जिसे पद्मावती ने श्मशान में एक स्थान पर रख दिया तथा स्वयं निकटस्थ छिपकर बैठ गई। थोड़ी देर में एक चाण्डाल उधर आया और वहाँ एक सुन्दर बालक को पड़ा देख उसे अपने घर ले गया। पद्मावती ने यह विचार किया कि बालक का पालन-पोषण हो जायेगा, वापस उपाश्रय लौट आई। चाण्डाल ने उस बालक का नाम 'करकंडु' रखा और उसके अन्य कोई संतान न होने से उसका पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से किया। करकंडु एक बार श्मशान में पहरा दे रहा था। तभी दो भिक्षु उधर से निकले। उनमें से एक ने कहा-"पास वाली झाड़ी में सात गांठ वाली एक लकड़ी है। यह लकड़ी जिसे मिलेगी उसे राज्य मिलेगा।" भिक्षु का यह कथन करकंडु ने तथा वहाँ से जा रहे है एक ब्राह्मण ने सुना। वे दोनों ही उस लकड़ी को लेने दौड़े और दोनों उस लकड़ी को एक साथ पकड़ कर झगड़ने लगे। अन्ततः वे राजा दधिवाहन के पास पहुँचे। राजा को चाण्डाल के लड़के की विचक्षणता और तेजस्विता देखकर आश्चर्य हुआ। राजा ने यह कहकर कि यह लकड़ी श्मशान में पैदा होने के कारण, करकंडु का इस पर हक है, वह लकड़ी करकंडु को दिलवा दी। करकंडु को यह भी आदेश दिया कि जब तुम्हें राज्य प्राप्त हो जाय, तो एक गाँव इस ब्राह्मण को भी दे देना।

एक बार करकंडु लकड़ी लेकर कंचनपुर की ओर जा रहा था। तब कलिंग देश के राजा का देहावसान हो जाने से एवं उसके कोई संतान न होने से, एक हथिनी की सूँड में पुष्पहार डालकर यह निर्णय लिया गया था कि हथिनी जिसे भी यह पुष्पहार पहना देगी, वही राजा का उत्तराधिकारी

होगा। करकंडु के अतिशय पुण्योदय से हथिनी ने उसी को वह पुष्पहार पहना दिया और वह कंचनपुर सहित पूरे कंलिग देश का राजा बन गया। जब उस ब्राह्मण को ज्ञात हुआ कि करकंडु राजा बन गया है, तो वह एक गांव उससे मांगने आया। करकंडु ने राजा दधिवाहन को पत्र लिख दिया कि इस ब्राह्मण को, जो तुम्हारे राज्य में रहता है, एक गांव जागीरी में दे दिया जाए। राजा दधिवाहन ने पत्र पढ़कर विचार किया कि करकंडु मेरे पर आदेश चलाने वाला कौन होता है? उसने क्रोध में आकर ब्राह्मण से कह दिया-"जाओ करकंडु से कह दो कि राजा दधिवाहन तुम्हारा राज्य छीनकर ब्राह्मण को गाँव देंगे। अन्ततः राजा करकंडु एवं राजा दधिवाहन युद्ध के लिए तत्पर हुए। उस समय संयोग से साध्वी पद्मावती को युद्ध का पता चला तो यह विचार कर कि युद्ध में हजारों मनुष्य मारे जायेंगे, उसने रोकने की योजना बनाई। वह पहले राजा करकंडु के पास पहुँची, स्वयं को उसकी माता एवं राजा दधिवाहन को उसका पिता बताकर पूर्व वृतान्त से अवगत कराया। यह सब जानकर करकंडु बड़ा प्रसन्न हुआ। तत्पश्चात् साध्वी पद्मावती दधिवाहन के पास पहुँची, अपना परिचय बता करकंडु को उनका पुत्र होने की हकीकत बताई। दधिवाहन को भी सारी घटना जानकर बड़ा आनन्द हुआ। युद्ध रोक दिया गया तथा पिता पुत्र दोनों का मिलन हुआ। करकंडु ने पिता के चरण स्पर्श किए तो पिता ने उसे छाती से लगा दिया। साध्वी पद्मावती के सद् प्रयत्न से घोर हिंसा टल गई तथा जन्म से बिछुड़े पिता-पुत्र मिल गए। यह तो करकंडु के जन्म से राजा होने तक की संक्षिप्त कथा है।

प्रत्येक बुद्ध होने की घटना :- राजा करकंडु की पशुशाला में एक अत्यन्त सुन्दर, सुडौल, स्वस्थ एवं बलवान बैल था, जो राजा को विशेष प्रिय था। किन्तु काल प्रवाह से कुछ वर्षों पश्चात् वहीं बैल अतिरुग्ण हो अशक्त हो गया। उसके पास कोई जाना भी पसन्द नहीं करता था। वह दर्द से तड़पता रहता। एक बार राजा पशुशाला में आए और उस बैल की दशा देखी, तो वे बड़े दुःखी हो गए। वे विचारने लगे क्या रोग, बुढ़ापा और मृत्यु सबको प्राप्त होते हैं? क्या मेरी भी यही अवस्था होने वाली है? इस

पर गंभीर चिन्तन करते-करते उन्हें प्रभु की यह वाणी स्मरण में आयी-

"जरा मरण-वेगेण, बुज्झमाणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं।।"

-उत्तराध्ययन सूत्र 23/68

अर्थात् बुढ़ापा एवं मरण रूप जल के वेग में डूबते हुए प्राणियों के लिए एक मात्र धर्म द्वीप प्रतिष्ठित है, वही उत्तम गति प्रदान करने वाला और सच्चा शरणभूत है।

संसार की अनित्यता, परिवर्तनशीलता एवं शरीर की विनाशशीलता का विचार करते-करते उन्हें प्रतिबोध प्राप्त हो गया। वे राज्य सुख से विरक्त हो गए तथा प्रव्रज्या अंगीकार कर मुनि बन गए। वे अब भोगी से योगी बन गए। शुद्ध-संयम का आराधन कर तप से कर्मों का क्षय करते हुए क्षपक श्रेणी पर आरोहण कर अन्त में उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। तदनन्तर आयुष्य पूर्णकर सिद्ध बुद्ध मुक्त हुए। इस प्रकार वे बैल के निमित्त से प्रतिबोधित हो, सिद्ध होने से, प्रत्येकबुद्ध सिद्ध कहलाए। उन्होंने चतुर्विध तीर्थ की स्थापना नहीं की थी, अतः वे तीर्थंकर नहीं थे तथा वे किसी के पास दीक्षा ग्रहण किए बिना स्वयं बोधि को प्राप्त हुए इसलिए प्रत्येक बुद्ध कहलाए।

-डागा सदन, संघपुरा, टोंक-304001 (राज.)

प्रश्न :

1. प्रत्येक बुद्ध की विशेषताएँ लिखिए।
2. सिद्ध के पन्द्रह प्रकार कौनसे हैं?
3. करकंडु का भाग्योदय कैसे हुआ?
4. महासती पद्मावती ने युद्ध को रोकने में क्या युक्ति अपनायी?
5. क्या आपने किसी की लड़ाई को रोका है? यदि रोका है तो कैसे?
6. अर्थ बताइये- कर्मोदय, उपालम्भ, उत्तराधिकारी, जागिरी, पशुशाला, प्रव्रज्या।
7. करकंडु के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

कैसे जिएँ क्रोध एवं चिन्तामुक्त जीवन - श्री चन्द्रप्रभ, ***प्रकाशक*** - श्री जितयशा फाउण्डेशन, बी-7, अनुकम्पा द्वितीय, एम.आई.रोड़. जयपुर (राज.) ***पृष्ठ***-112, ***मूल्य*** - 20 रुपये, ***संस्करण***- सन् 2008

मनुष्य चाहते हुए भी क्रोध एवं चिन्ता से मुक्त जीवन नहीं जी पाता है। इसका क्या कारण है? क्यों वह अचानक तनावग्रस्त हो जाता है? क्रोध एवं चिन्ता से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है? इन प्रश्नों का सरल, सुबोध रीति से समाधान करने के साथ श्री चन्द्रप्रभ की इस पुस्तक में शान्ति की प्राप्ति, व्यवहार की प्रशस्यता, बच्चों की सम्यक् परवरिश, परिवार की खुशहाली एवं आहार से आरोग्य के सूत्र भी अलग-अलग लेखों में संजोये गए हैं। पुस्तक को पढ़ना शुरू करने पर छोड़ना मुश्किल है। विषय वस्तु के विश्लेषण, सटीक उदाहरणों के प्रयोग एवं प्रस्तुति की प्रवाहशीलता इसकी विशेषता है। हाँ, पुस्तक में ईश्वर कर्तृव्य को भी स्वीकार किया गया है, जो जैन मान्यता से संगत नहीं है।

युवा संवारे यौवन- श्री पदमचन्द गांधी, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन : 0141-2575997 ***पृष्ठ***-8+124, ***मूल्य***- 20/- रुपये, ***संस्करण***- सन् 2009।

आज युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित है। क्या करणीय है एवं क्या अकरणीय है, इसका उसे सम्यक् बोध नहीं। 'युवा संवारे यौवन' पुस्तक में युवामन को पहचान कर, उसकी प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है तथा उसे आध्यात्मिक धार्मिक मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्ता से परिचित कराया गया है। पुस्तक को पढ़ने पर युवा मन को अवश्य ही एक सकारात्मक दिशा मिलेगी, जो उसे भटकाव से बचाएगी। पुस्तक में 24 लेख हैं, जिनमें से कई लेख जिनवाणी पत्रिका एवं अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। श्री पदमचन्द गांधी एक उत्साही लेखक हैं।

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (22) का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई, 2009 अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (22) में 242 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अप्रेल से जून 2009 के अंकों पर आधारित थी। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	कल्पना धाकड़-गुड़गॉव	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	गौरव जैन-कोटा	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	अजीतराज जैन-जोधपुर	(50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

मुकेश जैन-जलगॉव	(50)	पुष्पा हस्तीमल गोलेछा-ब्यावर	(50)
पुष्पा मेहता-पीपाड़	(50)	लीला सुभाषचंद लोढ़ा-नासिक	(50)
सुधा डागा-बीकानेर	(50)	अशोक बाबूलाल जैन-सूरत	(49)
पुखराज सेठिया-मसूदा	(49)	सुनिता मेहता-जोधपुर	(49)
शशि जैन गुगल्या-लश्कर	(49)	सुरेशकुमार मुणोत-भंडारा	(49)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- 1001/- रुपये	पारसमल रतनबोहरा-बालोद	(50)
द्वितीय पुरस्कार- 501/- रुपये	माधुरी जैन-बूंदी	(50)
तृतीय पुरस्कार- 251/- रुपये	सुनील जैन-मैसूर	(50)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये प्रत्येक

प्रकाश चंद पारख-धनारीकलां	(50)	श्रीमती रीना कोठारी-बालोद	(50)
शशिबाई रतनबोहरा-बालोद	(50)	संदीप जैन-जोधपुर	(50)
सारिका अंकित कुलोल-पुणे	(50)	सुनीता जैन-हिंडौन	(50)
डी.अनिल खाबिया-मैसूर	(50)	अभिषेक रतनबोहरा-बालोद	(50)
अभिलाषा मेहता-अजमेर	(50)	अनुजा कांकरिया-जलगांव	(50)

49 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- बाबुलाल रतनचंदजी जैन-जलगांव, बसन्त कु...

जैन–मसूदा, कंवलराज जी मेहता–जोधपुर, कमलाजी सेठिया–मसूदा, कल्पना मुणोत–भोपालगढ़, मोहिनी जी जैन–खींवसर, मैना बाफना–पालगॉव, किरणजी कुम्भट–जोधपुर, दिनेश सुराणा–मेड़ता, विपुल जैन–जोधपुर, निशा जी लुंकड़–कोटा, हेमराज जी सुराना–जयपुर, पारसमल जी कोठारी–ब्यावर, पदमा सुरेशजी मुणोत–भंड़ारा, पुष्पा प्रमोद जी मेहता–अजमेर, पुष्पा गजेन्द्र जी मेहता, पल्लवी बाफना–पालगॉव, प्रकाश चंद जी जैन–नाकोड़ा, श्री इन्दरचन्द गांधी–जोधपुर, श्री प्रवीण बरडिया–धुले, श्रीमती रूचिकाजी लुणावत–जोधपुर, श्रीमती कंचन डोसी–अजमेर, श्रीमती मंजुला जी छाजेड़–भीलवाड़ा, श्रीमती पुष्पा जी गांधी–जोधपुर, श्रीमती सरोज जी खाबिया–मैसूर, श्रीमती चंचलजी भण्डारी–जोधपुर, राकेश जैन–बूंदी, राहुल संजय बोरा–लासुर स्टेशन, राज जैन–दिल्ली, श्रुति जी जैन–पीपाड़, रतन लाल जी रांका–अजमेर, रेणु जी बोहरा–देहली, संगीताजी खाबिया–मैसूर, सरोज नाहर–दिल्ली, सौ. योगिता खिंवसरा–धूले, सौ. राजुल रमेश कोठारी–धुले, सौ. शोभा सागरमल कोठारी–धुले, सौ. सरला शांतिलाल कांकरिया–जलगांव, सौ. दर्शिका कवरलालजी टाटीया–जलगांव, सौ. अश्विनी आनंद जैन–जालना, सौ. अपना अजय जी रांका–जलगांव, सौ.कंचन बंशीलाल जी बंब–लासुर स्टेशन, सौ.मनिषाजी शिंगी, सौ.प्रमिला बाबुलालजी पोखरणा–धुलिया, सौ.शीतल जी बंब–लासुर, सौ.शारदाबाई जी मूथा–लासुर, सौ.सरोज पारसमलजी रूणवाल–धुलिया, सौ.सरला संजय बोरा–लासुर स्टेशन, सुमेर वैद–लवेरा, सुशीलाजी सेठिया–जोधपुर, सुनीता जी नवलखा–कोटा, तेजस सतीशजी जैन–धूले, जयसिंह जी छाजेड़–समदड़ी, ज्योति अशोक कोटेचा–बोदवड़, नोरतमलजी चंगेरिया–अजमेर, नवरती देवी–रतकूड़िया, नेणचन्दजी बाफना–जोधपुर, अनिल शाह–उज्जैन, आशा जी अग्रवाल–जयपुर, आशाजी जैन–लवेरा, गजराजजी सेठिया–लवेरा, लक्ष्मीलालजी सेठिया–जोधपुर, रूपल जैन–भीलवाड़ा, यश लुणावत–आचीणा, बसंती जैन–आचीणा, कविता पारख–बोरीवली, कोमल जैन–धनारीकलां, कु. कोमल पी. जैन–धुले, कु. हेमलता कोठारी–धुले, कु. अश्विनी जैन–धुले, कुनाल भंसाली–जोधपुर, मधुबाला लुणावत–आचीणा, मयूरी एस. जैन–धुले, ममता जैन–खण्डप, महेन्द्र लुणावत–पालदा, मीना मेहता–पीपाड़, मीना लुंकड़–दुन्दाड़ा, मनीष जैन–बैराथलकला, प्रियंका गांधी–जोधपुर, शिल्पा जैन–रतकूडियाँ, शिल्पा गॉधी–जोधपुर, स्मिति मेहता–जोधपुर, दिलीप पारख–धनारीकलां, विरक्ता गुंजन जैन–धनोप, जितेन्द्र भटेवरा–पुंणे, निकिता कांकरिया–नागौर, पंकज जैन–सोडाला, पंकज जैन–जोधपुर, पुष्पा छाजेड़–जोरपुरा, पूर्णिमा कोठारी–जोधपुर, पलाश जैन–नीमच, प्रवीण जैन–आचीणा, रश्मि राहुल झाम्बड़–औरगांबाद, श्रीमती शैली भण्डारी–बैंगलोर, श्रीमती चंचल गोलेछा–जयपुर, राजेश लुणावत–आचीणा, संदीप जैन–रतकूड़िया, संजना दरड़ा–गोटन, संजना लुणावत–इंदौर, सीभा जैन–मैसूर, सरोज जैन–धनारीकलां, सौ. मंगला सिंघवी– दिगरशिवर, सौ. दर्शना खिंवसरा–धुले, सौ. अनीता दुग्गड़–धुले, सौ. लता आंचलिया–धूले, स्वाति जैन– खण्डप, सुशीला सेठिया–धनारीकलां, सुनीता बोर्दिया–उदयपुर, सुनीता कूमट–ब्यावर, सुनीता लुणावत– आचीणा, सुनील लुणावत–आचीणा, उषा जैन–कोटा, वर्षा बाफना–जोधपुर, चैनराज संचेती–मसूदा, जीनल संकलेचा–दुन्दाड़ा, जेठमल दरड़ा–गोटन, नीलम कांकरिया–नागौर, नवरत्न ओस्तवाल–गोटन, नेहा जैन–बजरिया, अंकुश भण्डारी–कोटा, अंतिमा डोसी–ब्यावर, टीना सूर्या–जोधपुर, आयुषी जैन–आचीणा, आकाश बैद–जोधपुर, आर नरेन्द्र कांकरिया–चेन्नई, गर्व लुंकड़–कोटा, लीला जैन–इन्द्रगढ़मंडी।

48 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- कमला जी सिंघवी–जयपुर, कविताजी बैद–जोधपुर, मधुजी सूर्या–जोधपुर, मोहन लालजी जैन–अजमेर, मुकेश कुमारजी संचेती–मसूदा, मनीषजी सेठिया–जोधपुर, प्रियंका सेठिया–जोधपुर, शिवराजजी सेठिया–जोधपुर, दिलरूपचंदजी भण्डारी–जोधपुर, तिलोकचन्दजी जैन(लुणावत)–खींवसर, निर्मल कुमारजी सेठिया–जोधपुर, पंकज सेठिया–जोधपुर, श्री गणपतजी सुराणा–जोधपुर, श्रीमती मंजुजी सुराणा–जोधपुर, श्रीमती मीमाजी भण्डारी–जोधपुर, श्रीमती पुष्पा जैन–पाली, रौहिता जैन–उज्जैन,शांति लालजी सेठिया–लवेरा,समता भंसाली–पाली,सरिता पारख–तिंवरी, सौ. निर्मला भलगट–चंद्रपुर, सौ. उषा प्रवीण बरडिया–धुले, सौ. अरूणा पी. बैद–अमरावती, सौ.विमला मिश्रीलालजी खिवंसरा–धुले, सौ.हीरा रमेशजी कर्नावट–अहमदनगर, सुश्री अरुणा जैन–भण्डारा, सुशीला इ. रांका–जलगांव, उषा जी चौरड़िया–दिल्ली, डॉ.पी.सी. मुणोत–जयपुर, देवेन्द्रनाथ जी मोदी–जोधपुर, वीरेन्द्रजी कुम्भट(एड्वोकेट)–जोधपुर, ताराचन्दजी सेठिया–लेंवरा, नथमलजी कोठारी–बालौद, अनिल कुमारजी जैन–कोटा, आकांक्षा प्रजापति–कोटा, ललीता सेठिया–जोधपुर, कशिश जैन–कोटा, मंजू एन. बाफना–जलगॉव, मीरा छाजेड़–जोरावरपुरा, मीनाक्षी रमेश मुणोत–भंडारा, मोनिका देशलहरा–सिकंदराबाद, मोनिका जैन–सवाईमाधोपुर, मनसुखलाल जी गांधी–जोधपुर, मिथुन सेठिया–धनारीकलां, प्रियंका जैन–सवाईमाधोपुर, विशाल जैन–पाली, नितेश जैन–सवाईमाधोपुर, हर्षल कोटड़िया–शहादा, श्रीमती निधि कर्नावट–जोधपुर, राकेश जैन–मसूदा, रेखा जैन–पाली, शैली कुम्भट–जोधपुर, सौ. योगिता अमित जी कर्नावट–अहमदनगर, सौ. वनमाला विक्रम

राठौड़–धुलिया, सुमित डागा–जयपुर, सुशीला जैन–मैसूर, डॉ. नीतू ओस्तवाल–जोधपुर, दीक्षिता राखेचा–बुलढ़ाणा, दीप्ति भंडारी–जोधपुर, दीपक सेठिया–धनारीकलां, जयमाला जैन–सवाईमाधोपुर, नीलम जैन–अजमेर, नीलू जैन–लुधियाना, अमित अशोक जैन–धुले, आरती मूथा–अमरावती, अल्फा सुराणा–जोधपुर।

47 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–योगेश भण्डारी–सवाईमाधोपुर, इन्द्रा जी जैन–करोली, बसन्तीजी गांधी–चन्द्रपुर, ममता जी जैन–करोली, मुन्नालालजी बांदई–जोधपुर, मनोज कुमारजी सेठिया–लेंवरा, मन्जु जी कांस्टिया–कोलकाता, विजेन्द्र कुमारजी जैन–बरवाड़ा, चित्रा जी जैन–करोली, निकुंज भण्डारी– सवाई माधोपुर, पुष्पा देवी मुणोत–भटिण्डा, श्री स्वरूपचंदजी भंडारी–भंडारा, श्री गौतमचंदजी जैन–लेंवरा, श्रीमती प्रेमलताजी चौधरी–भीलवाड़ा, श्रीमती चन्द्रा जी हीरावत–जयपुर, श्रीमती अणची देवी धारीवाल–पाली, राजुल कांसवा–अजमेर, राजुल जी जैन–गंगापुर, शांतिलाल जी महात्मा–सेंती, शैला लुंकड़–उमरगांव, सौ. कल्पना राजेन्द्रजी कटारिया–धुलिया, सौ. विजया सुभाषजी लोढ़ा–धुले, सौ.कंचनबाई शांतिलाल जी कोचर–धूले, सुश्री सुनंदा सुभाषजी लोढ़ा–धुले, सुशील लुंकड़–उमरगांव, सुनीता जैन–सवाईमाधोपुर, दीपक जैन हरकचन्द जैन–अलीगढ़, नीरा जी भण्डारी–ब्यावर, अन्जुजी जैन–लेंवरा, गौरव जी जैन–जयपुर, गजेन्द्र जैन–हा.बो.सवाईमाधोपुर, बबीता सेठिया–धनारीकलां, कैलाश छाजेड़–जोरपुरा, प्रियंका गांधी–जोधपुर, दिव्या डागा–जयपुर, पल्केश कटारिया–पाली, रंजना चौधरी–भीलवाड़ा, रंजना जैन–कोटा, रक्षिता मेहता–जोधपुर, श्रीमती अमीता राजेश जैन–इंदौर, राखी लोढा–भायंदर, शुभेष दिलीप बोरा–चालीसगॉव, सत्येन्द्र जैन–बरवाड़ा, उज्ज्वला जैन–जोधपुर, जयमाला कांकरिया–पाली, अंकिता बरडिया–इंदौर, अमित बरड़िया–इंदौर, लता सुराणा–बीकानेर।

46 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–रूक्मणी देवी जैन–बरवाड़ा, बाबूलाल जी जैन–भरतपूर, मीना चोरडिया–चेन्नई, विजयलक्ष्मी मुणोत–जयपुर, हस्तीमलजी मादरेचा–भीलवाड़ा, पारसचंद जी जैन–भरतपुर, श्रीमती विद्या सिंघवी–बदनावर, श्रीमती निर्मला जी गादिया–आगरा, श्रीमती रीमाजी जैन–लुधियाना, श्रीमती ललिताजी लुणावत–जोधपुर, रोहिणी शालभद्र जैन–उज्जैन, सुखराज जी दरड़ा–जोधपुर, सुरेशचंद जी जैन–खेरली, चुकी देवी जी दरड़ा–जोधपुर, आर. निर्मला जी कांकरिया–चेन्नई, खुशी लुणावत–जोधपुर, कोमल जैन, ममता बाफना–जलगॉव, महेन्द्र दरड़ा–जोधपुर, महेन्द्र जैन–बरवाड़ा, मुकेश बी. बाघमार–नासिक, शिल्पा रांका–सैलाना, विनीता जैन–सवाईमाधोपुर, जितेन्द्र जैन–बरवाड़ा, नितिन जैन–जयपुर, पुष्पा लुणावत–पाँचलासिद्धा, पूजा जैन–समीधी, पूजा जैन–गंगापुर, पूनमचंद राणूलाल जैन–शहादा, राकेश भण्डारी–पीपाड़, राजुला भण्डारी–पीपाड़, शोभा कवाड़–जोधपुर, संगीता कांकरिया–पीपाड़, संगीता दरड़ा–जोधपुर, सीमा जैन–सवाईमाधोपुर, सुमेर लुणावत–पाँचलासिद्धा, डॉ. मनीष जैन–खेरली, दीपिका जैन–भोपालगढ़, दीपा बाघमार–फत्तेपुर, नीर कवाड़–जोधपुर, नीलम मेहता–जोधपुर, नरेश कवाड़–जोधपुर, नवकार लुणावत–जोधपुर, अदिति चौधरी–भीलवाड़ा, आशी कवाड़–जोधपुर।

45 व उससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:– एम.एम.इलेक्ट्रोनिक्स–हैदराबाद, बिमला जी हीरावत–जयपुर, विमलाबाई जी बरड़िया–बोदवड़, निर्मला जी सुराणा–बीकानेर, श्रीमती कमल जी चौरड़िया–जयपुर, श्रीमती मनीलाजी पारख–जयपुर, शांतिलालजी जैन–बरवाड़ा, सरिता सुरेन्द्र चौधरी–मुम्बई, सौ.विमल राणूलालजी कोचर–नासिक, छगनलाल जी जैन–खोह, आशीषजी कांकरिया–पावटा, अशोक कुमारजी कांकरिया–पावटा, श्री राजेन्द्रजी कोठारी–दूदू, श्रीमती पिस्ता गोलेछा–जयपुर, शशि जी बोहरा–जयपुर, ज्योति जैन–हिंडौन, नरेशजी कोठारी–दूदू, अभयजी कोठारी–दूदू, केसर गांग–जोधपुर, सौ. शकुंतला खींवसरा–मांडल, सतेन्द्र कुमार जी जैन–हिंडौन, अनिल जी मेहता–जोधपुर, विनय जी जैन–महवा, भावना जी जैन–महवा, पूनम जी जैन–महवा, कंचन जी कोठारी–जोधपुर, कृष्णा जी खारेड़–जयपुर, सौ. ज्योति संजय बोथरा–रालेगांव, गौतममलजी गांग–जोधपुर, धनवंती कल्पेश चौधरी–धुले, बिंदु चौधरी–धुले, विशाल जैन–गंगापुर सिटी, चिराग जैन–गंगापुर सिटी, जितेन्द्र कुमार बांठिया–बाड़मेर, पायल चौपड़ा–गोटन, पूनम देवी–गोटन, राजुला कोठारी–जयपुर, ज्योति जैन–खेरली, जी.पद्मा गूगलिया, नेहा जैन–गंगापुर, अरूणा कटारिया–पाली, रूपल मेहता–दूदू, प्रियंका बाघमार–अलवर, हसंराज चौपड़ा–गोटन, प्रीति सिंघवी–ब्यावर, प्रदीप चौपड़ा–गोटन, श्रीमती बबीता संचेती–अलवर, आंशिमा मेहता–दूदू, कविता कोठारी–अजमेर, कुणाल मेहता–जोधपुर, मधु कुम्भट–जोधपुर, हेमलता जैन–बजरिया, शशि रांका–भड़गॉव, शोभा सुराणा–चेन्नई, सरिता गादिया–हरसाना, एल. पारसनाथ सुराना–चेन्नई, महेश जैन–जयपुर, पुनीता जैन–करौली, नेहा जैन–जयपुर, सीमा ओस्तवाल–शेंदुर्णी, सौ. कंचनबाई डांगी–जलगांव, बबीता कोठारी–जयपुर, विमला जैन–मण्डावरा, विवेक जैन–हरसाना, नीरजकुमार जैन–हरसाना, सपना श्रीमाल–मेड़ता।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (22) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
1. युवा	जून/32	2. जयमल जी	मई/18
3. आत्मा	अप्रेल/55	4. जिनवाणी	अप्रेल/112
5. अब्रह्मचर्य	जून/6	6. श्रेणिक	अप्रेल/11
7. चाय	अप्रेल/59	8. देवकी	मई/12
9. संयम	जून/49	10. दर्पण	अप्रेल/70
11. मोक्ष	अप्रेल/64	12. वीतरागता	जून/63
13. मोह	मई/58	14. क्रोध	मई/84
15. सरल होना	अप्रेल/62	16. धर्म	मई/27
17. आत्मा	जून/10	18. माया	जून/16
19. समाज	अप्रेल/15	20. श्री जयमलजी म.सा.	मई/17
21. शास्त्र	जून/13	22. वेदज्ञ	अप्रेल/9
23. महात्मा गाँधी	मई/78	24. लोंकाशाह	मई/24
25. वेदव्यास	जून/34	26. आचार्यश्री देवेन्द्रमुनिजी	मई/14
27. स्वामी विवेकानन्द	अप्रेल/21	28. नारकी जीव	अप्रेल/55
29. जम्बूकुमार	जून/46	30. कबीर	मई/8
31. 19	मई/77	32. 70	अप्रेल/58
33. 4	जून/36	34. 4	मई/78
35. 9	जून/5	36. 97,00,000	मई/14
37. 4	जून/24	38. 96	अप्रेल/50
39. 7	मई/40	40. 2	मई/50
41. हाँ	अप्रेल/73	42. ना	जून/41
43. हाँ	मई/14	44. हाँ	मई/30
45. हाँ	अप्रेल/38	46. हाँ	मई/54
47. हाँ	जून/12	48. ना	जून/19
49. ना	अप्रेल/43	50. ना	मई/78

नोट :– प्रश्न 15 का उत्तर **English Section** में से होने के कारण सभी को 1 अंक दिया गया है।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 19 जुलाई 2009 को आयोजित कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थाई वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। परीक्षा परिणाम की सूची केन्द्राधीक्षकों को प्रेषित कर दी गई हैं। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना-पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 20 अक्टूबर 2009 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

57000, 57009, 57011, 57014, 57016, 57017, 57019, 57023, 57043, 57045, 57065, 57066, 57068, 57069, 57070, 57071, 57074, 57087, 57088, 57104, 57107, 57121, 57202, 57228, 57245, 57247, 57267, 57270, 57313, 57320, 57322, 57323, 57326, 57327, 57332, 57333, 57334, 57336, 57337, 57339, 57372, 57382, 57388, 57389, 57391, 57393, 57397, 57405, 57414, 57415, 57430, 57431, 57437, 57439, 57447, 57449, 57465, 57473, 57520, 57521, 57532, 57598, 57600, 57616, 57617, 57640, 57641, 57644, 57648, 57651, 57653, 57656, 57658, 57659, 57661, 57662, 57720, 57723, 57724, 57729, 57731, 57750, 57758, 57759, 57766, 57773, 57774, 57775, 57779, 57782, 57791, 57793, 57795, 57797, 57821, 57823, 57824, 57827, 57831, 57833, 57926, 57927, 57957, 57958, 57961, 57978, 57979, 57980, 58006, 58007, 58011, 58013, 58034, 58036, 58038, 58045, 58046, 58048, 58050, 58055, 58056, 58060, 58063, 58070, 58072, 58075, 58080, 58101, 58103, 58105, 58106, 58108, 58109, 58123, 58124, 58128, 58129, 58130, 58134, 58136, 58138, 58150, 58153, 58157, 58158, 58166, 58192, 58194, 58203, 58205, 58208, 58210, 58215, 58248, 58249, 58251, 58252, 58261, 58262, 58263, 58264, 58265, 58273, 58292, 58293, 58294, 58295, 58297, 58302, 58341, 58392, 58422, 58427, 58430, 58472, 58478, 58514, 58522, 58523, 58525, 58526, 58537, 58541, 58577, 58582, 58607, 58630, 58631, 58632, 58653, 58655, 58658, 58662, 58663, 58666, 58667, 58668, 58669, 58670, 58681, 58682, 58683, 58684, 58685, 58687, 58692, 58696, 58698, 58699, 58702, 58721, 58722, 58728, 58740, 58743, 58754, 58757, 58775, 58776, 58777, 58806, 58833, 58835, 58861, 58862, 58867, 58871, 58880, 58889, 58890, 58892, 58895, 58896, 58938, 58939, 58941, 59004, 59023, 59030, 59072, 59081, 59091, 59093, 59094, 59096, 59098, 59110, 59112, 59113, 59114, 59120, 59125, 59127, 59135, 59152, 59205, 59206, 59253, 59257, 59266, 59279, 59281, 59282, 59283, 59299, 59317, 59323, 59325, 59357, 59359, 59396, 59398, 59400, 59421, 59433, 59436, 59446, 59448, 59471, 59476, 59483, 59488, 59490, 59498, 59507, 59508, 59509, 59521, 59524, 59540, 59546, 59547, 59550, 59586, 59588, 59589, 59591, 59624, 59641, 59667, 59669, 59670, 59679, 59697, 59705, 59707, 59710, 59716, 59775, 59786, 59807, 59816, 59823, 59826, 59829, 59835, 59837, 59847, 59849, 59850, 59857, 59874, 59876, 59880,

59887, 59889, 59893, 59906, 59922, 59924, 59927, 59928, 59931, 59932, 59933, 59936, 59940, 59944, 59947, 59967, 59968, 59972, 59974, 59975, 59979, 59980, 59993, 59995, 60000, 60005, 60007, 60008, 60013, 60015, 60019, 60023, 60028, 60029, 60032, 60039, 60040, 60041, 60042, 60054, 60059, 60061, 60062, 60063, 60065, 60086, 60105, 60113, 60131, 60134, 60139, 60140, 60143, 60145, 60175, 60176, 60186, 60249, 60268, 60271, 60281, 60297, 60302, 60308, 60309, 60313, 60315, 60316, 60319, 60329, 60332, 60335, 60457, 60461, 60462, 60464, 60483, 60520, 60523, 60527, 60529, 60531, 60539, 60541, 60542, 60552, 60554, 60556, 60561, 60596, 60598, 60607, 60610, 60614, 60617, 60638, 60645, 60646, 60655, 60659, 60661, 60665, 60672, 60674, 60721, 60726, 60732, 60734, 60735, 60740, 60755, 60758, 60759, 60760, 60762, 60764, 60766, 60771, 60775, 60783, 60806, 60820, 60822, 60823, 60830, 60880, 60885, 60886, 60906, 60915, 60918, 60919, 60921, 60935, 60936, 60938, 60966, 60968, 60974, 60976, 60981, 60991, 60999, 61081, 61083, 61084, 61087, 61088, 61097, 61099, 61103, 61104, 61106, 61108, 61111, 61120, 61123, 61126, 61136, 61147, 61154, 61155, 61158, 61159, 61160, 61171, 61173, 61178, 61180, 61182, 61202, 61206, 61211, 61212, 61222, 61225, 61259, 61262, 61271, 61272, 61274, 61275, 61278, 61279, 61281, 61282, 61283, 61285, 61286, 61287, 61290, 61299, 61305, 61309, 61323, 61327, 61329, 61330, 61333, 61341, 61354, 61355, 61366, 61370, 61372, 61384, 61424, 61442, 61445, 61446, 61447, 61457, 61459, 61463, 61500, 61505, 61513, 61533, 61547, 61551, 61552, 61553, 61555, 61556, 61557, 61559, 61560, 61563, 61565, 61567, 61569, 61571, 61581, 61582, 61585, 61586, 61587, 61588, 61589, 61592, 61593, 61595, 61598, 61601, 61606, 61618, 61622, 61630, 61631, 61643, 61649, 61650, 61652, 61654, 61655, 61656, 61660, 61663, 61665, 61666, 61667, 61670, 61673, 61685, 61686, 61687, 61690, 61709, 61710, 61711, 61735, 61736, 61739, 61744, 61749, 61751, 61753, 61754, 61784, 61790, 61792, 61793, 61800, 61801, 61837, 61844, 61851, 61855, 61876, 61885, 61896, 61897, 61927, 61929, 61932, 61934, 61967, 61968, 61969, 61970, 61987, 61991, 61992, 61994, 61996, 61999, 62013, 62017, 62019, 62020, 62022, 62024, 62025, 62026, 62027, 62044, 62096, 62097, 62099, 62102, 62107, 62108, 62109, 62110, 62123, 62131, 62161, 62162, 62165, 62166, 62167, 62168, 62169, 62174, 62181, 62184, 62186, 62188, 62190, 62192, 62193, 62198, 62202, 62225, 62228, 62229, 62231, 62233, 62235, 62236, 62238, 62239, 62260, 62262, 62263, 62265, 62266, 62268, 62271, 62272, 62274, 62277, 62281, 62284, 62285, 62286, 62290, 62301, 62308, 62309, 62313, 62315, 62318, 62320, 62323, 62324, 62329, 62333, 62334, 62337, 62339, 62340, 62351, 62353, 62354, 62357, 62364, 62373, 62379, 62381, 62387, 62388, 62397, 62419, 62435, 62437, 62448, 62452, 62453, 62466, 62469, 62470, 62501, 62502, 62508, 62520, 62523, 62524, 62525, 62526, 62527, 62529, 62531, 62532, 62533, 62534, 62538, 62540, 62542, 62543, 62549, 62551, 62553, 62554, 62556, 62557, 62558, 62559, 62568, 62570, 62575, 62616, 62617, 62627, 62638, 62639, 62640, 62642, 62644, 62645, 62671, 62681, 62687, 62712, 62727, 62728, 62732, 62767, 62768, 62791, 62796, 62797, 62831, 62833, 62854, 62856, 62858, 62859, 62862, 62863, 62880, 62881, 62900, 62901, 62912, 62950, 62951, 62954, 62958, 62959, 62960, 62993, 62999, 63003, 63006, 63012, 63013, 63018, 63034, 63036, 63037, 63040, 63042, 63055, 63066, 63067, 63068, 63083, 63090, 63094, 63115, 63135, 63140, 63141, 63142, 63143, 63145, 63148, 63149, 63150, 63151, 63157, 63159, 63161, 63162, 63165, 63166, 63167, 63171, 63173, 63175, 63180, 63182, 63185, 63187, 63188, 63189, 63190, 63191, 63194, 63195, 63196, 63198, 63212, 63213, 63216, 63217, 63219, 63222, 63225, 63248, 63251, 63253, 63254, 63264, 63266, 63267, 63269, 63270, 63276, 63277, 63278, 63281, 63282, 63283, 63284, 63285, 63297, 63391, 63443, 63444, 63445, 63446, 63447, 63448, 63449, 63452, 63453, 63454, 63455, 63458, 63459, 63460, 63461, 63462, 63475, 63476, 63477, 63487, 63488, 63489, 63490, 63511, 63513, 63529, 63530, 63531, 63532, 63533, 63534, 63535, 63571, 63572, 63574, 63576, 63596, 63597, 63601, 63603, 63604, 63605, 63607, 63608, 63610, 63612, 63613, 63614, 63615, 63616, 63618, 63619, 63620, 63621, 63622, 63626, 63627, 63628, 63631, 63632, 63640, 63641, 63644, 63645, 63647, 63681, 63682, 63686, 63687, 63692, 63693, 63695, 63696, 63699, 63701,

63702, 63703, 63727, 63728, 63729, 63730, 63731, 63732, 63733, 63734, 63735, 63739, 63758, 63762, 63763, 63764, 63765, 63766, 63768, 63816, 63830, 63864, 63866, 63881, 63882, 63889, 63890, 63892, 63894, 63896, 63899, 63906, 63911, 63915, 63918, 63920, 63926, 63929, 63937, 63945, 63950, 63952, 63960, 63982, 63995, 64007, 64017, 64018, 64022, 64024, 64025, 64026, 64027, 64036, 64037, 64040, 64043, 64056, 64066, 64069, 64072, 64108, 64113, 64114, 64115, 64149, 64150, 64153, 64154, 64157, 64165, 64173, 64188, 64195, 64197, 64208, 64221, 64237, 64244, 64257, 64265, 64286, 64299, 64309, 64312, 64315, 64322, 64327, 64447, 64449, 64450, 64483, 64488, 64490, 64504, 64561, 64566, 64574, 64576, 64594, 64611, 64615, 64618, 64643, 64644, 64645, 64662, 64664, 64665, 64686, 64687, 64689, 64690, 64694, 64695, 64696, 64697, 64698, 64700, 64701, 64702, 64703, 64706, 64707, 64712, 64713, 64714, 64720, 64724, 64729, 64730, 64731, 64734, 64735, 64738, 64739, 64742, 64743, 64746, 64752, 64753, 64754, 64756, 64786, 64788, 64790, 64800, 64803, 64806, 64807, 64844, 64856, 64858, 64864, 64870, 64882, 64883, 64889, 64899, 64932, 64933, 64936, 64937, 64965, 65004, 65005, 65006, 65017, 65025, 65028, 65038, 65040, 65042, 65043, 65045, 65046, 65047, 65060, 65064, 65072, 65075, 65081, 65086, 65088, 65089, 65091, 65092, 65102, 65119, 65124, 65126, 65149, 65150, 65155, 65161, 65181, 65196, 65200, 65202, 65205, 65218, 65229, 65237, 65267, 65269, 65270, 65276, 65287, 65288, 65303, 65304, 65306, 65310, 65312, 65324, 65326, 65327, 65328, 65329, 65338, 65340, 65363, 65372, 65374, 65375, 65377, 65383, 65387, 65390, 65391, 65394, 65395, 65406, 65407, 65408, 65409, 65410, 65415, 65422, 65423, 65424, 65425, 65430, 65431, 65435, 65438, 65440, 65441, 65442, 65443, 65444, 65445, 65454, 65455, 65457, 65458, 65461, 65463, 65466, 65467, 65468, 65469, 65473, 65474, 65475, 65476, 65478, 65479, 65480, 65506, 65507, 65517, 65556, 65566, 65569, 65579, 65585, 65591, 65604, 65623, 65629, 65635, 65653, 65655, 65665, 65680, 65691, 65696, 65697, 65699, 65702, 65704, 65707, 65732, 65734, 65735, 65738, 65739, 65748, 65757, 65772, 65774, 65775, 65777, 65779, 65782, 65784, 65786, 65792, 65793, 65796, 65798, 65800, 65807, 65825, 65826, 65828, 65829, 65830, 65831, 65832, 65838, 65847, 65851, 65853, 65854, 65855, 65856, 65857, 65859, 65860, 65865, 65890, 65895, 65899, 65900, 65901, 65904, 65905, 65906, 65909, 65910, 65912, 65913, 65914, 65919, 65920, 65921, 65922, 65923, 65924, 65925, 65927, 65929, 65931, 65932, 65935, 65950, 65951, 65952, 65956, 65957, 65958, 65960, 65962, 65963, 65973, 65974, 65975, 65977, 65980, 65981, 65984, 65988, 65992, 65997, 65998, 66001, 66002, 66011, 66021, 66023, 66024, 66030, 66031, 66032, 66033, 66057, 66058, 66059, 66060, 66061, 66068, 66069, 66071, 66072, 66077 (Total Student Count: 1345)

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

56975, 56987, 56993, 56994, 56995, 57004, 57005, 57007, 57008, 57018, 57026, 57033, 57034, 57048, 57091, 57092, 57093, 57112, 57113, 57124, 57215, 57231, 57232, 57253, 57255, 57265, 57341, 57348, 57349, 57353, 57357, 57381, 57446, 57450, 57454, 57475, 57484, 57486, 57488, 57537, 57538, 57539, 57556, 57565, 57566, 57568, 57569, 57603, 57623, 57664, 57668, 57669, 57670, 57698, 57734, 57780, 57781, 57784, 57800, 57801, 57802, 57804, 57814, 57818, 57840, 57860, 57863, 57876, 57878, 57911, 57928, 57929, 57930, 57932, 57964, 58015, 58079, 58082, 58160, 58161, 58162, 58163, 58165, 58167, 58172, 58196, 58219, 58241, 58246, 58247, 58275, 58288, 58350, 58372, 58373, 58396, 58398, 58435, 58436, 58437, 58438, 58442, 58446, 58447, 58448, 58449, 58450, 58452, 58453, 58454, 58455, 58456, 58458, 58460, 58461, 58462, 58474, 58482, 58487, 58488, 58489, 58499, 58515, 58516, 58517, 58520, 58543, 58544, 58545, 58546, 58549, 58552, 58553, 58555, 58570, 58578, 58579, 58580, 58588, 58604, 58606, 58616, 58633, 58636, 58638, 58641, 58642, 58671, 58678, 58686, 58689, 58693, 58695, 58697, 58700, 58701, 58704, 58706, 58707, 58708, 58709, 58710, 58711, 58712, 58713, 58714, 58715, 58725, 58726, 58727, 58729, 58730, 58731, 58732, 58734, 58736, 58744, 58747, 58750, 58751,

58753, 58762, 58765, 58766, 58769, 58771, 58772, 58779, 58780, 58781, 58782, 58789, 58792, 58794, 58795, 58797, 58799, 58800, 58822, 58823, 58837, 58900, 58901, 58902, 58903, 58906, 58914, 58919, 58920, 58929, 58937, 59040, 59050, 59119, 59124, 59157, 59159, 59318, 59329, 59334, 59362, 59364, 59369, 59376, 59422, 59423, 59425, 59428, 59432, 59449, 59451, 59479, 59565, 59566, 59570, 59576, 59630, 59638, 59643, 59656, 59657, 59690, 59696, 59736, 59760, 59780, 59865, 59935, 59984, 60066, 60070, 60072, 60094, 60146, 60164, 60166, 60167, 60193, 60194, 60195, 60318, 60328, 60331, 60333, 60334, 60339, 60345, 60350, 60361, 60362, 60417, 60419, 60422, 60423, 60424, 60467, 60469, 60471, 60473, 60474, 60475, 60476, 60499, 60500, 60501, 60502, 60503, 60505, 60506, 60508, 60509, 60510, 60511, 60515, 60517, 60521, 60530, 60558, 60616, 60619, 60676, 60680, 60681, 60684, 60685, 60688, 60773, 60794, 60807, 60814, 60818, 60825, 60833, 60898, 60899, 60900, 60901, 60902, 60903, 60904, 60907, 60908, 60913, 60942, 60943, 60944, 60945, 61027, 61140, 61149, 61151, 61172, 61213, 61229, 61231, 61240, 61297, 61348, 61349, 61350, 61376, 61377, 61388, 61390, 61393, 61395, 61409, 61414, 61464, 61465, 61466, 61467, 61468, 61469, 61470, 61477, 61478, 61479, 61480, 61481, 61482, 61483, 61484, 61485, 61486, 61489, 61491, 61492, 61495, 61504, 61522, 61523, 61524, 61525, 61528, 61529, 61530, 61531, 61532, 61537, 61609, 61611, 61612, 61615, 61616, 61620, 61645, 61669, 61671, 61677, 61678, 61679, 61680, 61683, 61684, 61691, 61692, 61696, 61722, 61724, 61726, 61727, 61758, 61766, 61787, 61796, 61803, 61804, 61806, 61824, 61829, 61856, 61865, 61866, 61867, 61868, 61869, 61871, 61875, 61920, 61921, 61923, 61974, 62010, 62029, 62074, 62075, 62081, 62127, 62135, 62160, 62242, 62255, 62257, 62297, 62299, 62303, 62342, 62343, 62344, 62345, 62355, 62436, 62457, 62471, 62509, 62587, 62597, 62619, 62620, 62621, 62630, 62650, 62655, 62656, 62657, 62658, 62659, 62662, 62695, 62753, 62755, 62770, 62777, 62778, 62779, 62781, 62786, 62788, 62790, 62800, 62801, 62804, 62805, 62807, 62810, 62812, 62814, 62816, 62821, 62838, 62839, 62840, 62841, 62842, 62864, 62866, 62884, 62917, 62964, 62966, 62967, 62968, 62969, 62970, 62972, 62975, 62976, 63004, 63015, 63017, 63020, 63021, 63057, 63059, 63069, 63071, 63072, 63103, 63106, 63107, 63108, 63111, 63114, 63200, 63258, 63259, 63280, 63286, 63287, 63288, 63289, 63290, 63291, 63292, 63293, 63294, 63295, 63298, 63299, 63300, 63302, 63312, 63313, 63314, 63346, 63347, 63358, 63359, 63360, 63361, 63403, 63411, 63412, 63441, 63442, 63456, 63467, 63492, 63495, 63498, 63538, 63539, 63540, 63541, 63542, 63543, 63545, 63547, 63550, 63553, 63554, 63557, 63558, 63559, 63578, 63583, 63584, 63585, 63635, 63658, 63663, 63665, 63683, 63715, 63716, 63717, 63741, 63742, 63748, 63749, 63750, 63751, 63752, 63769, 63772, 63773, 63775, 63776, 63780, 63782, 63783, 63812, 63813, 63819, 63820, 63857, 63858, 63872, 63877, 63883, 63921, 63923, 64048, 64049, 64050, 64052, 64054, 64055, 64057, 64058, 64060, 64063, 64064, 64065, 64084, 64085, 64116, 64117, 64126, 64128, 64133, 64171, 64174, 64176, 64333, 64335, 64346, 64347, 64348, 64349, 64350, 64351, 64353, 64357, 64361, 64362, 64375, 64376, 64377, 64379, 64381, 64382, 64389, 64392, 64456, 64458, 64465, 64467, 64468, 64470, 64471, 64473, 64474, 64476, 64491, 64492, 64493, 64509, 64510, 64513, 64514, 64515, 64517, 64562, 64563, 64565, 64567, 64603, 64625, 64647, 64649, 64673, 64745, 64750, 64772, 64773, 64777, 64781, 64782, 64783, 64784, 64826, 64827, 64829, 64830, 64833, 64835, 64836, 64874, 64876, 64878, 64886, 64914, 64915, 64917, 64921, 64923, 64924, 64931, 64949, 64967, 64972, 64974, 64975, 64976, 64977, 64996, 65007, 65030, 65031, 65048, 65054, 65055, 65056, 65082, 65085, 65129, 65131, 65133, 65138, 65154, 65157, 65179, 65185, 65190, 65275, 65296, 65299, 65302, 65345, 65350, 65353, 65355, 65357, 65360, 65380, 65381, 65399, 65426, 65428, 65429, 65447, 65471, 65483, 65499, 65528, 65543, 65544, 65545, 65546, 65568, 65571, 65638, 65693, 65695, 65698, 65706, 65710, 65711, 65736, 65754, 65764, 65768, 65783, 65785, 65794, 65799, 65805, 65808, 65820, 65835, 65848, 65850, 65878, 65889, 65897, 65898, 65915, 65916, 65917, 65933, 65969, 66010, 66025, 66029, 66035, 66056, 66062, 66070, 66076, 66079, 66080, 66083 (Total Student Count:794)

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

57028, 57035, 57036, 57077, 57114, 57207, 57492, 57496, 57497, 57525, 57557, 57558, 57559, 57573, 57577, 57666, 57671, 57736, 57738, 57739, 57808, 57809, 57834, 57835, 57846, 57965, 57982, 57984, 58089, 58091, 58175, 58177, 58178, 58179, 58180, 58200, 58204, 58207, 58216, 58272, 58279, 58281, 58283, 58322, 58323, 58377, 58400, 58401, 58439, 58463, 58465, 58486, 58529, 58554, 58556, 58557, 58558, 58559, 58560, 58562, 58571, 58572, 58573, 58574, 58575, 58592, 58593, 58594, 58595, 58597, 58599, 58600, 58601, 58621, 58643, 58644, 58645, 58647, 58755, 58810, 58942, 58943, 58959, 58961, 58968, 58969, 58971, 58973, 59034, 59042, 59044, 59046, 59048, 59049, 59077, 59079, 59166, 59236, 59289, 59324, 59345, 59575, 59580, 59702, 59704, 59708, 59715, 59718, 59721, 59729, 59745, 59748, 59828, 59836, 59839, 59895, 59896, 59897, 59898, 59989, 60022, 60067, 60069, 60077, 60106, 60198, 60338, 60355, 60365, 60367, 60427, 60431, 60432, 60450, 60453, 60586, 60622, 60694, 60774, 60777, 60779, 60826, 60835, 60836, 60856, 60857, 60891, 60892, 60893, 60894, 60895, 60925, 60926, 60927, 60928, 60929, 60930, 60931, 60932, 61041, 61044, 61079, 61080, 61100, 61144, 61162, 61163, 61200, 61399, 61401, 61404, 61405, 61415, 61417, 61418, 61419, 61421, 61427, 61428, 61472, 61473, 61538, 61637, 61675, 61693, 61699, 61703, 61807, 61809, 61810, 61811, 61812, 61830, 61872, 61943, 61944, 61945, 61954, 61976, 61977, 61978, 61979, 62030, 62048, 62068, 62076, 62077, 62078, 62079, 62080, 62159, 62163, 62173, 62177, 62180, 62218, 62219, 62244, 62412, 62439, 62604, 62624, 62634, 62635, 62693, 62733, 62749, 62766, 62772, 62830, 62845, 62849, 62850, 62905, 62906, 62907, 62908, 62920, 62921, 62922, 62924, 62935, 62977, 62978, 62979, 62980, 62981, 63019, 63031, 63032, 63060, 63073, 63074, 63075, 63091, 63120, 63124, 63127, 63129, 63131, 63201, 63202, 63203, 63256, 63301, 63303, 63304, 63305, 63306, 63307, 63308, 63309, 63310, 63311, 63318, 63319, 63320, 63321, 63324, 63326, 63328, 63329, 63335, 63336, 63338, 63339, 63349, 63385, 63393, 63451, 63468, 63469, 63470, 63478, 63499, 63501, 63514, 63560, 63562, 63588, 63589, 63590, 63591, 63638, 63639, 63659, 63660, 63668, 63669, 63719, 63753, 63788, 63791, 63792, 63817, 63833, 63835, 63853, 63860, 63862, 63893, 63925, 63927, 63934, 63936, 63940, 63942, 63944, 63946, 63947, 64071, 64075, 64080, 64082, 64089, 64090, 64091, 64093, 64094, 64099, 64139, 64143, 64146, 64356, 64359, 64365, 64366, 64368, 64369, 64402, 64416, 64417, 64420, 64423, 64428, 64429, 64430, 64552, 64597, 64604, 64628, 64629, 64631, 64632, 64650, 64755, 64758, 64791, 64793, 64797, 64811, 64837, 64888, 64890, 64956, 64979, 64997, 64998, 65010, 65011, 65020, 65039, 65041, 65058, 65189, 65201, 65203, 65204, 65285, 65301, 65371, 65412, 65417, 65508, 65524, 65529, 65531, 65532, 65539, 65542, 65567, 65596, 65628, 65631, 65644, 65652, 65728, 65750, 65771, 65789, 65806, 65811, 65819, 65834, 65841, 65875, 65886, 65887, 65907, 65948, 65970, 65985, 66000, 66005, 66018, 66022, 66036, 66037, 66075 (Total Student Count:429)

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

56977, 57053, 57096, 57127, 57222, 57237, 57238, 57352, 57354, 57356, 57500, 57501, 57503, 57526, 57527, 57561, 57580, 57581, 57599, 57608, 57674, 57717, 57718, 57740, 57753, 57837, 57838, 57892, 57918, 57919, 57920, 57986, 58017, 58018, 58047, 58092, 58181, 58229, 58235, 58286, 58331, 58335, 58362, 58402, 58403, 58404, 58441, 58466, 58490, 58491, 58493, 58503, 58622, 58812, 58813, 58905, 58951, 58953, 58975, 58981, 58982, 58983, 58984, 59024, 59027, 59036, 59053, 59057, 59058, 59067, 59069, 59070, 59171, 59173, 59238, 59239, 59326, 59333, 59466, 59583, 59585, 59590, 59592, 59627, 59739, 59746, 59747, 59844, 59879, 59899, 59941, 59943, 60163, 60200, 60201, 60344, 60347, 60348, 60372, 60406, 60426, 60458, 60575, 60588, 60626, 60628, 60695, 60780,

60784, 60788, 60790, 60791, 60792, 60796, 60797, 60798, 60811, 60839, 60840, 60841, 60909, 60910, 60948, 61046, 61047, 61049, 61101, 61165, 61169, 61303, 61431, 61432, 61434, 61454, 61455, 61474, 61539, 61540, 61542, 61544, 61597, 61704, 61772, 61813, 61814, 61815, 61816, 61817, 61840, 61842, 61957, 61958, 61959, 61960, 61980, 61981, 61982, 61983, 61984, 62031, 62032, 62033, 62246, 62247, 62416, 62417, 62418, 62420, 62421, 62423, 62425, 62427, 62441, 62472, 62475, 62476, 62477, 62478, 62479, 62480, 62481, 62482, 62483, 62484, 62485, 62547, 62578, 62608, 62610, 62611, 62625, 62664, 62691, 62697, 62715, 62752, 62754, 62769, 62771, 62775, 62851, 62852, 62891, 62893, 62911, 62925, 62927, 62929, 62936, 62996, 63010, 63045, 63076, 63077, 63078, 63079, 63080, 63081, 63082, 63085, 63204, 63395, 63406, 63407, 63408, 63464, 63471, 63472, 63473, 63479, 63502, 63515, 63516, 63517, 63592, 63794, 63796, 63827, 63834, 63838, 63886, 63949, 63951, 63962, 63963, 63967, 64100, 64118, 64119, 64179, 64181, 64185, 64187, 64189, 64282, 64374, 64442, 64482, 64497, 64498, 64500, 64501, 64555, 64558, 64580, 64583, 64588, 64598, 64651, 64653, 64675, 64677, 64751, 64766, 64767, 64794, 64812, 64813, 64814, 64853, 64866, 64893, 64928, 64929, 64962, 64981, 65001, 65012, 65013, 65016, 65026, 65050, 65099, 65100, 65103, 65137, 65141, 65143, 65144, 65145, 65159, 65210, 65246, 65294, 65330, 65398, 65420, 65481, 65482, 65484, 65485, 65486, 65488, 65489, 65490, 65492, 65493, 65494, 65495, 65496, 65497, 65498, 65501, 65503, 65504, 65523, 65583, 65603, 65607, 65609, 65620, 65639, 65709, 65725, 65740, 65747, 65749, 65852, 65871, 65876, 65880, 65883, 65893, 65903, 65971, 65972, 65987, 66007 (Total Student Count:348)

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं)

57078, 57211, 57384, 57510, 57511, 57562, 57606, 57676, 57899, 57902, 57904, 57936, 57968, 57988, 57989, 58049, 58051, 58226, 58228, 58230, 58367, 58374, 58381, 58389, 58405, 58406, 58407, 58408, 58467, 58468, 58469, 58470, 58495, 58505, 58624, 58717, 58773, 58962, 59020, 59175, 59594, 59629, 59751, 59754, 59757, 59766, 59945, 60095, 60115, 60116, 60292, 60295, 60352, 60364, 60376, 60409, 60597, 60629, 60696, 60699, 60700, 60800, 60801, 60827, 60843, 60860, 61152, 61250, 61435, 61541, 61599, 61605, 61608, 61651, 61729, 61732, 61818, 61873, 61961, 61962, 61963, 62142, 62155, 62156, 62442, 62444, 62486, 62580, 62637, 62678, 62679, 62698, 62700, 62701, 62702, 62706, 62707, 62717, 62719, 62773, 62774, 62783, 62785, 62787, 62789, 62808, 62809, 62915, 62930, 62933, 63016, 63205, 63206, 63396, 63409, 63415, 63474, 63503, 63504, 63505, 63506, 63507, 63508, 63510, 63593, 63821, 63837, 63854, 63859, 63875, 64120, 64194, 64388, 64445, 64446, 64454, 64502, 64539, 64585, 64655, 64679, 64681, 64798, 64815, 64842, 64963, 65027, 65044, 65182, 65187, 65262, 65279, 65283, 65418, 65419, 65502, 65601, 65602, 65610, 65688, 65726, 65741, 65745, 65902, 66012, 66013, 66019, 66020, 66052, 66078 (Total Student Count:170)

जैन धर्म विशारद (छठी)

57080, 57081, 57082, 57212, 57240, 57361, 57588, 57591, 57593, 57778, 57811, 57910, 57939, 57940, 57942, 57947, 57949, 57950, 57953, 57955, 58033, 58035, 58053, 58054, 58183, 58184, 58185, 58232, 58233, 58238, 58298, 58380, 58815, 58845, 58846, 58985, 59038, 59062, 59178, 59180, 59182, 59246, 59247, 59336, 59600, 59633, 59768, 59772, 59886, 60036, 60157, 60358, 60377, 60428, 60430, 60535, 60602, 60630, 60631, 60845, 60846, 60861, 60862, 61102, 61353, 61436, 61820, 61965, 61993, 62037, 62050, 62069, 62250, 62614, 62684, 62720, 62722, 62724, 62811, 62825, 62873, 63058, 63062, 63087, 63093, 63261, 63526, 63671, 63855, 63856, 63865, 63868, 63983, 64137, 64140, 64141, 64198, 64395, 64397, 64462, 64542, 64546, 64548, 64589, 64656, 64760, 64778, 64816, 64930, 64934, 64964, 64968, 64989, 65069, 65337, 65541, 65560, 65562, 65614, 65724,

65840, 65937, 66038, 66081 (Total Student Count:124)

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

57595, 57741, 57848, 57923, 57931, 57935, 57971, 57972, 57974, 58057, 58099, 58100, 58240, 58242, 58339, 59374, 59888, 59900, 60125, 60127, 60130, 60382, 60804, 60849, 61055, 61062, 61105, 61439, 61788, 61797, 61823, 61858, 61861, 61922, 61985, 61986, 62058, 62248, 62429, 62449, 62451, 62454, 62456, 62458, 62460, 62709, 62710, 62815, 63025, 63279, 63397, 63398, 63399, 63484, 63485, 63672, 63673, 63805, 63887, 64112, 64121, 64122, 64123, 64472, 64505, 64551, 64553, 64554, 64556, 64557, 64657, 64763, 64785, 64799, 64801, 64817, 65002, 65097, 65366, 65505, 65558, 65612, 65637, 65712, 65713, 65766, 65815, 65881, 65885, 65892 (Total Student Count:90)

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

57046, 57060, 57102, 57515, 57578, 57706, 57707, 57756, 58059, 58061, 58062, 58064, 58065, 58067, 58069, 58186, 58187, 58236, 58532, 58533, 58628, 58848, 59068, 59251, 59340, 59447, 59854, 59890, 59999, 60037, 60098, 60159, 60536, 60632, 60817, 60850, 60867, 61107, 61153, 61859, 61879, 62039, 62040, 62041, 62042, 62043, 62051, 62059, 62179, 62220, 62221, 62249, 62431, 62461, 62462, 62463, 62464, 62666, 62667, 62668, 62669, 63099, 63130, 63486, 63527, 63674, 63675, 63802, 63804, 63840, 63841, 63842, 64489, 64761, 64820, 64839, 64973, 65362, 65705, 65756 (Total Student Count:80)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध (नवमी)

57003, 57117, 57516, 57579, 57760, 57849, 57941, 57948, 58112, 59071, 59184, 59186, 60256, 60300, 60303, 60868, 61064, 61456, 61798, 61860, 61948, 62070, 62071, 62072, 62073, 62125, 62473, 62879, 62944, 63049, 63676, 64895, 64935, 65098, 65286, 65563, 65564, 65565, 65616, 65672, 65677, 65879, 66014 (Total Student Count:43)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध (दसवीं)

57225, 57308, 57310, 57312, 57386, 57813, 57954, 57992, 58114, 58528, 58535, 59894, 60161, 60872, 61065, 61253, 62106, 62112, 62114, 62117, 62119, 63026, 63350, 63351, 65336, 65633, 65664, 65816, 66082 (Total Student Count:29)

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं)

57086, 57582, 57583, 57585, 57744, 57746, 59611, 59613, 60805, 60873, 60874, 61721, 62053, 62581, 62827, 62940, 63846, 63847, 63848, 64412, 65755, 65817 (Total Student Count:22)

जैन सिद्धान्त रत्नाकर- उत्तरार्द्ध (बारहवीं)

57517, 57555, 57748, 59615, 59619, 59948, 60875, 60876, 60877, 60878, 60879, 61066, 61067, 61068, 61069, 61776, 61789, 62054, 62137, 63829, 63850, 64520, 64849, 65101, 65821 (Total Student Count:25)

जैन सिद्धान्त शास्त्री - पूर्वार्द्ध (तेरहवीं)

57749, 57993, 60132, 60133, 61799, 62055, 62082, 62899, 63088, 64096, 64994, 65315, 65333, 65404, 65673, 66015 (Total Student Count:16)

जैन सिद्धान्त शास्त्री - उत्तरार्द्ध (चौदहवीं)

57518, 57519, 57751, 57850, 62083, 63112, 63113, 63828 (Total Student Count:8)

परिणाम रोका गया :-

Centre Code. 311, 62577, 58188, 65791, 63968, 60482, 60677, 60683, 65809, 65810

आवेदक	उपस्थित	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
8862	4952	3523	71.14%

बोर्ड की आगामी परीक्षा 10 जनवरी 2010 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 8 तक की आगामी परीक्षा 10 जनवरी 2010, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें–

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन–0291–2630490

www.jainratnaboard.com, Email: info@jainratnaboard.com

19 जुलाई 2009 की परीक्षा का परिणाम (Result) देखने एवं 10 जनवरी 2010 की परीक्षा हेतु आवेदन करने के लिए बोर्ड की वेबसाइट www.jainratnaboard.com का उपयोग कर सकते हैं।

सुशीला बोहरा	राजेश कर्णावट	धर्मचन्द जैन
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार
9414133879	9414128925	9413818100

क्षमा-याचना

'जिनवाणी' पत्रिका के समस्त पाठकों एवं लेखकों से हमारा नियमित सम्बन्ध रहता है। हमारी ओर से रही भूल के कारण आपके हृदय को ठेस पहुँचना स्वाभाविक है। हम अपनी भूल का परिमार्जन करते हुए आपसे निर्मल हृदय से क्षमा याचना करते हैं। आशा है आप क्षमा करेंगे।

–सम्पादक, सह सम्पादक एवं जिनवाणी परिवार

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की अस्थायी वरीयता सूची

(19 जुलाई 2009 परीक्षा)

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 19 जुलाई 2009 को आयोजित कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा की अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है।

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
62265	प्रेमलता जी कोठारी	विरगमबाकम	99.75	प्रथम
58663	रीतू जी लुणिया	होसपेट	99.5	द्वितीय
58684	राहुल जी गुप्ता	पुरानी डीग	99.5	द्वितीय
58472	प्रेमलता जी जैन	त्रिवेणी नगर (दिल्ली)	99.25	तृतीय
59705	ममता जी सुराना	कोडीटोप	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

62255	तरूणा जी संकलेचा	बैंकाक	99	प्रथम
61678	राजकुमार जी जैन	बैंकाक	98.5	द्वितीय
58686	अनुशका जी जैन	पुरानी डीग	98	तृतीय
61680	नीता जी डागा	बैंकाक	98	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

62693	प्रभा जी जैन	कोलकाता	99.5	प्रथम
59048	वर्षा जी बडेरा	अंबाजोगाई	99	द्वितीय
62845	आरती जी मुथा	अमरावती	98.5	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

63502	भारती जी गांधी	पूना	99.75	प्रथम
62479	रानी जी सुराना	अटरिया बाजार	99.5	द्वितीय
62481	पूजा जी पारख	अटरिया बाजार	99.25	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

65419	मंजूलता जी सुराना	रानीगुन्टा	99.25	प्रथम
65726	आरती जी चोरडिया	जामनेर	98.5	द्वितीय
63504	कान्ता जी पुनमिया	पूना	97.5	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

60358	नागेश्वरी जी	गुम्मेदीपुडी	96.5	प्रथम
60862	सोनल जी पींचा	गोहाटी	94.5	द्वितीय
60036	सुमन जी सुराना	एम.के.बी.नगर	93	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

62456	सरला जी बोथरा	चन्द्रपुर	97	प्रथम
64505	कविता जी चौधरी	अजमेर	96	द्वितीय
62451	सरोज देवी जी बैद	चन्द्रपुर	94	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

62464	निर्मला जी भलगट	चन्द्रपुर	99	प्रथम
57756	मनीषा जी शाह	नागपुर	97	द्वितीय
58533	शोभा जी तेलडा	कूकनूर	96.5	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध (नवमी कक्षा)

57760	अरूणा जी सिंघवी	नागपुर	91.5	प्रथम
62944	शोभा जी लुणावत	भंडगांव	88	द्वितीय
57003	पायल जी बाफना	अहमदाबाद	86.5	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध (दसवीं)

57308	कुसुमबाई जी पुनमिया	इंचलकरंजी	93.5	प्रथम
58535	शिल्पा जी तेलडा	कूकनूर	92	द्वितीय
60872	शोभा जी छाजेड	गोहाटी	91	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर - पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं)

61721	नमीता जी संचेती	रॉयपुरम	94.5	प्रथम
60805	सरोज जी सांड	महावीर नगर, जयपुर	92	द्वितीय
57744	नीता जी जैन	नरडाणा	90	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर - उत्तरार्द्ध (बारहवीं)

59615	पदमा जी डफरिया	पेरमबूर	98	प्रथम
60879	वर्षा जी सुराना	गोहाटी	97	द्वितीय
59619	ललिताबाई जी डागा	पेरमपुर	93	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री - पूर्वार्द्ध (तेरहवीं)

65315	मंजु जी डागा	शांतिनगर, बैंगलोर	96.5	प्रथम
62082	कौशल्या जी सिंघवी	एम.एम.डी.ए.कॉलोनी	96	द्वितीय
60132	सुशीला जी बरमेचा	अम्बटुर	94	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री - उत्तरार्द्ध (चौदहवीं)

57850	चन्द्रकला जी कांकरिया	पीपलगांव	95	प्रथम
57518	लीला जी सालेचा	जलगांव	90.5	द्वितीय
63828	उर्मिला जी बोथरा	जयपुर	84.5	तृतीय

सुशीला बोहरा	**राजेश कर्णावट**	**धर्मचन्द जैन**
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार

समाचार-विविधा

पालड़ी, अहमदाबाद में पर्युषण पर्व पर तप-त्याग एवं धर्माराधन की विशेष लहर

परमाराध्य परम पूज्य, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 16 के पावन सान्निध्य में पालड़ी, अहमदाबाद के एलिसब्रिज स्थानक में पर्युषण पर्व पर धर्माराधना, तपाराधना एवं ज्ञानाराधना का उत्सव सा माहौल रहा। यद्यपि यह चातुर्मास ऐसे क्षेत्र में है जहाँ गुजराती समाज की बहुलता है एवं मारवाड़ी समाज तथा रत्नसंघ परम्परा के गिने-चुने घर हैं, तथापि प्रवचनामृत एवं ज्ञान-ध्यान के प्रति उत्साह में कोई कमी नज़र नहीं आई। शनिवार, रविवार एवं पर्व तिथियों पर विशेष उपस्थिति रही। श्रद्धालु गुरु-भक्तों के दर्शनार्थ पधारने का क्रम अनवरत रूप से चल रहा है। पर्युषण के अवसर पर दिल्ली, कोलकाता, मथुरा, चेन्नई, कुम्भकोणम, विल्लीपुरम (तमि.), बैंगलोर, मैसूर, रायचूर, यादगिरी, बीजापुर, बंगारपेट, बल्लारी, बागलकोट, हैदराबाद, मुम्बई, जलगाँव, इचलकरंजी, जामनेर, माधवनगर (महा.), इन्दौर, रतलाम, सैलाना, खण्डवा, नीमच (म.प्र.), सूरत, नवसारी, वापी, उमरगांव, पालनपुर, जोधपुर, जयपुर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, पीपाड़ सिटी, गोटन, बीकानेर, मेड़ता सिटी, कोटा, सवाईमाधोपुर, गंगापुर सिटी, हिण्डौन सिटी, भरतपुर, हरसोलाव, पाटौदी आदि स्थानों से पर्युषण के अवसर पर 200 से अधिक श्रद्धालु गुरु भक्तों ने आकर धर्माराधना, तपाराधना एवं ज्ञानाराधना का आठ दिन लाभ लिया। साधकों ने पर्वाधिराज पर्व पर प्रतिदिन ग्यारह-ग्यारह सामायिक की तथा क्षमतानुसार एकाशन, उपवास, बेला, तेला, पचोला, अठाई, नौ दिवसीय तपस्याएँ कीं। पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में साधकों को साधना कर आनन्दानुभूति हुई।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. द्वारा सुमधुर शब्दों में प्रार्थना, श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा अन्तगड़ सूत्र का वाचन एवं सम्बन्धित साधना दिवस पर भूमिका मय प्रवचन, तदुपरान्त तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. एवं पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा सारगर्भित, धार्मिक, प्रभावोत्पादक

प्रवचनामृत के वर्षण से सभी आराधकों ने साधना को आगे बढ़ाया। दोपहर में कल्पसूत्र की वाचना श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी ने फरमाई। अपराह्न 3 से 4 बजे तक विभिन्न प्रान्तों से पधारे गुरुभक्तों को पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि का बारी-बारी से सुलाभ मिला। भक्तों ने अपनी भावनाएँ, समस्याएँ, जिज्ञासाएँ पूज्यश्री के श्रीचरणों में रखी तथा पूज्यश्री ने समुचित समाधान के साथ उन्हें संतुष्ट किया। पूज्य गुरुदेव ने प्रत्येक भाई-बहन से दैनिक धार्मिक साधना की व्यक्तिशः जानकारी ली एवं धर्माराधना नियमित करने के साथ उनकी भावना व क्षमता के अनुसार नवीन त्याग-प्रत्याख्यान के नियम करवाकर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। सायंकालीन एवं रात्रिकालीन प्रतिक्रमण तथा संवर-पौषधोपवास बहिनें महासती मण्डल के सान्निध्य में तथा भाई आचार्यप्रवर के सान्निध्य में करते थे। आठों ही दिन दोनों स्थल साधकों से भरे रहे। ज्ञानार्जन करने वाले भाई-बहिन समय-समय पर संत-सतियों की सन्निधि में बैठकर ज्ञानार्जन भी कर रहे थे।

पालड़ी स्थित एलिसब्रीज स्थानक भवन में 9 दिनों तक धर्मध्यान का ठाट लगा रहा। गुजराती भाई-बहन प्रवचनामृत से बहुत प्रभावित हुए एवं पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में तपाराधना कर प्रमोद का अनुभव किया। रात्रि-भोजन त्याग के अनेक प्रत्याख्यान हुए। **पर्युषण पर्व पर लगभग 95 अठाई तप एवं संवत्सरी पर 1100 उपवास सम्पन्न हुए।**

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. ने 15 दिवसीय तप 25 अगस्त को सम्पन्न किया। महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. के चातुर्मास प्रारम्भ से बेले-बेले एकान्तर चल रहे हैं। एलिसब्रीज संघ के मंत्री श्री रमणीकलाल जी शाह ने आडम्बर-प्रदर्शन नहीं करने के साथ रात्रि में सामूहिक भोजन का आयोजन नहीं करने का नियम लिया। लगभग 25 भाई-बहनों ने तपस्या पर किसी प्रकार का अतिथि भोज नहीं करने, आडम्बर-प्रदर्शन नहीं करने का संकल्प लिया। श्री कन्हैयालाल जी घेवरचन्द जी हिरण ने छपे हुए कार्डों को भी एतदर्थ निरस्त कर दिया।

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. के 41 की तपस्या की अनुमोदना में श्री मोतीलाल जी पारख, अमलनेर ने एक साथ 41 एकलठाणे के प्रत्याख्यान कर 1905वें एकलठाणा के प्रत्याख्यान लिए। कान्तादेवी जी जोगड़-पुष्कर ने 30 जुलाई को 1080वें एकासन तप के प्रत्याख्यान लिए। श्री मदनलाल जी बाबेल ने 32 दिवसीय, श्री सुरेश जी गांग ने 31दिवसीय, श्रीमती पूनम बेन ने

31 दिवसीय एवं श्रीमती ममता जी पालगोता ने 31 दिवसीय तपस्या की साधना की। श्री महेश जी सालेचा ने 24 एवं श्री मोहनलाल जी जैन ने 21 दिवसीय तपस्या की। उपवास, बेले, तेले, पचोला, आठ से सोलह तक की अनेक तपस्याएँ चातुर्मास में हुई हैं। अभी भी तपाराधना का क्रम जारी है। पर्युषण पूर्व से ही दो नवरंगी, दया-संवर की आराधना चल रही थी जो 24 अगस्त को पूर्ण हुई है। सम्वत्सरी महापर्व के दिन बरवाला सम्प्रदाय के तपस्वी श्री शान्तिमुनि जी आदि ठाणा 3 पालड़ी उपासरे में पधारे। चातुर्मास में श्रावकरत्न श्री पदमचन्द जी कोठारी एवं उनका परिवार तन-मन से समर्पण के साथ चौबीस घण्टे संलग्न है।

मणीनगर, अहमदाबाद में विराजित महासती-मण्डल के चातुर्मास में हुई धर्माराधना इस प्रकार हैं- श्रावण मास में व्याख्यात्री महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में आयम्बिल एवं तेले की तपस्या की लड़ी प्रारम्भ हुई जो बराबर चल रही है। चार माह के लिए अब्रह्म सेवन का त्याग भी कुछ श्रावक-श्राविकाओं ने किया। इसी प्रकार रात्रि-भोजन, सचित्त जल, जमीकन्द एवं सप्त कुव्यसन के त्याग भी हुए। ज्ञानवृद्धि शिविर में 80 श्राविकाओं ने भाग लिया। युवकों के शिविर में 25 से 30 युवकों ने पच्चीस बोल सीखे। 25 जुलाई को व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा., महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा., महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा. के मासक्षपण की साधना की अनुमोदना में लगभग 150 एकासन तप हुए। व्याख्यात्री महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र पर एवं महासती श्री समर्पिता जी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र के 19वें अध्ययन पर प्रवचन फरमाए। दोपहर 2 से 4 बजे के बीच बच्चों की कक्षा व्याख्यात्री महासती जी ने ली। 42 तेले, 2 चोले, 2 पचोले, 3 अठाई और 10 की भी तपस्याएँ हुईं।

भाद्रपद मास में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 3 दिन के लिए बालकों का शिविर लगाया गया, जिसमें 80 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। पर्वाधिराज पर्युषण पर आठ दिन नवकार मंत्र के अखण्ड जाप चले। बीस बेले, 100 तेले, 5 चोले, 2 पचोले, 15 अठाई, 4 नौ दिवसीय एवं 10 दस दिवसीय तप हुए। प्रार्थना, प्रवचन एवं दोपहर में अच्छी उपस्थिति रही। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा., महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. ने व्याख्यान दिया एवं श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा. ने अन्तगड़ सूत्र का वाचन किया।

ब्यावर में तपाराधन एवं ज्ञानाराधन का उत्साह

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावस प्रवास में तप-त्याग, धर्माराधन एवं ज्ञानाराधन की साधना निरन्तर चल रही है। पुर्यषण पर्व के अवसर पर लगभग 400 से अधिक तेले की तपस्या हुई है। बहनों में नवरंगी एवं भाइयों में 8 दिवसीय दयाव्रत का आराधन हुआ है। चातुर्मास में युवकों का उत्साह प्रशंसनीय है। भाद्रप्रद कृष्णा सप्तमी को महासती श्री उमरावकंवर जी म.सा. की जयन्ती त्यागतपपूर्वक मनाई गई। श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा ने महासती जी के जीवन का हृदयस्पर्शी शब्दों में परिचय दिया। भाद्रपक्ष शुक्ला तृतीया को महास्थविर पन्नालाल जी म.सा. का जन्मदिवस लगभग 300 दयाव्रत की आराधना के साथ मनाया गया। श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व को बहुत सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत किया। श्रावकरत्न श्री हस्तीमल जी गोलेछा ने प्राज्ञ परम्परा के इतिहास के साथ रत्नसंघ परम्परा के सम्बन्धों का उल्लेख किया। श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री मदनसिंह जी कूमट ने भी अपने विचार व्यक्त किये। प्रातःकाल प्रार्थना नवदीक्षित श्री दर्शनमुनि जी म.सा. कराते हैं। श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. आचारांग सूत्र के आधार से तथा उसके पश्चात् मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ओजस्वी वाणी में और अंत में श्रद्धेय श्री उपाध्यायप्रवर प्रवचन फरमाते हैं। प्रवचन में श्रोता की उपस्थिति चातुर्मास के प्रारम्भ से ही बहुत अच्छी रही हैं। पर्युषण पर्व में तो जैन स्थानक की तीनों मंजिले भरी रहती थी। पर्वाराधना काल में प्रतिक्रमण में सांयकाल दो मंजिले भरी रहती थीं। पर्युषण में कल्पसूत्र की वाचना श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी महाराज एवं श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी महाराज फरमाते थे। प्रतिदिन नन्दीसूत्र की वाचना श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर फरमाते हैं। चातुर्मास में अब तक हुई तपस्या का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है- श्री राहुल जी गांधी ने 32 दिवसीय तप किया, तीन 11 उपवास, लगभग 14 अठाई तप एवं अनेक छोटी बड़ी तपस्याएँ हुईं। श्रीमती कौशल्या नवरत्नमल जी भण्डारी बड़ी तपस्या की ओर अग्रसर हैं।

दर्शनार्थी बन्धुओं का आगमन निरन्तर बना हुआ है। अजमेर, विजयनगर, चेन्नई, जोधपुर, बालोतरा, गोटन आदि स्थानों से संघों का आगमनं हुआ है। आवास एवं भोजन व्यवस्था सूरज भवन में की गई है, जो मूलतः ब्यावर निवासी श्रद्धानिष्ठ धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री उत्तमचन्द जी ओस्तवाल, मुम्बई के द्वारा सहर्ष

चातुर्मास में उपयोगार्थ दिया गया है। आगन्तुक अतिथियों की सेवा में स्थानीय वीर संघ के अतिरिक्त श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ परिवार पलक पावड़े बिछाये स्वागत में तैयार रहता है। श्री जैन रत्नयुवक परिषद् के सदस्य पूर्ण श्रद्धाभाव से सेवा में संलग्न हैं। धर्म दलाली में श्री महावीर चंद जी मकाना, श्री अमित जी बोहरा एवं श्री दिलीप जी भण्डारी की सेवाएँ अनुमोदनीय हैं।

महासती मण्डल के सान्निध्य में पर्युषण पर्व पर अपूर्व धर्माराधना

घोड़ों का चौक-जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री **मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6** के पावन सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही धर्माराधन, ज्ञानाराधन एवं तपाराधन का ठाट लगा हुआ है। जोधपुर शहर के मध्य में स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में विभिन्न उपनगरों से श्रावक-श्राविकाएँ अच्छी संख्या में प्रवचन लाभ लेने पधारते हैं। पर्युषण पर्व के आठों दिनों में प्रवचन हॉल पूरा भर जाता था। संवत्सरी के अवसर पर तो श्रावक-श्राविकाओं को सीढ़ियों पर बैठकर प्रवचन का श्रवण करना पड़ा। यहाँ 27 दिवसीय तप का प्रत्याख्यान हुआ है, साथ ही 2 पन्द्रह, 5 ग्यारह, 9 नौ, 21 अठाई, 3 पचोले, 2 चोले, 151 तेले, 5 बेले की तपस्या के प्रत्याख्यान हुए। 6 दया के मासखमण, 10 एकासने के मासखमण, 2 आयम्बिल के मासखमण, 3 नीवी के मासखामण भी पूर्ण हुए हैं। 11 बहनों के एकान्तर चल रहे हैं। पचरंगी 5 तथा 1 नवरंगी हो चुकी है। दया-संवर, पौषध लगातार चल रहे हैं। साध्वीप्रमुखा जी के मुखारविन्द से डॉ. महेन्द्र जी भण्डारी-दासपा हाउस, श्री शान्तिमल जी भण्डारी-शान्तिप्रिय नगर और श्री मनपतलाल जी सिंघवी-जालोरीगेट ने सदार आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए।

भकरी-नागौर- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में विशेष धर्म-ध्यान हुआ है। छोटा ग्राम होते हुए भी यहाँ 1 मासखमण, 1 नौ दिवसीय, 7 अठाई, 7 तेला आदि तप सम्पन्न हुए हैं। पर्युषण के आठ दिनों में नवकार मंत्र का अखण्ड जाप चला है। 1 पंचरंगी हो चुकी है तथा प्रत्येक रविवार को प्रतियोगिता आयोजित होती है।

वर्द्धमान नगर-नागपुर- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 12 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही तेला, उपवास, एकासना एवं आंयबिल की लड़ी चल रही है। श्रद्धेय श्री सागरमुनि जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री

शोभाचन्द्र जी म.सा. की पुण्यतिथि एवं आनन्दऋषि जी म.सा. की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में भाई-बहिनों में दया एवं उपवास की पंचरंगी हुई। पर्युषण पर्व के आठ दिनों में नवकार मंत्र का अखण्ड जाप चला एवं नवरंगी का आयोजन हुआ। अठाई, बेला, तेला भी अच्छी संख्या में हुए। यहाँ 19 अठाई, 4 नौ उपवास, 5 ग्यारह उपवास, तेरह उपवास, पन्द्रह उपवास एवं सत्रह उपवास हुए हैं। महासती श्री विमलेश कंवर जी म.सा आदि ठाणा पर्युषण पर्वाराधना हेतु कांग्रेस नगर के तपस्या भवन श्री घेवरचंद जी झामड़ के निवास पधारे। पश्चिम नागपुर जैन संघ के आग्रह पर महासती मण्डल के सान्निध्य में नवकार मंत्र का अखण्ड जाप चला तथा तपस्या का ठाट रहा। पश्चिम नागपुर जैन संघ की स्थापना पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रेरणा से हुई थी। यहाँ बालकों के लिए त्रिदिवसीय संस्कार-शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें 150 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। वर्द्धमान नगर स्थानक में यह इतिहास रचा गया कि नीचे एवं ऊपर दो स्थानों पर प्रवचन हुए जो यहाँ पहली बार देखा गया। एकासन, उपवास, बेला, तेला, चौला, पचौला सैकड़ों की संख्या में हुए हैं। सभी साध्वियों के एकान्तर तप की आराधना चल रही है। दर्शनार्थी भाई-बहिनों का आगमन निरन्तर जारी है। जबलपुर, चांगोटोला, अमरावती, रायचूर, भंडारा, मौढ़, वणी, धमतरी, जलगॉव, चन्द्रपुर, वरोरा, राजनाँदगाँव, दुर्ग, कजगाँव, चेन्नई, मुम्बई आदि स्थानों से संघ एवं श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ है।

लक्ष्मीनगर -जोधपुर- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के चातुर्मास से लक्ष्मीनगर निवासी पुलकित हैं। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तप-त्याग, दया, पौषध, धर्माराधन एवं ज्ञानाराधन में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह प्रशंसनीय है। प्रवचन सभा में उपस्थिति उल्लेखनीय रहती है। अपराह्न में शास्त्र वाचन का कार्यक्रम चलता है। दो साप्ताहिक शिविर लगाये जा चुके हैं। बालक-बालिकाओं का संस्कार शिविर प्रत्येक रविवार को चातुर्मास प्रारम्भ से ही चल रहा है। धार्मिक प्रतियोगिताएँ, प्रश्नोत्तरी के कार्यक्रम उत्साहपूर्वक चल रहे हैं। पर्युषण में नमस्कार मंत्र का अखण्ड जाप चला। महासती मण्डल की नेश्राय में प्रतिक्रमण, 25 बोल, स्तोत्र एवं थोकड़े सीखे जा रहे हैं। तपस्याओं का क्रम निरन्तर चल रहा है। पर्युषण पर्व तक एक नवरंगी, दो पंचरंगी, धर्मचक्र, एक मासखमण, एक दसदिवसीय, 30 अठाई, 100 तेला, दो माह के एकान्तर के 15 तप हुए हैं। लगभग 300 पौषध एवं अनेक छोटी बड़ी तपस्या हुई।

मलाड-मुम्बई- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5

के पावन सान्निध्य में उत्साहपूर्वक धर्माराधना हो रही है। नियमित प्रवचनों का लाभ सबको मिल रहा है। यहाँ 3 मासखमण तप हो चुके हैं। 3 ग्यारह दिवसीय, 1 दस दिवसीय, 3 नौ दिवसीय, 25 अठाई, 50 तेले से सात की तपस्याएँ हो चुकी हैं। यहाँ अनेक ज्ञानवर्धक एवं गुणवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ है। बच्चों का तीन दिन का शिविर सम्पन्न हुआ है। प्रत्येक रविवार को भी शिविर होता है। दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है।

कोटा- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास से तपाराधन, ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन का ठाट लगा हुआ है। यहाँ 13 से 17 जुलाई तक महिला संस्कार शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 108 महिलाओं एवं बच्चों ने भाग लिया। शिविर में स्वाध्याय संघ की सचिव श्रीमती मोहनकौर जैन, आलनपुर की श्रीमती मोहनी देवी जी तथा श्रीमती कांतिबाई जी जैन ने अध्यापन किया। 20 से 22 जुलाई को सामूहिक तेले का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें 42 तेले की तपस्या सम्पन्न हुई। प्रत्येक रविवार को लघुदण्डक थोकड़े के आधार पर चातुर्मासिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम चल रहा है। यहाँ श्री कैलाश जी मुणोत की धर्मपत्नी श्रीमती मधु जी ने मासखमण तप, श्री घासीलाल जी उनियारावालों की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला जी ने 19 दिवसीय तप तथा माणकचन्द जी लहसोड़ा वालों की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमबाई ने पन्द्रह दिवसीय तप किया है। श्रीमती सीमाबाई एवं गीताबाई ने नौ दिवसीय तप किए हैं। अठाइयाँ अनेक हुई हैं। यहाँ 17 अठाई, 75 तेले हुए हैं। सम्वत्सरी पर पुरुषों एवं महिलाओं के अच्छी संख्या में पौषध हुए हैं।

जयपुर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में श्रावक-श्राविका प्रमुदित हैं। यहाँ 4 मासखमण तप सम्पन्न हो चुके हैं एवं लगभग 25 अठाई, 100 तेले एवं अनेक छोटी बड़ी तपस्या हुई है। श्री पूनमचन्द जी दुगड़ के 22 वां एवं श्री नवरत्नमल जी लुकड़ के पन्द्रवां उपवास चल रहा है। दया की नवरंगी हो चुकी है। पर्युषण में अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ है।

शांतिनगर-बैंगलोर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में उत्साह एवं उमंग का वातावरण है। महासती मण्डल के सान्निध्य में ज्ञान-ध्यान सीखने का अच्छा क्रम चल रहा है। अनेक छोटी बड़ी तपस्याएँ हुई हैं।

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा

4 के पावन सान्निध्य में पीपाड़ शहर में पर्युषण पर्व पर धर्मध्यान एवं तप-त्याग की लहर चली। प्रवचनामृत का पान करने के लिए श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति अच्छी रही। 3 चोले, 1 पचोला, 1 सात, 24 अठाई, 5 नौ, 4 ग्यारह तथा पन्द्रह की तपस्या के प्रत्याख्यान के साथ कई बेले एवं तेले हुए। एक मासक्षपण तप चल रहा है। अभी तक दया के 2 मासखमण, नीवी का 1 मासखमण, एकासना के 24 मासखमण पूर्ण हुए हैं। एकासन सिद्धि तप, 5 धर्मचक्र, 5 पचरंगी, 1 नवरंगी भी सम्पन्न हुए हैं। 17 एकान्तर तप चल रहे हैं। पर्युषण के अष्ट दिवस नवकार मंत्र का जाप अनवरत रूप से चला। आठ दिन में प्रतिदिन 'कौन बनेगा धर्मविजेता' प्रतियोगिता भी आयोजित हुई, साथ ही चातुर्मास में प्रति रविवार भी प्रतियोगिताएँ आयोजित हो रही हैं।

'कर्म सिद्धान्त वारिधि' के प्रथम छः माही पाठ्यक्रम की परीक्षा 24 व 25 जनवरी 2010 को

युगमनीषी, प्रतिपल स्मरणीय, स्वाध्याय-सामायिक के प्रबल प्रेरक, आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में तत्त्वज्ञान एवं कर्म सिद्धान्त का गहन अध्ययन करने वालों के लिये अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 'कर्म सिद्धान्त वारिधि' द्विवर्षीय पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जा रहा है।

(अ) इसमें प्रत्येक छः माह में दो-दो प्रश्न-पत्र होंगे। प्रथम छः माह का संशोधित पाठ्यक्रम इस प्रकार है-

प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम

प्रश्न-पत्र	विषय	अंक
प्रथम	द्रव्यानुयोग भाग 2,कर्म अध्ययन- (आगम अनुयोग ट्रस्ट, अहमदाबाद) (पृष्ठ सं. 1076 से 1217 तक)	35
	कर्मग्रन्थ भाग - 1- पीपलिया बाजार, ब्यावर	30
	कर्मग्रन्थ भाग - 2 - पीपलिया बाजार, ब्यावर	35
द्वितीय	कर्मग्रन्थ भाग - 3 - पीपलिया बाजार, ब्यावर	30
	कर्मग्रन्थ भाग - 4 - पीपलिया बाजार, ब्यावर	35
	तत्त्वार्थ सूत्र- अध्ययन 6 एवं 8 (सर्वार्थ सिद्धि टीका-हिन्दी विवेचन एवं	35

प्रश्नोत्तर सहित)(भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली)

परीक्षा जुलाई - 2010 में प्रस्तावित

(ब) उक्त पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु निम्न पात्रता होना अनिवार्य है-

1. आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर की चौदहवीं कक्षा उत्तीर्ण हो।
2. किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से एम.ए. संस्कृत/जैन दर्शन/प्राकृत भाषा में उत्तीर्ण हो।
3. प्रथम छः माही पाठ्यक्रम की परीक्षा इस प्रकार आयोजित होगी-
   प्रथम प्रश्न-पत्र-24 जनवरी 2010, रविवार दोपहर 12.30 से 3.30 तक
   द्वितीय प्रश्न-प्रत्र-25 जनवरी 2010, सोमवार दोपहर 12.30 से 3.30 तक
4. कर्मसिद्धान्त वारिधि पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले परीक्षार्थियों को पाठ्य-सामग्री शिक्षण बोर्ड कार्यालय द्वारा निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है।

उक्त पाठ्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव आवेदन-पत्र एवं पाठ्यपुस्तकों हेतु तुरन्त सम्पर्क करें- *सुशीला बोहरा (संयोजक), अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2630490, 94141-33879*

जयपुर में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा जयपुर द्वारा 1 व 2 अगस्त 2009 को महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में लाल भवन में द्वि-दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में लगभग 35 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। स्वाध्यायियों को पर्युषण पर्व के पूर्व तैयारी हेतु आयोजित इस शिविर में महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने स्वाध्यायियों को विशेष ज्ञानार्जन करवाया। शिविर के दौरान श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, श्री विजय जी मेहता, श्रीमती शान्ता जी मोदी, श्री जितेन्द्र जी डागा, श्री प्रकाश जी सालेचा, श्री जम्बूकुमार जी जैन, श्री विरेन्द्र जी झामड़ तथा श्री अशोक जी जैन द्वारा भी विभिन्न विषयों पर स्वाध्यायियों को जानकारी दी गई। शिविर में सभी स्वाध्यायियों ने सायंकालीन प्रतिक्रमण तथा रात्रि संवर का लाभ लिया। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा की प्रेरणा एवं श्री वर्द्धमान स्थानक जैन श्रावक संघ, जयपुर के मंत्री श्री विमलचन्द जी डागा का भी मार्गदर्शन शिविर के दौरान प्राप्त हुआ। *-अशोक जैन, संयोजक शाखा जयपुर*

आचार्य हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड का वितरण

जलगाँव- करुणा हृदय परमपूज्य गुरुवर्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के स्मरणार्थ अहिंसा के प्रचार-प्रसार एवं पशु-पक्षियों की हिंसा की रोकथाम के लिए 1. प्राणी रक्षा 2. शाकाहार प्रचार 3. कत्लखानों का विरोध और 4. हिंसक वस्तुओं का निषेध आदि अहिंसा का महत्त्वपूर्ण कार्य तन-मन-धन से करने वाले महानुभावों को श्री रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट की ओर से आचार्य हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड दिया जाता है। अब तक देश के विभिन्न क्षेत्रों के 23 महानुभावों को पुरस्कारों से नवाजा चुका है। इस वर्ष मरुधरज्योति श्री मणिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में खानदेश मिल के विशाल प्रांगण में अगस्त माह में श्री सुभाषचन्द जी मालू-मालेगांव, श्री निर्मलकुमार जी जैन-सतना एवं श्री चिरंजीलाल जी बगडा-कोलकाता इन 3 महानुभावों को विशाल जनसमुदाय के बीच पुरस्कारों से नवाजा गया। प्रत्येक को 31 हजार रुपए, अभिनन्दन पत्र व स्मृति चिह्न (अवार्ड) भेंट स्वरूप गणमान्य व्यक्तियों के कर-कमलों से प्रदान किए गए। *-श्री रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव*

स्वाध्यायियों द्वारा पर्युषण पर्वाराधन सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा इस वर्ष पर्युषण पर्व में 17 से 24 अगस्त 2009 तक राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, गुजरात, कर्नाटक, कोंकण, आन्ध्रप्रदेश के लगभग 170 ग्राम-नगरों में स्वाध्यायी भेजकर धर्माराधना का कार्यक्रम करवाया गया। स्वाध्याय-संघ से प्रतिवर्ष विभिन्न राज्यों के साधु-साध्वियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम-नगरों में स्वाध्यायी भेजकर पर्युषण पर्वाराधन पर तप-त्याग, सामायिक, स्वाध्याय, ज्ञानाराधन एवं धर्मक्रिया करायी जाती है।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति हेतु आवेदन करें

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित एवं गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत आवेदन करने हेतु अन्तिम तिथि 31 अगस्त से बढ़ाकर 30 सितम्बर 2009 कर दी गई है। आवेदन करने के नियमों की जानकारी अगस्त, 2009 की जिनवाणी में प्रकाशित की गई है। आवेदन-पत्र की प्रतिलिपि भी मान्य है तथा विशेष जानकारी बेबसाइट **www.jainYuvaratna.org** पर उपलब्ध है। वहाँ से आवेदन-पत्र डाउनलोड भी किया जा सकता है। विभिन्न वर्गों में

6000 रुपये से लेकर 27,500 रुपये प्रतिवर्ष के हिसाब से छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। जो छात्र इस छात्रवृत्ति को ऋण रूप में स्वीकार कर लौटना चाहें, उनके लिए वैसा प्रावधान किया गया है। आवेदन पत्र मंगवाने एवं प्रेषित करने हेतु पता- **Shri B. Budhmal Bohra, No. 53, Erulappen Street, sowcarpet, Chennai-600079, Ph. 044-25299069**

वेदों की भाषा का सम्बन्ध प्राकृत से है-प्रो. नामवर सिंह

जयपुर- वेदों की भाषा छांदस का संबंध जितना संस्कृत से है उससे कहीं अधिक प्राकृत से है। भारत की अधिकांश भाषाओं का विकास प्राकृत भाषा से हुआ है। ये विचार राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना के अन्तर्गत जयपुर में दिनांक 25 से 27 जुलाई 09 तक आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी के समापन अवसर पर हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध समालोचक तथा साहित्यकार प्रो. नामवर सिंह, दिल्ली ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि प्राकृत जनभाषा रही है तथा हमें उसके संरक्षण हेतु प्रयास करते रहना चाहिए। ज्ञातव्य है कि भारत सरकार द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का विधिवत् उद्घाटन 25 जुलाई को अणुविभा केन्द्र, जयपुर में हुआ। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष तथा संस्थान के कुलपति आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने अध्यक्षीय भाषण में प्राकृत भाषा की उपेक्षा के प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त की। सारस्वत अतिथि आचार्य कमलेशदत्त त्रिपाठी ने संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त प्राकृतों का यथावत् प्रयोग करने पर बल दिया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय में भाषा विभाग की निदेशक श्रीमती रीता चटर्जी ने प्राकृत भाषा के विकास में सहयोग देने की बात कही। आधार वक्तव्य देते हुए आचार्य सत्यप्रकाश शर्मा ने कहा कि हम प्राकृत को जैनों की भाषा मानकर इसकी उपेक्षा कर देते हैं, किन्तु प्राचीन साहित्यकारों ने ऐसा कभी नहीं किया। उद्घाटन के मुख्य अतिथि राजस्थान के पूर्व राज्यपाल न्यायमूर्ति श्री अंशुमान सिंह थे। उक्त संगोष्ठी 'प्राकृत साहित्य के संदर्भ में भारतीय परम्परा की बहुलता और विविधता' विषय पर आधारित थी। समापन समारोह की मुख्यातिथि मानव संसाधन विकास मंत्रालय में भाषा की संयुक्त सचिव डॉ. अनीता भटनागर ने एक प्राकृत अकादमी की स्थापना की बात कही। संगोष्ठी में देशभर से प्राकृत के लगभग 50 विद्वानों में जिनवाणी के सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन एवं सह सम्पादक डॉ. श्वेता जैन ने भी

शोधपत्र प्रस्तुत किए। *-डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, जयपुर*

डॉ. एस.एल. नागौरी की 114वीं पुस्तक लोकार्पित

बून्दी- ख्यातनाम इतिहासकार, समाजसेवी एवं धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न डॉ.

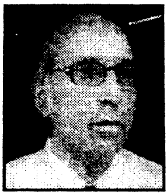

एस.एल. नागौरी की 114वीं पुस्तक 'गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी' का लोकार्पण महोत्सव आदर्श विद्या मन्दिर के विशाल कक्ष में सम्पन्न हुआ। लोकार्पण डॉ. जीतेश नागौरी, ज्वाईंट कमिश्नर, अहमदाबाद द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध समाजसेवी एवं आगमों के विद्वान् प्रेमचन्द जी कोठारी एवं विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार गणेशलाल गौतम थे। अध्यक्षता डॉ. जीतेश नागौरी, ज्वाइंट कमिश्नर, अहमदाबाद ने की। डॉ. एस.एल. नागौरी गृहस्थाश्रम में रहते हुए पिछले 18 वर्षों से ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं और रात्रि में 11.30 से 5.30 तक सात सामायिक करते हैं। उन्होंने पिछले सात वर्षों से घी एवं शक्कर का त्याग कर रखा है एवं एक समय भोजन लेते हैं। डॉ. नागौरी राष्ट्र संत श्री कमलमुनि जी 'कमलेश' एवं प्रखरवक्ता श्री चन्द्रेशमुनि जी के बड़े सांसारिक भ्राता हैं।

-जीतेन्द्र कोठारी, एडवोकेट, बून्दी

संसद भवन में गूंजी प्राकृत जैन सरस्वती वन्दना

नई दिल्ली- 19 अगस्त 2009 को बयालीसवें ज्ञानपीठ पुरस्कार सन् 2006 के अवसर पर संसद भवन के पुस्तकालय में आयोजित भव्य समारोह की शुरुआत पहली बार प्राकृत भाषा की सरस्वती वन्दना से हुई जिसे दूरदर्शन उद्घोषिका डॉ. इन्दू जैन, नई दिल्ली (**Joint Secretory Jinfoundation**) ने मधुर शास्त्रीय स्वर में प्रस्तुत कर उपस्थित गणमान्य लोगों का मनमोह लिया। ज्ञातव्य है कि डॉ. इन्दु जैन प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा में शास्त्रीय संगीत की शैली में यह प्रस्तुति अनेक सरकारी तथा सामाजिक कार्यक्रमों में कर चुकी हैं।

स्वयंभू पुरस्कार-2009

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर के वर्ष 2009 के स्वयंभू पुरस्कार के लिए अपभ्रंश से सम्बन्धित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की

चार प्रतियाँ 31 अक्टूबर, 2009 तक आमन्त्रित हैं। इस पुरस्कार में 31000/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर, 2006 से पूर्व प्रकाशित तथा पहले से पुरस्कृत कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जायेगी। नियमावली तथा आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिए अकादमी कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-4 से पत्र व्यवहार करें। - *डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक-0141-2385247*

सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षार्थ सहायता योजना

ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली जैन बच्चों के लिए सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। सहायता के लिए अपना आवेदन पूरे विवरण से निम्नांकित पते पर भेजें- GP. Capt. V.K.Jain (Retd.), Gyanoday Charitable Society, 572, Asiad Village, New Delhi-110049, Ph. 011-26493538/26492386। श्रीसंघों के कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि अपने नगर के योग्य जैन विद्यार्थियों की सहायता हेतु ऊपर लिखे पते पर सम्पर्क करें।

अखिल भारतीय जैन तत्त्व दर्शन प्रतियोगिता आयोजित

श्री अ.भा. वीर लोंकाशाह बाल मंच द्वारा श्री अखिल भारतीय जैन तत्त्व दर्शन प्रतियोगिता "क्या है जैन धर्म?" आयोजित की गई है। इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत 1008 प्रश्नों की एक पुस्तिका प्रकाशित की गई है। इस प्रश्नपुस्तिका में ही उत्तर लिखना है। प्रतियोगिता में जैन/अजैन सभी भाग ले सकते हैं। प्रश्नपुस्तिका का मूल्य 30/- (डाक द्वारा 40/-) रखा गया है। प्रश्नपुस्तिका प्राप्त करने एवं जमा कराने का पता है- श्री अ.भा. वीर लोकाशाह बाल मंच, द्वारा श्री पुष्पेन्द्र जी बडाला, ककरीना एन एक्स, शॉप नं. 2, नवकार कॉम्पलेक्स,यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर-313001 (राज.), मो. 09414682364

अजमेर में कत्लखाना शुरु होने से रुका

अजमेर के माखुपूरा में एक आधुनिक कत्लखाना खुलने जा रहा था, जिसका विभिन्न अहिंसा-समर्थकों द्वारा विरोध किए जाने के कारण नगर निगम प्रशासन, अजमेर ने आधुनिक कत्लखाना (**Slaughter house**) नहीं

खोलने का निर्णय लिया है। इस निर्णय की सूचना कार्यालय जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, अजमेर द्वारा पत्रांक/कअ/सामान्य/05/6475 दिनांक 23 जुलाई 2009 द्वारा जमशेदपुर के श्रावकरत्न इंजीनियर डॉ. जीवराज जी, जमशेदपुर जैन को प्रेषित की गई। डॉ. जीवराज जैन ने इस कत्लखाने का विरोध तार्किक ढंग से किया। जिनवाणी के प्रस्तुत अंक में प्रकाशित उनका लेख **"Empowering Vegetarianism"** भी आँखें खोलने वाला रहा। डॉ. जीवराज जी जैन ने प्रधानमंत्री कार्यालय को 29 मई को पत्र भेजा, जिसे 15 जून को कार्यालय ने मुख्य सचिव राजस्थान सरकार को प्रेषित किया। 30 जून को जनशिकायत निराकरण विभाग ने इसे अजमेर कलेक्टर को प्रेषित किया। शोध आंकड़ों एवं जन-विरोध को ध्यान में रखते हुए यह कत्लखाना नहीं खोलने का निर्णय किया गया।

महावीर पुरस्कार वर्ष 2009 एवं ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया पुरस्कार-2009

प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान, श्री महावीरजी के वर्ष 2009 के महावीर पुरस्कार के लिए जैनधर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति आदि से सम्बन्धित किसी भी विषय की पुस्तक/शोध प्रबंध की चार प्रतियाँ 31 अक्टूबर 2009 तक आमन्त्रित हैं। इस पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कृति को 51000/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कृति को ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया साहित्य पुरस्कार 5001/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर 2006 के पश्चात् प्रकाशित पुस्तक ही इसमें सम्मिलित की जा सकती है। नियमावली तथा आवेदन पत्र प्रारूप प्राप्त करने के लिए संस्थान कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-4 से पत्र व्यवहार करें। *-डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक-0141-2385247*

बधाई/चुनाव

बेलगाँव- सुश्री वंशीका गोगड़ सुपुत्री श्री लालचन्द जी गोगड़ ने 4 वर्ष की अल्पवय में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के चातुर्मास में भाग्यप्रभा जी म.सा. की प्रेरणा से

प्रतिक्रमण (अणुव्रत तक), भक्तामर (40 गाथा), 12 भावना, पुच्छिस्सुणं, दशवैकालिक (3 अध्ययन) कण्ठस्थ किए हैं। साथ ही गोगड़ परिवार की मयूरी (12 वर्ष), दिया (11वर्ष), अक्षत (10वर्ष), प्रेरणा (9वर्ष) ने प्रतिक्रमण, भक्तामर स्तोत्र, 12 भावना, 25 बोल, पुच्छिस्सुणं, दशवैकालिक के तीन अध्ययन कण्ठस्थ किए हैं। चैनराज जी गोगड़ एवं श्री लालचन्द जी गोगड़ ने अपने बच्चों को सत्संस्कार देकर महनीय कार्य किया है।

जोधपुर- श्री सचिन भाण्डावत (छात्र- कक्षा XII दिल्ली पब्लिक स्कूल,

जोधपुर) सुपुत्र श्रीमती बिन्दूजी एवं श्री संदीप जी भाण्डावत, सुपौत्र श्रीमती नलिनी जी एवं डॉ सम्पत सिंह जी भाण्डावत ने वर्ष 2009 में एल.एन. बिड़ला इन्टर इन्स्टीट्यूट, इण्टरनेशनल पब्लिक स्कूल, जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अर्जित किया। प्रतियोगिता का विषय था-''यंग पार्लियामेन्टेरियन केन प्रूव टू दी बेटर लीडर''। 'संघरत्न' सम्मान से सम्मानित संघ संरक्षक डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत के पौत्र को धार्मिक ज्ञान में सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल कण्ठस्थ हैं। सत्संग-सेवा और संत-समागम के रसिक युवारत्न को जब भी समय मिलता है दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण के लाभ के साथ उपवास आदि तप में भी वह सदा सक्रिय रहता है। पारिवारिक संस्कारों से संस्कारित मास्टर सचिन जीवन-निर्माण की दिशा में सजग है।

जोधपुर- श्री उदित कुमार जैन पुत्र श्री पारसमल जैन (खेरलीगंज वाले) ने इस वर्ष IIT-JEE 2009 की परीक्षा उत्तीर्ण कर राजीव गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम टेक्नोलॉजी, रायबरेली में पेट्रोलियम रिफाइनिंग ब्रांच में B.Tech हेतु प्रवेश लिया है।

मांडल- सुश्री नेहा सुपुत्री श्री विजय कुमार जी खिंवसरा, मांडल ने इंजीनियरिंग

डिप्लोमा पूना यूनिवर्सिटी, चांदवड़ से 82 प्रतिशत अंक प्राप्त कर वरीयता सूची में नाम दर्ज करवाया है। इन्हीं की बहिन सुश्री श्रद्धा खिंवसरा ने भी एम.एस.सी. फाइनल में विशेष

योग्यता के अंक प्राप्त कर कॉलेज में उच्च स्थान प्राप्त किया है। ज्ञातव्य है कि दोनों बहनें रत्नवंश में दीक्षित महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा. की सांसारिक बहनें है

तथा दोनों ही स्वाध्याय संघ, जोधपुर की स्वाध्यायी हैं।

बालोतरा- श्री अभिषेक बांठिया सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने निरमा युनिवसिर्टी, गुजरात से एम.टेक.में स्वर्णपदक प्राप्त किया है। उन्हें स्वाधीनता दिवस पर उपखण्ड प्रशासन बालोतरा द्वारा सम्मान प्रदान किया गया।

सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण छात्र

1. श्री मोहित बांगाणी सुपुत्र श्री सुभाषचन्द जी बांगाणी एवं सुपौत्र श्रीं रेखचन्द जी बांगाणी, कोलकाता।
2. श्री रोहित गांधी सुपौत्र श्रीमती सम्पतबाई सुपुत्र श्री सुरेन्द्र जी गांधी, अजमेर।
3. सुश्री आकांक्षा जैन (रांका) सुपुत्री श्रीमती सुमन-सुरेश रांका एवं सुपौत्री श्रीमती विमलादेवी-स्व. श्री पृथ्वीराज जी रांका, जोधपुर।
4. श्री महेन्द्र मोदी सुपुत्र श्रीमती बसन्ती देवी-अशोकनाथ मोदी एवं सुपौत्र श्रीमती कमलादेवी-स्व. श्री सुमेरनाथ जी मोदी, जोधपुर।

श्रद्धाञ्जलि

शासनसेवा समिति के सदस्य अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री गणेशमल जी भण्डारी का बैंगलोर में असामयिक स्वर्गवास

बैंगलोर :- श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, संघसेवी सुश्रावक श्री गणेशमल जी भण्डारी सुपुत्र दृढ़धर्मी श्रावकरत्न स्व. श्री सुगनमल जी भण्डारी, निमाज वालों का 25 अगस्त 2009 को 66 वर्ष की आयु में असामयिक स्वर्गवास हो जाने से संघ में अपूरणीय क्षति हुई है। वे रत्नसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, शासन सेवा समिति के सम्माननीय सदस्य एवं संघसेवी-संतसेवी, सहृदय, उदारमना और दूरदर्शी श्रावक थे। गुरु के प्रति अटूट आस्था, संघ के प्रति समर्पण एवं संघ के हर व्यक्ति के प्रति उनका लगाव उनकी मौलिक विशेषता थी।

पुण्यभूमि निमाज में भंडारी कुल में जन्म पाकर माता-पिता द्वारा प्रदत्त गुरुभक्ति एवं संघसेवा के सुसंस्कारों को वर्धापित करते हुए दक्षिण में गुरुभक्ति एवं संघ सेवा का जो उच्च आदर्श भंडारी साहब ने प्रस्तुत किया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। वह सदैव स्मरणीय, अनुकरणीय एवं अनुमोदनीय रहेगा। उनकी

धर्म-श्रद्धा, गुरु के प्रति एकनिष्ठता तो आगम में आए ''अट्ठि मिंज्ज पेमाणुरागरत्ते'' के वचनों को सार्थक करने वाली थी।

युगद्रष्टा-युगमनीषी पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के वे अत्यन्त विश्वस्त श्रावकों में से एक थे, इसीलिए आचार्य भगवन्त ने शासन सेवा समिति की स्थापना के साथ उन्हें सेवा-धर्म की साधना से जोड़ा। वे साधु समाचारी के जानकार श्रावक थे। सम्प्रदायों के परस्पर प्रेम-सम्बन्धों की उन्हें गहरी जानकारी थी। श्रावक समाज में भी उन्होंने अपने प्रभावशाली कृतित्व से एक विशिष्ट पहचान बना ली थी, इसीलिए घर-परिवार में, संघ-समाज में, अपने-परायों में उनका मान-सम्मान, प्रभाव तथा वर्चस्व था।

'गुरु एक : सेवा अनेक' की उक्ति उनके जीवन का आदर्श रही। जैन जगत् के ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा., उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा., बहुश्रुत पं. रत्न श्री समर्थमल जी म.सा., मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा., आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा., आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. प्रभृति अनेक संत-मुनिराज एवं महासतियाँ जी महाराज की सेवा-भक्ति में उन्होंने तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से सेवाएँ दी।

गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के दक्षिण प्रवास में उन्होंने सेवा का अपूर्व लाभ लिया। गणेश जी जैसे चन्द संघसेवियों के आग्रह-अनुरोध एवं सेवा के प्रति जज्बा जान-देखकर आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने महाराष्ट्र के चार चातुर्मास पश्चात् बैंगलोर महानगर का यशस्वी वर्षावास किया। सुश्रावक श्री गणेशमल जी भण्डारी की युक्ति, भक्ति और शक्ति का ही सुफल कहा जा सकता है कि बैंगलोर महानगर में गुरु हीरा के प्रति सकल जैन समाज में प्रभाव परिलक्षित हो सका। बैंगलोर चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना और परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग के सुन्दर रूप से शासन की दीप्ति आने वाले कई वर्षों तक याद रहेगी। श्रावकरत्न श्री गणेशमल जी भण्डारी ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर का अध्यक्षीय दायित्व बड़ी खूबी से संभाला और आचार्यप्रवर के चातुर्मास को सुनियोजित तरीके से सफल बनाने में बैंगलोर के प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों का सामंजस्य पूरे वर्षावास बना रहा, जिसे विशेष उपलब्धि कहें तो भी उसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। संघप्रिय श्रावकरत्न सिद्धान्त-पालन, सम्यक् आचार एव संघ की गौरव-गरिमा के प्रबल

पक्षधर थे। किसे-कब और कैसे समझाना, उन्हें बखूबी आता था। आचार्यप्रवर के बंगारपेट एवं बीजापुर चातुर्मास की सफलता में भाई गणेश जी का योगदान कर्नाटक प्रदेश के श्रावक कभी भूल नहीं सकते।

संत-सतियों के लिए 'अम्मापियरो' के विरुद को निभाने वाले भंडारी साहब हर संत-सती के रत्नत्रय आराधना में अभिवृद्धि में उचित मार्गदर्शन प्रदान करते। साथ ही उत्कृष्ट भावनाओं से सुपात्र-दान का लाभ प्राप्त करने में सजग रहते। वर्तमान में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा की सेवा-सुश्रुषा, में सर्वतोभावेन सेवा का अनुपम सुलाभ ले रहे थे।

रत्नसंघ में परस्पर परिचय और प्रेमभाव बढ़े, इस अवधारणा को मूर्तरूप देने के लिए बैंगलोर में सर्वप्रथम दो दिवसीय अधिवेशन रखा गया, अधिवेशन की सफलता में संघसेवी श्रावकरत्न श्री गणेशजी का योगदान प्रेरणायी रहा। बैंगलोर अधिवेशन के अनन्तर जयपुर में वृहद् सम्मेलन एवं तदनन्तर जोधपुर में रत्नसंघीय सम्मेलन से संघ में आत्मीयता-अपनत्व तो बढ़ा ही, संध की उन्नति में श्रावक-श्राविकाओं की बिखरी ताकत सामने आई। कहना चाहिये बैंगलोर अधिवेशन की रूपरेखा संघ एकीकरण का सूत्र बनी, उसमें बैंगलोर के सुज्ञ श्रावकों में भाई गणेश जी का चिन्तन सदा स्मरणीय रहेगा।

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. की दीक्षा में आपकी महनीय भूमिका रही। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के संथारे के समय आपकी सेवाएँ, संघहितचिन्तनपरक सूझबूझ व वात्सल्य भावपूर्ण गुरुभाइयों की सेवा-लाभ सदा स्मरण रहेंगे। संघ के सर्वोच्च सम्मान 'रत्नसंघ' से आपको वर्ष-2007 में भोपालगढ़ में सम्मानित किया गया था।

वे स्पष्ट वक्ता थे। अपनी बात प्रामाणिकता से रखने में उन्हें कभी संकोच नहीं हुआ। वे संघ के लिए हर समय ढाल बनकर समुद्यत रहते थे। सरलता, सहृदयता, सहजता, स्वाभिमानता और उदारता जैसे सद्गुण उनमें कूट-कूट कर भरे हुए थे। संघहितैषी, संघहितचिन्तक श्रावकरत्न की कमी सहज भुलाई नहीं जा सकेगी।

आपकी धर्मसहायिका, सुश्राविका श्री कंचनकंवर जी भण्डारी का उन्हें सर्वविध सहकार प्राप्त था। वे अपने पीछे सुयोग्य सुपुत्र श्रावकरत्न श्री गौतमचन्द जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

अमलनेर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्री मोहनलाल जी संचेती एवं धर्मनिष्ठ सुश्राविका सौ. चांदा बाई जी संचेती का 7 जुलाई 2009 को स्वर्गगमन हो गया। सुश्रावक एवं सुश्राविका का एक ही रात्रि में स्वर्गगमन होना संयोग ही रहा। श्री मोहनलाल जी संचेती ने पूज्य गुरुदेव अक्षयऋषि जी म.सा. के मुखारविन्द से सायंकाल में संथारा ग्रहण किया तथा रात्रि में समाधिमरण को प्राप्त हुए। तत्पश्चात् लगभग सवा घंटे बाद ही उनकी धर्मसहायिका सौ. चांदाबाई जी संचेती का भी धर्म आराधना करते हुए स्वर्गगमन हो गया। आप दोनों का जीवन सरलता, सहिष्णुता एवं उदारता से परिपूर्ण था। आपके द्वारा प्रदत्त संस्कारों से ही आपके सुपुत्र श्रीमान् राजमल जी संचेती एवं सुपुत्री सौ. मधुबाला जी ओस्तवाल स्वाध्याय संघ के स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ संघ को निरन्तर प्रदान कर रहे हैं।

बरगमा- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रेमवती देवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री हरिचन्द

जी जैन का 78 वर्ष की आयु में 13 जुलाई 09 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतियों के प्रति अटूट आस्था थी। आप रत्नसंघ में दीक्षित महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. की दादीजी थी।

उमरी- सेवाभावी सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी दर्डा का 7 जून 09 को हृदयगति रुक

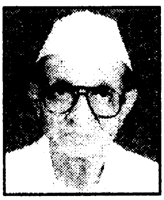

जाने से अकस्मात् निधन हो गया। आप सरलहृदय एवं उदार व्यक्तित्व के धनी थे। विगत 25 वर्षों से आप अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के ज्योतपुर केन्द्र के आप विगत आठ वर्षों तक अधीक्षक रहे। आप अपने पीछे पुत्र श्री पारसमल जी, महावीर जी, विनोद जी दर्डा एवं उनके भरे-पूरे परिवार को छोड़कर गए हैं।

इचलकरंजी- सुश्रावक श्री पोपटलाल जी केशरमल जी बोरा (करमालावाला)

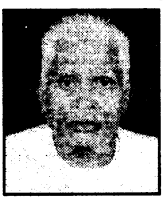

का 15 जुलाई 09 को हृदयगति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं हंसमुख स्वभाव के थे। आपने अपने जीवनकाल में प्रतिदिन सामायिक, प्रत्याख्यान आदि नियमों का पालन किया।

चेन्नई- श्रीमती पारस कंवर जी धर्मपत्नी श्री रतन चन्द जी बोहरा का देहावसान

2अगस्त 2009 को 80 वर्ष की वय में हृदयगति रूक जाने से हो गया। आप प्रतिदिन पोरसी, तीन सामायिक एवं प्रतिक्रमण नियमित रूप से करती थीं। आपका जीवन समतापूर्ण एवं धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी बोहरा तथा सुपुत्री श्रीमती किरणदेवी जी चोरडिया का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

इन्दौर- धर्मप्रिय वरिष्ठ सुश्रावक श्री लखमीचन्द जी मंडलिक का 27 जुलाई

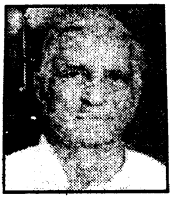

2009 को 81 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपका सम्पूर्ण जीवन त्याग, संयम व समर्पण का प्रतीक था। नियमित पाँच सामायिक, प्रतिक्रमण एवं धर्मशास्त्रों का स्वाध्याय करना आपके जीवन का लक्ष्य था। आपके सुपुत्र श्री अशोक जी मंडलिक अपने पिताश्री के आदर्शों के अनुरूप धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर सेवाकार्यों में योगदान कर रहे हैं। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के ऐतिहासिक इन्दौर वर्षावास में आपका सक्रिय योगदान रहा।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री लूणकरण जी बच्छावत का 70 वर्ष की आयु में

10 जुलाई 2009 को स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन अधिकांश समय सामायिक-स्वाध्याय, साधना, आराधना में व्यतीत करते थे। आपका जीवन सरलता, सहिष्णुता, उदारता आदि गुणों से ओत-प्रोत था। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आप सेवामन्दिर, रावटी से जुड़े हुए थे।

चालीसगांव- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बनेचंद जी नगराज जी बाफना का दिनांक 23 अगस्त 2009 को 83 वर्ष की आयु में पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए 31 वें एकासनव्रत के दिन हृदयगति रुक जाने से महावीर भवन, जोधपुर में संथारा के साथ समाधिमरण हुआ। आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपने शीलव्रत धारण किया था। आप अपने पीछे सुसंस्कारित भरापूरा परिवार छोड गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

संवाद के नये प्रश्न के उत्तर आमंत्रित

प्रश्न- रास्ते में कहीं मरा हुआ पशु पड़ा हो अथवा बीमार पशु हो तो उस समय हमारा क्या कर्त्तव्य बनता है तथा हम किन संस्थाओं से सम्पर्क कर सकते हैं?

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12115 Shri Amit ji Kochar, Shahi Baugh, Ahmedabad (Gujrat)
12120 महावीर भवन, जैन स्थानक, 461 बी, सेक्टर-15, फरीदाबाद (हरियाणा)
12122 Shri Prakash Chand ji Lodha, Bangalore (Karnataka)
12125 श्री विनोद कुमार जी कांकरिया, कुबेर नगर, बस स्टेण्ड के पास, अहमदाबाद (गुजरात)
12128 श्री महेन्द्रकुमार जी जैन, राजपूत सभा भवन के सामने, पावटा बी रोड, जोधपुर (राज.)
12129 श्री हुकमचन्द जी भंडारी, खानदेश मिल कॉम्पलेक्स, नेहरू चौक, जलगाँव (महाराष्ट्र)
12131 श्री राजेन्द्र कुमार जी लूणिया, ए-341, रिषभ, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राजस्थान)
12132 श्री नरेन्द्र कुमार जी लूणिया, सी-119, प्रेम हाउस, शास्त्री नगर, जोधपुर (राजस्थान)
12133 Shri Dinesh ji Jain, Kandiwali (East) Mumbai (M.H.)
12134 Shri Amrit Lal ji Dhariwal, Chennai (Tamilnadu)
12136 Shri Sohanraj ji Sri Srimal, Bangalore (Karnataka)
12137 श्री नवरतन जी जारोली, घंटाघर चौराया, नीमच रोड, बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12138 श्री प्रेम जी औदिच्य, 1-क-10, शिवमार्ग, सेक्टर-5, हिरण मगरी, उदयपुर (राजस्थान)
12139 श्री रोशनलाल जी मेहता, अहिंसा पथ, तृप्ति सदन, सिंगोली, जिला-नीमच (म.प्र.)
12140 श्री विजीतजी नवलखा, प्रेम निकेतन, मोती डूंगरी रोड, गणेश कॉलोनी, जयपुर (राजस्थान)
12141 सुश्री आशा जी जैन, बी-17-ए, रंगरूप अपार्टमेन्ट, विद्युत नगर-बी, जयपुर (राजस्थान)
12142 श्रीमती शशिजी जैन, चंदाप्रभुजी का छोटा मंदिर, संकरी टोला चौक, लखनऊ (उ.प्र.)
12143 श्री महावीरप्रसादजी जैन(राज. पुलिस), वृन्दावन विहार, नन्दमहल रोड,जयपुर (राजस्थान)
12149 Shri Parasmal ji Jain, 67, M.C.Road,Chennai (Tamilnadu)
12150 श्रीमती रजनी जी जैन, ए 8/114, स्वप्न कुंज, कालकाजी एक्सटेंशन, नईदिल्ली
12151 श्रीमती शैला जी जैन, 183/2, वार्ड-3, पार्श्वनाथ अपार्टमेन्ट, महरोली, नईदिल्ली
12164 श्री रोहन जी सिंघवी, (सिलीकॉन रिज़), राजापुष्पा प्रोपर्टी, अतापुर, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
12165 श्री मुकेश जी जैन, रेलवे कॉलोनी, कोटा जंक्शन (राजस्थान)
12166 श्री उगमराज जी मेहता, राम भवन, लखारा बाजार, जोधपुर (राजस्थान)
12167 श्री अध्यक्ष पोरवाल समाज, शाजापुर, कमलाश्री, सर्राफा बाजार, शाजापुर (मध्यप्रदेश)
12168 श्री अध्यक्ष महावीर भवन, माहुपुरा, कमलाश्री, सर्राफा बाजार, शाजापुर (मध्यप्रदेश)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12117 श्री जितेन्द्र जी जैन, पोस्ट-बिच्छगोवाँ, तहसील-लक्ष्मणगढ़, जिला-अलवर (राजस्थान)
12144 श्रीमती तारादेवी जी जैन, सरला सिलाई मशीन, मदनगंज, अजमेर (राजस्थान)
12147 श्री माखनलाल जी जैन, स्कीम नं. 1, आर्य नगर, अलवर (राजस्थान)
12148 श्री अनन्तकुमारजी जैन (अध्यापक),जनताकॉलोनी, मुंगस्का,दिल्ली रोड, अलवर (राजस्थान)
12152 श्री विजेन्द्र कुमार जी जैन, जैन कॉलोनी, कजोड़ी का नगला, गंजखेरली, अलवर (राजस्थान)
12154 श्री धनराज जी मेहता, नवकार टेक्टाइल्स, बोम्बे बाजार, मेन रोड, खण्डवा (मध्यप्रदेश)

500/- श्री विमलचन्द धोका, मैसूर के सौजन्य से

12145 Shri H. Babulal ji Khinwasara (Jain), Mysore(Karnataka)
12146 Shri C. Kanmal ji Pitaliya (Jain), Mysore(Karnataka)

500/- डॉ. राजकुमार मेहता, इन्दौर के सौजन्य से

12126 श्री मनोज कुमार जी जैन, 5, महावीर बाग कॉलोनी, एयरपोर्ट रोड, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
12127 श्री विजयसिंह जी सिंघवी (डूँगरीवाले) पोस्ट-छबड़ा-325220, जिला-बारां (राजस्थान)

250/- श्री व्ही पारस भय्या, उज्जैन के सौजन्य से

12116 सौ. प्रतिभा जी गाँधी, 622, रास्ता पेठ, आजाद लेन, प्रशांत हाईटिस, पूना (महा.)
12118 श्री के. एस. जैन जी, म्यूजियम के पास, डिमपीयर नगर, मथुरा (उ.प्र.)
12119 श्रीमती वनिता जी छल्लाणी, मेवाड़ी गेट, ब्यावर, अजमेर (राजस्थान)
12121 श्री एस. एस. चौहान जी, अम्बा जी रोड़, माउण्ट आबू रोड, जिला-सिरोही (राजस्थान)
12123 Shri KalyanChand ji Mutha,Kaladipet,Chennai (T.N.)
12124 श्री जितेन्द्र कुमार जी सुराणा, शांति चौक, नया बास, भोपालगढ़, जोधपुर (राजस्थान)
12130 श्री अरविन्द जी सदावत मेहता, पाल बालाजी के पास, पहली गली, पाल रोड, जोधपुर (राज.)
12135 श्री राजेन्द्र कुमार जी हुण्डीवाल (कांकरिया), निवाली रोड, सैंधवा, बडवानी (म.प्र.)
12153 श्री दीपक कुमार जी जैन, नेशनल पब्लिक स्कूल के पास, गंजखेरली, अलवर (राजस्थान)
12155 श्री मनीष जी गाँधी, केसरियानाथ जी मंदिर के पास, चाँदी हाल, जोधपुर (राजस्थान)
12156 Miss Pawani ji Kawad, Hospet, Ballari (Karnataka)
12157 श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन, ट्रॉफिक कॉलोनी, मेन रोड, रेलवे स्टेशन के पास, जोधपुर (राजस्थान)
12158 श्रीमती चन्द्रकला जी डाबरिया, गोमलपार्क अपार्टमेन्ट, वस्त्रापुर, अहमदाबाद (गुजरात)
12159 श्री अर्जुनराज जी मेहता, प्लॉट नं. 309, सेक्शन 7, न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12160 श्री राजीव जी नाहर, फ्लाई किंग कोरियर सर्विस, एम. जी. रोड, रायचूर (कर्नाटक)
12161 श्री नरेन्द्र जी सुराणा, उदयमंदिर नैनी जी के मंदिर के पास, जोधपुर (राजस्थान)
12162 श्री सुरेन्द्र जी सुराणा, डी-5, कमला नेहरू नगर, प्रथम विस्तार, जोधपुर (राजस्थान)
12163 श्री धनपतचंद जी सिंघवी, प्लॉट नं. 513 ए, 7 सी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार

11000/- श्रीमती किरणदेवी जी, श्री तेजमल जी सुराणा (नागौर वाले), दुर्ग द्वारा शकुन्तला सुरेश जी गोलेच्छा, चेन्नई से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

5100/- श्री उगमचंद जी, कांतिलाल जी कर्णावट, रायपेट-चेन्नई, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा, महासती श्री सोहनकँवर जी म.सा. आदि ठाणा के अहमदाबाद में दर्शन लाभ एवं भगवन्त के मुखारविन्द से शीलव्रत के खंध अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5000/- डॉ. महेन्द्र जी भण्डारी, दासपां हाउस, जोधपुर, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

5000/- श्री रतनलाल जी सी. बाफणा, जलगाँव, सौ.नयनतारा जी बाफणा की अठाई की तपस्या

सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री मोहनलाल जी, पारसमल जी, सुशील कुमार जी, आनन्द कुमार जी, श्रीमती उगमाबाई जी, श्रीमती मदनबाई जी बोहणा (ब्यावर वाले), तिरुवन्नमले-चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा तथा महासती श्री सोहनकँवर जी म.सा. आदि के अहमदाबाद में पं.रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा के ब्यावर में दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री लेखराज जी पारख, जोधपुर, तत्त्वचिन्तिका महासती श्री ज्ञानकंवर जी म.सा. के लक्ष्मीनगर चातुर्मास में दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री छगनलाल जी, पीयूष कुमार जी जैन, मूंदी-खण्डवा, सुपुत्र चि. पीयूष कुमार जी का शुभ-विवाह सौ.कां. आरती के साथ सानन्द होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुभाषचन्द जी मृदुला जी बाँगाणी (नागौर वाले) कोलकात्ता, सुपुत्र चि. मोहित जी बाँगाणी के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री ओमप्रकाश जी जैन, नवसारी पूज्य आचार्य भगवन्तश्री के सपरिवार दर्शन लाभ एवं सुपुत्र टीकम एवं पुत्रवधु सौ. कविता को पूज्य आचार्यश्री के श्रीमुख से अहमदाबाद (पालडी) में गुरु आम्नाय दिलवाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री विजयराज जी पद्माबाई जी, आनन्द कुमार जी बाघमार (गजेन्द्रगढ़ वाले), बेंगलोर, पालडी-अहमदाबाद चातुर्मास में पर्वाधिराज पर्युषण पूज्य आचार्य भगवन्तश्री के पावन सान्निध्य में करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री एस.एस. जैन सभा, नादौन-हम्मीरपुर, पर्युषण पर्व पर सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मदनचन्द जी कांकरिया सुपुत्र श्री स्व. श्री हस्तीमल जी कांकरिया, जोधपुर, अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सुमित्रा देवी जी लुणिया धर्मपत्नी श्री सज्जनराज जी लुणिया (पुत्रवधू श्रीमती मोहिनी बाई-बागमल जी लुणिया), जोधपुर, अपने पन्द्रह उपवास की तपस्या के सुख-साता पूर्वक सम्पन्न होने पर भेंट।

1001/- श्रीमती सरोज जी दिलीप जी भण्डारी, रत्नागिरी (महा.), स्व. श्री सुगनचन्द जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्री प्रकाशमल जी, सुनील कुमार जी, हर्ष जी बोहरा, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं संत-सती मंडल के अहमदाबाद में दर्शन लाभ प्राप्त होने की खुशी में भेंट।

1000/- श्री प्रकाश जी जवाहरलाल जी मुथा, अहमदनगर चि. अनूप जी मुथा के एम.बी.ए. (फाइनल) में उत्तीर्ण होकर ऐक्सिस बैंक में नियुक्ति प्राप्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

750/- श्री जवाहरलाल जी बाघमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा तथा महासती श्री सोहनकँवर जी म.सा. आदि के अहमदाबाद में पं.रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा के ब्यावर में एवं रत्नसंघ के सभी चातुर्मास स्थलों पर जाकर दर्शन वन्दन का लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम

भेंट।

701/- श्री सम्पतराज जी, महेन्द्रकुमार जी, अजयकुमार जी मेहता (मुथा), पीपाड़ सिटी, श्रीमती भावना धर्मपत्नी श्री महेन्द्र जी मुथा की अठाई एवं अक्षय के तेले के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री नेमीचन्द नाहर, जयपुर, दोहिता रत्न प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सत्यप्रकाश जी (सतीश), विजयप्रकाश जी जैन, गंजखेरली-अलवर, पूज्य पिताश्री श्री कस्तूरचन्द जी जैन अष्टम का स्वर्गवास दिनांक 26.07.2009 को हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।

501/- श्री चन्द्रसागर जी जैन, नवसारी, सुपुत्री सौ. मोनिका जी का शुभ-विवाह चि. रविन्द्र (सोनू) सुपुत्र श्री सौभाग्यमल जी जैन (एडवोकेट) बजरिया-सवाईमाधोपुर के संग दिनांक 02.07.2009 को सम्पन्न होने व पूज्य आचार्य भगवन्तश्री के सपरिवार दर्शन लाभ की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री पदमचन्द जी, श्री सुभाषचन्द जी कटारिया, पीपाड़ सिटी, श्रीमती भावना धर्मपत्नी श्री महेन्द्र जी मुथा की अठाई एवं अक्षय के तेले के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री सुमतिचन्द जी, नमन जी, संयम जी मेहता, पीपाड़ सिटी, श्रीमती भावना धर्मपत्नी श्री महेन्द्र जी मुथा की अठाई एवं अक्षय के तेले के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री पन्नालाल जी, पदम कुमार जी बोथरा, जबलपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द जी म.सा. आदि ठाणा के अहमदाबाद में दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती शकुनदेवी जी, मदनलाल जी, राजेश कुमार जी, श्रीमती मधु जी, कु. श्रेया जी बाघमार एवं श्रीमती सुनीता महावीर जी रतनचन्द जी बोहरा, जबलपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द जी म.सा. आदि ठाणा के अहमदाबाद में सपरिवार दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री पी.एम. चोरड़िया, चेन्नई, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द जी म.सा. आदि ठाणा के अहमदाबाद में दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री केवलचन्द जी जैन, राजापार्क-जयपुर द्वारा सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रकाशचंद जी मेहता एवं परिवार, उम्बरगाँव रोड, सभी परिवार जनों के साथ पर्युषण पर्वाराधना पूज्य आचार्य भगवन्तश्री के पावन सान्निध्य में पालड़ी-अहमदाबाद में मनाये जाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती तारा जी गोगड़ धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी गोगड़, आगोलाई, जिला-जोधपुर (राज.), एकान्तर तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री मन्नालाल जी बोथरा, श्री कुशल जी बोथरा, जोधपुर (राज.), साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के जोधपुर चातुर्मास होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री वर्धमान जी एवं श्रीमती गुणमाला जी कोठारी, कोटा (राज.), अपनी सुपुत्रियों सुश्री निधि एवं विधि कोठारी के अठाई तप करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित साहित्य हेतु साभार

25000/- मैसर्स चौपड़ा विमल एण्ड कम्पनी, जयपुर, मंडल से प्रकाशित पुस्तक प्रेरक कथाएँ के द्वितीय संस्करण के मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

15000/- श्रीमान् घेवरचन्द जी लोढ़ा (पुष्कर वाले), जयपुर, मंडल द्वारा प्रकाशित पुस्तक श्री नन्दीसूत्र के मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार

11000/- डॉ. एस.एल. नागौरी, बूंदी, राजकीय महाविद्यालय से सेवानिवृत्ति एवं अपनी 114 वीं पुस्तक के लोकार्पण अवसर पर कबूतर चुगा हेतु।

2200/- श्री अमरचन्द जी, फौजमल जी गाँधी, चेन्नई, कबूतर चुगे एवं जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।

1000/- श्री हस्तीमल जी बसन्ती देवी जी सुराणा (नागौर वाले), बैंगलोर, कोलकात्ता प्रवास के दौरान महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमान् राजकुमार जी सिंघवी, जोधपुर (राज.), की ओर से भेंट।

501/- श्रीमान् हंसराज जी मुणोत, जयपुर, सुपौत्री सुश्री आशा जी सुपुत्री श्री आनन्दराज जी जैन के सी.ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

10000/- श्री रामलाल जी, झूमरलाल जी, शांतिलाल जी, रतनलाल जी, अमृतलाल जी, गौतमचन्द जी, धीरज कुमार जी कवाड़, चेन्नई (तमिलनाडु), सुश्री सिन्धु जी कवाड़ की भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2200/- श्री हस्तीमल जी डोसी, मेड़तासिटी, पर्युषण पर्व में पर्वाराधना हेतु 2008 में अलीगढ़ एवं वर्ष 2009 में आगोलाई पधारने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2000/- श्रीमती शान्ता जी लोढ़ा, डॉ. उमरावसिंह जी लोढ़ा, जोधपुर, स्वाध्याय गीतिका प्रकाशन में सहायतार्थ हेतु।

500/- श्रीमती सुनीता जी डोसी, ब्यावर की ओर से भेंट।

500/- श्रीमती पारसदेवी जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्द जी मेहता, पीपाड़ सिटी, अपने सुपुत्र श्री सुमतिचन्द जी मेहता के अठाई तप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

132000/- श्री प्रकाशचन्द जी, विमलचन्द जी डागा एवं परिवार, जयपुर (राज.) द्वारा भेंट।

120000/- श्री रतनलाल जी बाफना, जलगाँव (महा.) द्वारा श्रीमती नयनतारा बाफना के अठाई के उपलक्ष्य में भेंट।

24000/- श्री प्रदीप जी प्रमोदजी हीरावत, जयपुर (राज.) द्वारा भेंट।

24000/- श्री अशोक जी सेठ, जयपुर (राज.), द्वारा भेंट।

24000/- श्रीमती रतनदेवी जी कर्नावट, जयपुर (राज.) द्वारा भेंट।

12000/- श्रीमती विद्या जी सुराना, ब्यावर (राज.) द्वारा भेंट।

12000/- श्री सोहनलाल जी बुधमल जी बाघमार, मैसूर (कर्नाटक) द्वारा भेंट।

12000/- श्री कल्याणमल जी जैन, मुम्बई (महा.) द्वारा भेंट।

12000/- श्रीमती सविता जी दरड़ा, जयपुर (राज.) द्वारा भेंट।

12000/- श्री पारसनाथ जी अंबानी, जोधपुर (राज.) द्वारा भेंट।

12000/- श्री प्रवीण जी अंबानी, जोधपुर (राज.) द्वारा भेंट।

12000/- श्री ओमप्रकाश जी ओस्तवाल, गोटन (राज.) दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

12000/- श्री धनरूपचन्द जी, अमृतकुमार जी मेहता (पीपाड़ सिटी) बैंगलोर, दिनांक 28 मई, 2009 को पीपाड़ सिटी में हुई दीक्षा के उपलक्ष्य में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

आश्विन कृष्णा 14	गुरुवार,	17.09.2009	चतुर्दशी
आश्विन कृष्णा 30	शुक्रवार,	18.09.2009	पक्खी
आश्विन शुक्ला 8	शनिवार,	26.09.2009	अष्टमी, आयंबिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला 14	शनिवार,	3.10.2009	चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन शुक्ला 15	रविवार,	4.10.2009	आयंबिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 8	रविवार,	11.10.2009	अष्टमी

बाल-स्तम्भ [जुलाई-2009] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'बहन मिल गई' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 42 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 15 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	सुनयना गेलड़ा-नागौर	14.75
द्वितीय पुरस्कार-200/-	रूपल जैन-भीलवाड़ा	14.5
तृतीय पुरस्कार-150/-	संदीप छाजेड़-समदड़ी	14.25
सान्त्वना पुरस्कार-100/-	श्वेता आचलिया-धुलिया	14
	सौरभ भण्डारी-पीपाड़शहर	14
	रूपमाला छाजेड़-समदड़ी	14
	दीप्ति जैन-लाडपुरा, कोटा	14
	अक्षय जैन-पीपाड़सिटी	14

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का
जीवन बनता एक विद्यार्थी का

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in / silimited@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

IS:1786 ISI

SURANA™ — yes, the best — TMT RE-BARS

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी॥

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान का एक दीया जलाइये
सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12,000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) से निम्नांकित पते पर भेंजे, पुण्यधन कमाइऐं।

Ashok Kavad

PRITHVI EXCHANGE

33, Montieth Road, Egmore, CHENNAI-600008

Tele Fax 044-43434249, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66★ अंक : 9★ मूल्य : 10 रु.
10 सितम्बर, 2009★ आश्विन 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

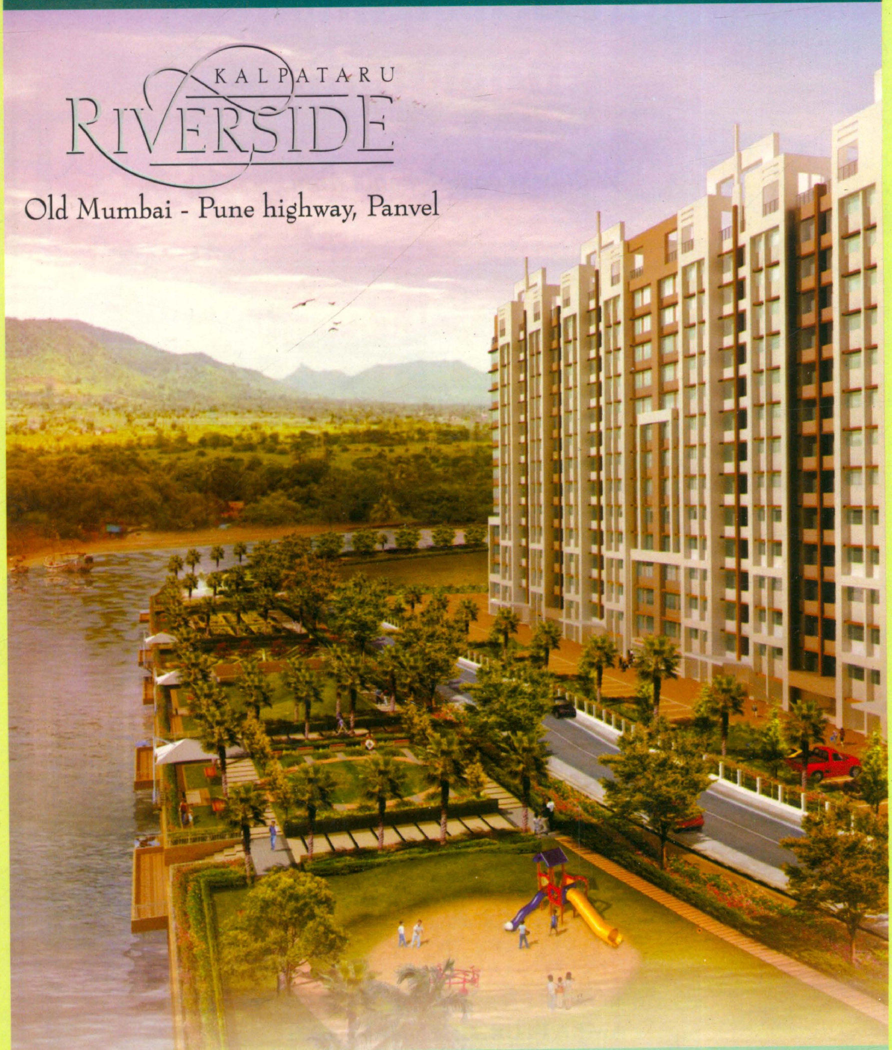

KALPA-TARU
101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East),
Mumbai - 400 055. ● Tel.: 3064 3065, 98339 45470 ● Fax: 3064 3131
Website: www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।